कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 322 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 17 नवम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

हैदरपुरा एनकाउंटर पर मुफ्ती और अब्दुल्ला सहित विपक्ष ने उठाए सवाल, न्यायिक जांच की मांग तेज

श्रीनगर। जम्मू और कश्मीर के विपक्षी नेताओं ने हैदरपुरा एनकाउंटर पर अपना आक्रोश व्यक्त किया है। इस मुठभेड़ में दो आतंकवादी सहित उसके दो सहयोगियों को मार गिराया गया था। नेताओं का कहना है कि वे आतंकवादियों के सहयोगी नहीं, बल्कि आम नागरिक थे। इन्होंने इस कथित हत्या की न्यायिक जांच की मांग की है। आपको बता दें कि सोमवार की रात सुरक्षा बलों और दो संदिग्ध आतंकवादियों के बीच आमने-सामने के मुठभेड़ में शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के मालिक अल्ताफ अहमद और उसी मकान में किराए पर रह रहे मुदासिर गुल भी मारे गए। हालांकि, परिजनों का कहना है कि वे निर्दोष हैं। अहमद के परिवार ने आरोप लगाया कि उन्हें ₹मानव ढाल₹ के रूप में इस्तेमाल किया गया था। हालांकि, पुलिस ने दोनों मारे गए नागरिकों को आतंकवादी का सहयोगी करार दिया है।

एमपी में टीका नहीं तो राशन नहीं

दिल्ली में शिक्षा निदेशालय बोला- एग्जाम के बीच न करें अनाज वितरण

नई दिल्ली, एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) शासित मध्य प्रदेश में राशन लेने के लिए अब कोरोना वायरस से जुड़ा टीका लगवाना अनिवार्य होगा। सूबे के खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता संरक्षण विभाग की ओर से इस बाबत सभी जिला आपूर्ति नियंत्रकों और अफसरों से एक पत्र के जरिए कहा गया है कि लाभार्थियों को बताया जाए कि राशन पाने के लिए टीके की दोनों खुराक लगवाना जरूरी है। नहीं तो वे उचित कार्रवाई करें। बोर्ड परीक्षा के दौरान न करें राशन वितरण उधर, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की कक्षा 12 की टर्म-1 परीक्षाओं की मंगलवार को शुरूआत होने के साथ ही दिल्ली के शिक्षा निदेशालय ने स्कूलों को एक परिपत्र जारी

किया। कहा गया कि परीक्षा के दौरान राशन वितरण तथा टीकाकरण जैसी गतिविधियां आयोजित नहीं की जाएं।

माइनर विषयों के लिए सीबीएसई की कक्षा 12 और 10 की परीक्षाएं क्रमशः 16 और 17 नवंबर से शुरू हो रही हैं। मेजर विषयों के लिए कक्षा 10 की परीक्षा 30 नवंबर तथा कक्षा 12 की परीक्षा एक दिसंबर से शुरू होगी। कक्षा नौ और 11 की मध्यावधि परीक्षाएं भी एक दिसंबर से होने वाली हैं। उक्त परीक्षाएं ऑफलाइन माध्यम से आयोजित की जाएंगी। बंगाल में दुआरे राशन की शुरूआत उधर, पश्चिम बंगाल में मंगलवार को सीएम और टीएमसी चीफ ममता बनर्जी ने दुआरे राशन (राशन की डोर स्टेप डिलीवरी) का ऐलान किया। दीदी ने इसका वादा विधानसभा चुनाव से पहले किया था, जबकि इसका आगाज पूरे सूबे में 16 नवंबर से ही हुआ।

पश्चिम बंगाल में दुआरे राशन योजना लॉन्च, सीएम ममता बनर्जी बोलीं- 10 करोड़ लोगों को होगा फायदा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार ने मंगलवार को राज्य में दुआरे राशन योजना को लॉन्च किया। प्रशासन की तरफ से कहा गया है कि घर-घर राशन पहुंचाने की इस योजना से राज्य के करीब 10 करोड़ लोगों को लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस योजना को लॉन्च करते हुए कहा कि यह दुआरे राशन योजना राज्य के 10 करोड़ लोगों की मदद करेगी। मैं सभी राशन डिलरों से यह आग्रह करना चाहती हूं कि वो इसे सफल बनाएं। इस योजना को लॉन्च करते हुए ममता बनर्जी ने राशन डिलिवर करने वाली गाड़ियों को हरी झंडी भी दी। इससे पहले दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार ने भी इसी साल 25 मार्च से घर-घर राशन पहुंचाने की योजना को मंजूरी दी थी। हालांकि, केंद्रीय खाद्य और उपभोक्ता मंत्रालय ने इसपर सवाल उठाए थे। बता दें कि दुआरे राशन योजना मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की कई महत्वकांक्षी योजनाओं में से एक है। इस साल पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले उन्होंने इस योजना को लॉन्च करने का ऐलान भी किया था।

राकेश झुनझुनवाला की कंपनी आकाश एयर की ऊंची उड़ान, दिया 72 बोइंग जेट का ऑर्डर

नई दिल्ली। अरबपति निवेशक राकेश झुनझुनवाला के सपोर्ट वाली एयरलाइन आकाश एयर ने 72 बोइंग 737 टं७ जेट का ऑर्डर दिया है। लो-कॉस्ट एयरलाइन आकाश एयर और प्लेन बनाने वाली अमेरिकी कंपनी बोइंग के संयुक्त बयान में जिक्र किया गया है, आकाश एयर के ऑर्डर में 737 टं७ फैमिली के 2 वेरियंट शामिल हैं।

इनमें 737-8 और ज्यादा कैपेसिटी वाला 737-8-200 हैं। राकेश झुनझुनवाला की आकाश एयर के इस बड़े ऑर्डर से प्लेन बनाने वाली अमेरिकी कंपनी को दुनिया के सबसे प्रॉमिसिंग मार्केट्स में एक में फिर अपनी पैठ बनाने में मदद मिल सकती है। आकाश एयर के सीईओ विनय दुबे ने कहा है, हम अपने पहले एयरप्लेन ऑर्डर के लिए बोइंग के साथ साझेदारी करके खुश हैं। हम उन्हें आकाश एयर के बिजनेस प्लान

और लीडरशिप टीम पर भरोसा और विश्वास दिखाने के लिए धन्यवाद देते हैं।

दुबे ने कहा, भारत, दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते एविएशन मार्केट्स में से एक है और यहां अपार संभावनाएं हैं। हम पहले ही एयर ट्रेवल में मजूबत रिकवरी देख रहे हैं। आकाश एयर पर मालिकाना हक रखने वाली रठश एविएशन ने पिछले महीने कहा था कि देश की नई अल्ट्रा-लो-कॉस्ट करियर लॉन्च करने के लिए सिविल एविएशन मिनिस्ट्री से जरूरी शुरूआती क्लीयरेंस मिलने के बाद वह अगले साल फ्लाइंग शुरू कर सकती है।

वायू प्रदूषण के लिए किसानों को जिम्मेदार ठहराने पर भड़के राकेश टिकैत, कहा- 10 फीसदी पॉल्यूशन पराली से होता है वो भी डेढ से दो महीने के लिए

नई दिल्ली। दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण के लिए लगातार किसानों को जिम्मेदार ठहराने पर जाने इडव के राकेश टिकैत ने नाराजगी जताई है। उन्होंने ट्ववीट कर कहा कि पराली जलाने से ज्यादा, किसानों को वायु प्रदूषण के लिए विलेन बनाए जाने पर राजनीतिक दलों को माफी मांगनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट भी कह चुका कि किसानों को जिम्मेदार ठहराना सही नहीं क्योंकि 10 प्रतिशत प्रदूषण ही पराली से होता है, वह भी डेढ़-दो माह के लिए ऐसा होता है। राकेश टिकैत ने अपने ट्वीट के साथ ढटड इंडिया, योगी आदित्यनाथ और दिल्ली गवर्नमेंट हैशटैग का इस्तेमाल किया है। उनके ट्वीट की प्रतिक्रिया में लोग उनसे अरविंद केजरीवाल का नाम नहीं लिखे जाने का कारण पूछ रहे हैं। बताते चलें कि उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को एक

संयुक्त बैठक करने का निर्देश दिया था। मंगलवार को पंजाब, राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश राज्यों ने इस बैठक में हिस्सा लिया।रेड लाइट ऑन, गड्डी ऑफ अभियान 15 दिन और चलेगा : दिल्ली सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी में प्रदूषण के बढ़ते स्तर को देखते हुए रेड लाइट ऑन, गड्डी ऑफ अभियान को और 15 दिन के लिए बढ़ाने का फैसला किया है। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने मंगलवार को इसकी घोषणा की। रेड लाइट ऑन, गाड़ी ऑफह्व यानी लाल बत्ती पर गाड़ी का इंजन बंद करने की इस पहल को 18 नवंबर को समाप्त होना था। राय ने कहा, सरकार ने अभियान को 19 नवंबर से तीन दिसंबर तक, 15 दिन और बढ़ाने का फैसला किया है। दिल्ली सरकार ने प्रदूषण से निपटने के लिए वर्क फ्रॉम होम का सुझाव दिया। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग की बैठक में उनकी सरकार ने दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वर्क फ्रॉम होम नीति लागू करने और कुछ उद्योगों को बंद करने का सुझाव दिया।

नाराज सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को दिया तीन हफ्ते का वक्त

भूख से न मरे कोई यह सुनश्चिति करना सरकार का काम

नई दिल्ली। सामुदायिक रसोई बनाने के मसले पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट सिरे से उखड़ गया। सीजेआई एनवी रमन्ना की बेंच ने केंद्र सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि आप भूख का ख्याल रखना चाहते हैं तो कोई संविधान, कोई कानून ना नहीं कहेगा। हम पहले से ही देरी कर रहे हैं। बेंच ने सरकार को दो सप्ताह का समय दिया, लेकिन अटॉर्नी जनरल ने योजना को अंतिम रूप देने के लिए 3 सप्ताह का समय मांगा। उनकी दलील पर बेंच ने सहमति देते हुए कहा कि यह अंतिम समय दिया जा रहा है। लेकिन इस बार समग्र जवाब के साथ ही कोर्ट में आएं। ध्यान रहे कि बीती 27 अक्टूबर को हुई सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने एक आदेश पारित किया था। इसमें केंद्र को राज्य सरकारों के साथ बातचीत कर एक

योजना के साथ आने को कहा गया था। बेंच ने भुखमरी से होने वाली मौतों को रोकने के लिए सामुदायिक रसोई नीति तैयार करने की मांग वाली रिट पर सुनवाई के दौरान ये आदेश दिया था। आज की सुनवाई एएसजे ने बेंच को बताया कि आदेश के तहत केंद्र ने राज्यों के साथ वर्चुअल बैठक की थी। लेकिन हलफनामे को देखकर बेंच गुस्से से भड़क गई।

कोर्ट ने कहा कि हलफनामे से नहीं लग रहा कि आप गंभीर भी हैं। आप जरूरी काम के बजाए पुलिस जैसी जानकारी एकत्र करने में लगे हैं। आपको संबंधित पक्षों के साथ बैठक करके कोर्ट को बताना था कि क्या कदम उठाने जा रहे हैं, लेकिन 17 पेज के हलफनामे में केवल कागजी खानापूर्ति के सिवाय कुछ नहीं किया गया है। कोर्ट ने कहा कि जो बात हमने कही थी उसका कहीं कोई जिक्र इसमें नहीं किया गया है। कोर्ट ने कहा कि 17 पेज का हलफनामा और योजना को लेकर केवल

बेंच ने भुखमरी से होने वाली मौतों को रोकने के लिए सामुदायिक रसोई नीति तैयार करने की मांग वाली रिट पर सुनवाई के दौरान ये आदेश दिया था। आज की सुनवाई एएसजे ने बेंच को बताया कि आदेश के तहत केंद्र ने राज्यों के साथ वर्चुअल बैठक की थी। लेकिन हलफनामे को देखकर बेंच गुस्से से भड़क गई।

लीपापोती। सीजेआई ने इस बात पर भी नाखुशी जताई कि अवर सचिव स्तर के अधिकारी ने हलफनामा दायर किया गया है। सीजेआई ने हत्थे से उखड़ते हुए कहा कि यह आखिरी चेतावनी है जो वह केंद्र सरकार को देने जा रहे हैं। हम कुछ कहते हैं और आप अपने हिसाब से कहानी लिखते हैं। यह नहीं चल सकता। सीजेआई ने अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल से पूछा कि जिम्मेदार अधिकारी ने हलफनामा क्यों नहीं तैयार किया।सीजेआई ने कहा कि एक व्यापक योजना बनाएं। उन क्षेत्रों की पहचान करें जहां इसकी तत्काल आवश्यकता है। लेकिन सरकार के जवाब से लग रहा है कि वो अभी भी सुझाव जुटा रहे हैं। कोर्ट ने केंद्र सरकार की बैठक में भाग लेने के लिए राज्यों को निर्देश देते हुए कहा कि राज्यों को कोई आपत्ति है तो हम अगली सुनवाई में अदालत में विचार करेंगे।

अखिलेश का योगी पर तंज

अच्छा सिला दिया, जनता से पहले तुमने ही हमें पैदल कर दिया...

लखनऊ। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे को लेकर सपा-भाजपा में बयानबाजी थमने का नाम नहीं ले रही है। उद्घाटन के बाद भी वार-पलटवार जारी है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने उद्घाटन का एक वीडियो ट्वीट कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर तंज कसा है।

छह सेकेंड के वीडियो को ट्वीट करते हुए अखिलेश ने लिखा तुमने हमारी आवभगत का अच्छा सिला दिया..जनता से पहले तुमने ही हमें पैदलह्व कर दिया। बड़े बेआबरू होकर इन सड़कों से हम गुजरेह्व। अखिलेश ने जो वीडियो शेयर किया है वह केवल छह सेकेंड का है। अखिलेश ने पीएम मोदी के कार में बैठकर जाने और सीएम योगी के पैदल चलने को लेकर तंज कसा है। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी गाड़ी में बैठे हुए हैं और उनके आस-पास सुरक्षा गार्डों का घेरा है। वहीं उनके ठीक पीछे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपनी कार की

ओर पैदल ही बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं।

पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे को लेकर कई दिनों से सपा और भाजपा में तनातनी चल रही थी। उद्घाटन के दिन ही अखिलेश ने भी एक्सप्रेस-वे पर रथयात्रा की तैयारी कर ली थी। लेकिन प्रशासन ने इजाजत नहीं दी। इसके बाद अखिलेश ने एक दिन के लिए रथयात्रा टाल दी और सीएम योगी पर जमकर हमला किया। मंगलवार को पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के उद्घाटन से पहले भी अखिलेश ने ट्वीट कर तंज कसा। अखिलेश ने लिखा, फीता आया लखनऊ से और नई दिल्ली से कैंची आई। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे के उद्घाटन के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने अखिलेश यादव पर इशारों में निशाना साधा था। उन्होंने कहा कि 2014 में जब केंद्र में उनकी सरकार थी तो यूपी की पिछली सरकार उनका साथ नहीं देती थी। यूपी में उनके साथ मंच साझा करने से डरते थे क्योंकि उन्हें अपने वोट बैंक प्रभावित होने का खतरा होता था।

फाइजर ने दूसरी कंपनियों को दी अपनी कोविड-19 दवा बनाने की अनुमति

लंदन। अमेरिकी फार्मा कंपनी फाइजर ने अपनी कोविड-19 दवा बनाने के लिए अन्य कंपनियों को मंजूरी देने के लिए तैयार हो गया है। इसके लिए फाइजर ने संयुक्त राष्ट्र के एक ग्रुप से करार भी किया है। यह करार इतना अहम माना जा रहा है कि इससे फाइजर की कोविड-19 की दवा दुनिया की आधी आबादी के लिए उपलब्ध हो सकती है। मंगलवार को जारी एक बयान में फाइजर ने कहा कि वह वायरस रोधी दवा के लिए जिनेवा स्थित मेडिसिन्स पेटेंट पूल को लाइसेंस देगी जो जेनरिक औषधि निमार्ता कंपनियों को दवा का उत्पादन करने देगा। इससे विश्व के 95 देशों में इस दवा का इस्तेमाल हो सकेगा जहां दुनिया की लगभग 53 प्रतिशत आबादी रहती है।

इस करार में कुछ बड़े देशों को शामिल नहीं किया गया है जहां कोरोना वायरस महामारी का बेहद बुरा असर पड़ा है। उदाहरण के लिए ब्राजील की किसी कंपनी को अन्य देशों में निर्यात के लिए दवा के उत्पादन का लाइसेंस मिल सकता है लेकिन ब्राजील में इस्तेमाल के लिए उस दवा को जेनरिक रूप से तैयार नहीं किया जा सकता।

आतंकवादी के सहयोगियों पर बरसा महबूबा मुफ्ती का प्यार, सुरक्षा बलों के एनकाउंटर पर उठाए सवाल

श्रीनगर। जम्मू और कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने मंगलवार को श्रीनगर में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ के दौरान एक घर के मालिक और एक डॉक्टर के मारे जाने पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा, यह देखकर दुख होता है कि आपने उग्रवादियों से लड़ने के दौरान नागरिकों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। श्रीनगर के हैदरपोरा इलाके में सोमवार देर शाम हुई मुठभेड़ में एक पाकिस्तानी आतंकवादी और उसके स्थानीय सहयोगी समेत चार लोग मारे गए। मृतकों में मकान मालिक और एक डॉक्टर भी शामिल हैं, जिन्हें पुलिस ने आतंकी का सहयोगी बताया है। हालांकि उनके परिवार वालों ने पुलिस के आरोप से इनकार किया है।

पार्टी कार्यालय में युवाओं के एक समूह को संबोधित करते हुए महबूबा ने कहा, ₹मुझे हैदरपोरा में एक मुठभेड़ की खबर मिली। आतंकवादी मारे गए, समझा जाता है, लेकिन परिवार का आरोप है कि घर के मालिक को मानव ढाल

के रूप में इस्तेमाल किया गया था। वह एक एक युवा डॉक्टर के साथ मारा गया। महबूबा ने कहा, ₹मुझे नहीं पता कि उन्हें (मकान मालिक और डॉक्टर) किस श्रेणी में रखा जाएगा, लेकिन यह देखकर दुख होता है कि आपने आतंकवादियों से लड़ते हुए नागरिकों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। यह गलत है। महबूबा ने कहा, पहले, सरकारें उनकी उपलब्धियों पर वोट मांगती थीं जैसे कि कितने पुल बनाए गए हैं, कितने रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं और कितने युवाओं को रोजगार दिया गया है। उनके (बीजेपी) के पास वोट हासिल करने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे से लड़ाने के अलावा लोगों को दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है। जम्मू के युवाओं से सतर्क रहने को कहते हुए पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां भी समाज में जहर घोलने की कोशिश की जा रही है। महबूबा मुफ्ती मे कहा, युवा बेरोजगारी की सबसे बड़ी समस्या का सामना कर रहे हैं। उनके (सरकार) के पास इसका कोई जवाब नहीं है। पिछले करीब एक साल से सड़कों पर उतरे किसानों की समस्या का उनके पास कोई जवाब नहीं है। उन्होंने हाल के दिनों में त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में सांप्रदायिक तनाव का हवाला देते हुए कहा, ₹उनके पास केवल एक मशीन और केवल एक कारक है।

खबर संक्षेप

बीआरसी कौड़िहार की अज्ञात चोरों ने काट ली केबल

नवाबगंज। नवाबगंज में स्थित कौड़िहार बीआरसी कार्यालय में इंटरनेट सेवा की आपूर्ति करने के लिए केबल लगाई गई थी। बीती रात अज्ञात चोरों ने लगभग डेढ़ सौ मीटर केबल काट ले गए। जिससे कार्यालय का कार्य सुचारु रुप से संचालित करने में कर्मियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कौड़िहार खंड शिक्षा अधिकारी ओमप्रकाश मिश्रा नवाबगंज थाने में आज तहरीर देंगे।

उरूवा में सपा की बैठक का हुआ आयोजन

सिरसा। प्रयागराज विधानसभा मेजा में दिनांक 17 नवम्बर 2021 बहुत ही आवश्यक संगठन की मिटिंग ब्लाक उरूवा प्रमुख श्रीमती आरती गौतम प्रतिनिधि प्रदीप कुमार (पप्पू गौतम) के आवास पर औता में आयोजित किया गया हैं।जिसमे मुख्य अतिथि माननीय योगेश चंद्र यादव जिलाअध्यक्ष समाजवादी पार्टी प्रयागराज उपस्थित रहेंगे। जिसमे विधानसभा मेजा के वरिष्ठ नेतागण एवं पदाधिकारी गण तथा सेक्टर प्रभारी एवं समाजवादी विचारधारा के सम्मानित साथीगण बैठक में पहुँचने का कष्ट करेंगे।यह जानकारी नगरपंचायत सिरसा के चेरमैन श्याम कृष्ण सिंह "पप्पू यादव" मेजा विधानसभा अध्यक्ष समाजवादी पार्टी के द्वारा प्राप्त हुआ है।

प्रेमी ने लगायी फांसी, प्रेमिका ने काट ली गले की नस, गंभीर

अखंड भारत संदेश

प्रेमी प्रेमिका में हुआ था एक दिन पहले झगड़ा

गले की नस कटते ही बहने लगी खूनो की धारा

छात्रा ने गले की नस काट ली इसकी सूचना पड़ोस में रहने वालों ने दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आनन-फानन में सबसे पहले छात्रा को अस्पताल में भर्ती कराया। इस दौरान छात्रा को अस्पताल ले जाने के दौरान इतनी तेजी के साथ खून बह रहा था कि कमरा व सीढ़ी पूरी तरह से खून ही खून दिख रहा था।

प्रयागराज। कर्नलगंज थाना अंतर्गत गायत्री नगर में किराये के मकान में चाचा के साथ रहकर पढाई कर रही एक छात्रा ने प्रेमी की आत्महत्या की खबर सुनी तो उसने भी सुसाइड करने के लिए अपने गले की नस काट ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लड़की को एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया है। लड़की हालत गंभीर बनी हुई है।

पुलिस ने परिवार वालों को सूचना दे है। जानकारी के अनुसार मछली शहर जौनपुर की रहने वाली एक छात्रा गायत्री नगर में अपने चाचा के साथ किराये का कमरा लेकर रहती थी। वह 12वीं की छात्रा है। वहीं पास के ही एक दूसरे मकान में अपने चाचा के साथ प्रेमी आदर्श जायसवार भी रहता था। वह यहां रहकर पास के ही डिग्री कालेज में बीए का छात्र था। आदर्श रीठी, सिकरारा जौनपुर का रहने वाला था। प्रेमी-प्रेमिका के चाचा के बीच दोस्ती थी। इस वजह से छात्रा व प्रेमी के बीच धीरे-धीरे प्रेम बढ़ता गया ' किसी बात को लेकर प्रेमी-प्रेमिका के बीच सोमवार को काफी बहस हो गई जिससे नाराज प्रेमी ने जौनपुर घर जाकर फांसी लगा ली जिसकी सूचना जब प्रेमिका को हुई तो वह भी अपने गले का नस काट ली ' जब घटना की जानकारी पड़ोसियों को हुई तो सूचना पुलिस को दी गई, सूचना पर पहुंची पुलिस ने एसआरएन अस्पताल में छात्रा को भर्ती कराया है। तथा बताया जा रहा है कि छात्रा की हालत काफी नाजुक बनी हुई है। वही कर्नलगंज इंस्पेक्टर का कहना है कि एक छात्रा ने अपने गले की नस काट ली है। गंभीर हालत में एसआरएन ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया है। पूरे घटनाक्रम की जांच की जा रही है। छात्रा के होश में आने के बाद पता चल सकेगा उसके साथ क्या हुआ है।

ऊदा देवी की शहादत दिवस : सामाजिक संगठनों ने उन्हें किया याद

उदा देवी नवाब वाजिद अली शाह लखनऊ की महिला सेना दस्ते की थी सिपाही,

प्रयागराज। मंगलवार को अवध के छठे नवाब वाजिद अली शाह ने बड़ी मात्रा में अपनी सेना में सैनिकों की भर्ती की थी, जिसमें लखनऊ के सभी वर्गों के गरीब लोगों को नौकरी पाने का अच्छा अवसर मिला था। ऊदा देवी नवाब वाजिद अली शाह की महिला दस्ते की सदस्य थीं और 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की सेनानी थीं। इन्होने भारतीय सिपाहियों की ओर से युद्ध में भाग लिया था। उल्लेखनीय है कि लखनऊ की घेराबंदी के समय लगभग 2000 भारतीय सिपाहियों की शरणस्थल सिकन्दर बाग पर ब्रिटिश फौजों द्वारा चढ़ाई की गयी थी और 16 नवंबर 1857 को इन 2000 भारतीय सिपाहियों का ब्रिटिश फौजों द्वारा संहार कर दिया गया था। उक्त बातें वीरांगना ऊदा देवी के 164 वीं पुण्यतिथि पर डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन (दावा), भारतीय बौद्ध महासभा, डा. अम्बेडकर मिशन आदि सामाजिक संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में मेहदौरी कालोनी में आयोजित बैठक में समाजसेवी लल्ला कुमार अहेरवार ने कही। उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता शुकदेव ने बताया कि ऊदा देवी ने पुरुषों के वस्त्र धारण कर अपने साथ एक बंदूक और कुछ गोला बारूद लेकर एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गयी थीं। उन्होने हमलावर ब्रिटिश सैनिकों को सिकंदर बाग में तब तक प्रवेश नहीं करने दिया था जब तक कि उनका गोला बारूद खत्म नहीं हो गया। लड़ते लड़ते वीरता का परिचय देते हुए उदा देवी ने 32 ब्रिटिश सैनिकों को मार गिराया। जब वो पेड़ से उतर रही थीं तब ब्रिटिश लोगों ने उन्हें गोली मार दी थी। उसके बाद जब ब्रिटिश लोगों ने शिकंदर बाग में प्रवेश किया तो उन्होने ऊदा देवी का पूरा शरीर गोलियों से छलनी कर दिया और ऊदा देवी वीरगति को प्राप्त हुईं। उच्च न्यायालय के अधिवक्ता कुमार सिद्धार्थ ने बताया कि ऊदादेवी के पति मक्का पासी भी काफी साहसी व पराक्रमी थे। 10 जून 1857 को लखनऊ के चिनहट कस्बे के निकट इस्माईलगंज में हेनरी लॉरेंस के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कम्पनी की फौज के साथ मौलवी अहमद उल्लाह शाह की अगुवाई में संगठित, विद्रोही सेना की ऐतिहासिक लड़ाई में मक्का पासी वीरगति को प्राप्त हुए थे। पुण्य तिथि पर मौजीलाल गौतम, जीडी गौतम, महेश प्रसाद, आरआर गौतम, गुड्डू कोटेदार, हिमांशु जैसवार, अरविन्द गौतम, अशोक कुमार, नवीन कुमार, दीवेन्द्र कुमार, आदित्य कुमार आदि उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

विकास खंड कार्यालय सहसों अपने स्थाई भवन में स्थानांतरित

नए ब्लॉक भवन में ब्लाक प्रमुख सहसों गीता सिंह ने की पूजा

सहसों। विकास खंड कार्यालय सहसों अस्थाई भवन भोपतपुर में अभी तक संचालित हो रहा था। जिसे सोमवार से थानापुर में अपने स्थाई भवन में स्थानांतरित कर दिया गया है। खंड विकास अधिकारी, सहायक खंड विकास अधिकारी समेत सभी कर्मचारी थानापुर स्थित अपनी स्थाई भवन में बैठकर विकासखंड से संबंधित कार्य को पूर्ण करेंगे। खंड विकास अधिकारी सहसों सुधाकर दुबे ने बताया कि विकास खंड सहसों का कार्य भोपतपुर स्थित अस्थाई भवन में अभी तक चल रहा था। अब सहसों विकास खंड का कार्यालय पूरी तरह से थानापुर में अपने नए भवन से चलाया जाएगा। जिससे क्षेत्र की जनता को अपने कार्य को लेकर विकास खंड कार्यालय आने में किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। थानापुर में ब्लॉक कार्यालय का संचालन शुरू करने के मौके पर सहसों ब्लॉक प्रमुख गीता सिंह ने विधि विधान से पूजन करके किया। इस मौके पर विकास खंड अधिकारी सुधाकर दुबे, सहायक खंड विकास अधिकारी निखिल मोहन, प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , ग्राम विकास अधिकारी हेमंत सिंह, धर्मेंद्र कुमार व सभी कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

मेजा पुलिस ने युवक को देशी बम के साथ किया गिरफ्तार

सिरसा। प्रयागराज मेजा थाना पुलिस ने देशी बम के साथ एक युवक को धर दबोचा पकड़े गए युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया। गया बता दें कि मंगलवार को मेजा थाना मेजारोड पुलिस चौकी के दरोगा सूर्य प्रकाश ने हमराही पुलिस कर्मी के साथ चौकी क्षेत्र के एक ईट भट्ठे से छह देसी नजायज बम के साथ एक युवक शुभम कुमार यादव पुत्र संतोष कुमार यादव निवासी खानपुर बरी को गिरफ्तार किया गया। चौकी प्रभारी मेजारोड पंकज कुमार त्रिपाठी ने बताया कि पकड़े गए युवक अपराधी किस्म का था उसके खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेज दिया गया।

भाजपा शिक्षण संस्थान द्वारा चलाया गया सदस्यता अभियान

करछना। मगलवार को तहसील क्षेत्र के जारी में भाजपा शिक्षण संस्थान द्वारा सदस्यता अभियान चलाया गया कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि मलयज शर्मा प्रदेश सह संयोजक, विशिष्ट अतिथि महेश मधुकर, क्षेत्रीय सह संयोजक काशी क्षेत्र और कार्यक्रम के जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती और भारतीय जनता पार्टी जिला संयोजक आशीष सिंह रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि प्रधानमंत्री के सदयस्यता अभियान में अधिक से अधिक लोगो को जोड़ने का काम करे और जिलाध्यक्ष ने शिक्षण संस्थानों और शिक्षको के लिए मानदेय और पेंशन दिलाने की भी शासन स्तर पर बात रखने की बात की गई। कार्यक्रम का संचालन विनोद मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में मेजा विधानसभा संयोजक रविंद नाथ सिंह,,करछना विधानसभा संयोजक पीयूष मिश्रा,कोरांव विधानसभा संयोजक नागेंद पांडेय, बारा विधानसभा संयोजक रामा नंद त्रिपाठी आदि सैकड़ो लोगो को सदयस्ता भी दिलाई गई।

भाजपा सरकार पूंजीपतियों की सरकार आम नागरिक परेशान

प्रतापपुर। कांग्रेस की प्रतिज्ञा यात्रा दूसरे दिन नीबी, चनेथू, चौका, चकिया, जलालपुर, पतईयां नेदुला, बरीयारामपुर, रस्तीपुर, लोड़ीडीह, खानपुर डांडी होते हुए देवीपुर उग्रसेनपुर में मीटिंग नुक्कड़ सभा शाम को समाप्त हुई।प्रदेश सचिव कांग्रेस संजय तिवारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए प्रियंका गांधी द्वारा घोषित नारा भाजपा भगाओ महंगाई हटाओ का नारा सार्थक करें। संजय तिवारी ने कहा कि जनसंपर्क के दौरान जनता में गुस्सा दिखा भारी आक्रोश था बुजुर्ग हो जवान हो विशेषकर महिलाएं जो घर संभाल रही हैं उनका आक्रोश देखते ही बन रहा था उनका सिर्फ एक ही नारा था कि महंगाई बढ़ गई है अब हम लोग कांग्रेस को ही सपोर्ट करेंगे। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिलाध्यक्ष सुरेश यादव, प्रभारी सुनील यादव, ब्लॉक अध्यक्ष कमलेश पांडेय, मुन्ना पांडेय, मधुसूदन पांडेय, एहतेशाम, आदर्श प्रजापति, राजेश प्रजापति, सोनू दुबे, सुधांशु तिवारी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

प्रत्याशी बनाए जाने पर क्षेत्र वासियों में हर्ष

उतरांव। उतराव थाना क्षेत्र के सैदहा महरुपुर गांव में वरिष्ठ समाजसेवी अरविन्द विश्वकर्मा की अगुवाई में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सम्यक पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ शिव प्रसाद विश्वकर्मा रहे। कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भगवान विश्वकर्मा एवं भारत लोनीन बाबू जगदेव प्रसाद के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्वलन कर किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारत की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस किसी वर्ग का विकास नहीं कर सकती। भाजपा कांग्रेस ने जनता को ठगने का काम किया है। समाजवादी पार्टी परिवारवाद की पार्टी है। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व आईएएस पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष तपेंद्र प्रसाद कुशवाहा रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि प्रदेश का विकास सिर्फ सम्यक पार्टी ही कर सकती है। नवनिर्वाचित प्रत्याशी अरविंद विश्वकर्मा ने कहा कि पार्टी द्वारा दी गई जिम्मेदारी ईमानदारी मेहनत से निर्वाहन करूंगा तथा पिछड़ा हुआ विधानसभा को विधायक बनने के बाद विकास के पथ पर ले जाने का काम करूंगा। संचालन रमाकांत कुशवाहा ने बखूबी निभाया। आयोजक नवनिर्वाचित प्रत्याशी अरविंद विश्वकर्मा ने आए हुए सभी अतिथियों को अंग वस्त्र व फूल मालाओं से अभिनंदन करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त अवसर पर मंगल आनंद जी महाराज डॉक्टर अतुल कुशवाहा रमाकांत कुशवाहा, तपेंद्र प्रसाद शाक्य शकील महरुपुर मुस्तकीम अहमद आदि सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

देव दीपावली परं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतापपुर। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हनुमान टेकरी मन्दिर जीर्णोद्धार सेवा समिति एवं व्यापार मण्डल मनुपुर द्वारा श्री हनुमान टेकरी मन्दिर मनुपुर मियां का पूरा बाजार में देवोत्थान एकादशी के शुभ अवसर पर आज देव दीपावली मनाई गई जिसमें सैकड़ों दिये जलाए गये।एवं सरस्वती शिशु मन्दिर मनुपुर के विद्यार्थियों द्वारा रंगोली प्रतियोगिता आयोजित किया गया।इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष अश्वनी दुबे, अमरनाथ यादव, पंडित विजय मिश्रा, राजू सिंह, रिंकू मिश्रा, सभाजीत मिश्रा, सोमेश केशरी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

भागवत कथा के पाचवें दिन कृष्ण बाल लीला का किया वर्णन

अखंड भारत संदेश

मंच पर उपस्थित कथा वाचक व श्रोता गण

करछना। करछना क्षेत्र के धरवारा गांव में जन कल्याण हेतु चल रही सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भागवत ज्ञान कथा के पांचवे दिन मंगलवार को व्यास पीठ पर विराजमान आचार्य गोपालकृष्ण जी महाराज ने श्रीकृष्ण बाल लीला का बखान करते हुए भक्तगणों को भाव विभोर किया। मैया मोरी मै नहि माखन खायो,ठुमुक चलत कृष्णचंद्र बाजति पैजनिया जैसे भजनों द्वारा बाल लीला की अनूठी झांकी प्रस्तुत करते हुए खूब तालियां बटोरी ।उनकी बाल चंचलता,बाल्या अवस्था में अद्भुत लीला,ऊखल बंधन,माखन चोरी और बाल सखाओं के साथ हास परिहास लीला का बखान करते हुए कथा व्यास ने कहा कि कन्हैया की इस मनमोहक झांकी का दर्शन करने से मन के कलुश मिट जाते है और ह्दय में प्रेम का अद्भुत संचार होता है।इसके अलावा भव से मोक्ष की ओर ले जानी वाली भागवत कथा के श्रवण का महत्व बताते हुए उन्होंने नन्दोत्सव काली मर्दन,गोवर्धन धारण की मार्मिक कथा से सभी श्रोताओं को आह्लादित किया। वही कलाकारों की ओर से रात्रिकालीन में भक्ति संगीत का भी आयोजन किया जा रहा है । श्रवण कर्ता मुख्य यजमान ज्ञानमति सिंह एवं संत बहादुर सिंह ने भागवत भगवान और कथा आचार्य का माल्यार्पण किया।आयोजक जीएस एकेड़मी के अध्यक्ष रावेन्द्र प्रताप सिंह और प्रबंधक विनय कुमार सिंह बिन्नू ने सभी भक्त श्रोतागणों के प्रति स्वागत आभार प्रकट किया। इस मौके पर पुरोहित पं राम गोपाल तिवारी डा0 धनराज सिह, सुरेन्द्र सिंह, धनश्याम मिश्रा, विद्याकांत , पूर्व प्रधान बब्बू सिंह, कुक्कू सिंह, कृष्ण कमल सिंह, राममूर्ती पयासी,अर्जुन सिह, सूबेदार सिह, चन्द्र प्रकाश सिंह, माताफेर सिंह, भानु प्रताप सिंह ग्राम प्रधान धरवारा प्रतिनिधि वीरू सिंह जनार्दन सिंह गोरेलाल तिवारी अनुराग सिंह विवेक सिंह प्रशांत सिंह समेत बडी संख्या में महिलाएं और श्रोतागण मौजूद रहे।

किसान यूनियन भानू का संघर्ष लाया रंग

जो किसानों का नही वह देश का नही : राजू चौबे

अखंड भारत संदेश

कोरांव। लंबे समय से भारतीय किसान यूनियन भानू द्वारा किसानों के मांग पर डीही डीवाई नहर पर एकवाडट्ट निर्माण को लेकर वर्षो से पद यात्रा धरना प्रर्दशन और सक्षम अधिकारियों का घेराव कर विरोध प्रदर्शन किया जा रहा था जिसको सक्षम अधिकारियो द्वारा संज्ञान लेते हुए विभाग द्वारा नौ करोड़ की धनराशि उपलब्ध कराई गई। हालांकि इस बहुप्रतीक्षित कार्य का श्रेय लेने के लिये राजनीतिक दलों द्वारा होड़ भी मची हुई है जहां सत्तारूढ़ पार्टी के लोग इसको सरकार की उपलब्धि बता रहे है तो वही दूसरी ओर किसान यूनियन भानू के लोग इसे किसानों के संघर्ष की जीत बता रहे है।सूत्रों से मिल रही जानकारी के अनुसार आगामी 23नवंबर को प्रदेश के कृषि मंत्री के द्वारा उसका शिलान्यास का भी कार्यक्रम प्रस्तावित है। इसी क्रम में राजू चौबे जिलाध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन भानू ने कहा की संबंधित विभाग द्वारा किए जा रहे कार्य से क्षेत्र के किसान अपने फसलों को सुगमता से सिंचाई कर सकेंगे और इससे दर्जनों गांव लाभवंतित होंगे। हालंकि किसान नेता ने शासन से मांग किया की उक्त कार्यक्रम का शिलान्यास किसी राजनैतिक व्यक्ति से न करवाते हुए किसानों द्वारा ही करवाई जाए साथ ही साथ किसान नेता ने किसानों को आश्वस्त किया की किसानों की हर लड़ाई भाकियू लड़ने को सदैव तैयार है और जो किसान का नही वह देश का नही क्युकी किसान देश की रीढ़ है। चर्चित किसान नेता राजेश पांडे ने कहा की जिस तरह से सरकार द्वारा किसानों को उनका अधिकार देने में आनाकानी कर रही है यह अशोभनीय और निंदनीय है किसान अपने ही अधिकारों के लिए दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर है शासन की गलत नीतियों के कारण किसानों को अपनी लागत निकालने में भी पसीने छूट रहे है जिसके कारण किसान दिन प्रतिदिन कर्ज तले डूबते जा रहे है और आत्महत्या को मजबूर हो रहे है अगर यही हाल रह गया तो वह दिन दूर नही जब देश का किसान सत्ता को उखाड़ फेंकने का काम करेगा। इस मौके पर डाक्टर वी के सिंह प्रदेश महासचिव राजीव चंदेल मंडल अध्यक्ष रविंद्र जैसल प्रधान पिंटू चौबे युवा जिला अध्यक्ष के के मिश्रा प्रकाश सिंह पटेल मंगला कोल पप्पू शुक्ला कमलेश मिश्रा राजेश कुशवाहा पिंटू बेलबंश आदि लोग उपस्थित रहे।

महिला उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में समूह की महिलाओं को किया गया जागरूक

अखंड भारत संदेस

महिला उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम में समूह की महिलाओं को किया गया जागरूक

करछना। मगलवार को बी.बी.सिंह बालिका इंटर कॉलेज पीडी में महिला उद्यमिता व रोजगार को बढ़ावा देने के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। बिग एल्फा और गुमान महिला कल्याण समिति के संयुक्त तत्वाधान मे सरकार द्वारा लाइट के एक्सपोर्ट को मूर्त रूप देने की बात को धरातल पर उतारने के लिए स्वयं सहायता समूह की 30 महिलाओं को लाइट बनाने और ओ०डी०ओ०पी० के कुछ उत्पाद जैसे डेकोरेटिव आइटम बनाने की 2 दिवसीय ट्रेनिंग आयोजित की गयी । प्रशिक्षण कार्यक्रम से महिलाओं को रोजगार मिलेगा तथा जो महिलाए अपनी आजीविका चलाना चाहती है उन्हे रोजगार के अवसर मिलेगा। कार्यक्रम का उदघाटन जिला उद्योग केंद्र के अपर सांख्यिकी अधिकारी ज्ञानेंद्र गौतम ने माँ सरस्वती के चित्र माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित करते हुए किया। ट्रेनर विवेक सिंह जिन्हें दो बार स्काच एवार्ड मिल चुका है और उत्तराखण्ड मुख्यमंत्री द्वारा स्वयं लांच की गयी ग्राम लाइट की स्कीम में ट्रेनिंग दे चुके हैं।उन?होंने बताया कि हमारे द्वारा तैयार की गई लाइट, झूमर और झालर की मांग देश के अलग राज?यों के अलावा विदेशो मे मांग बढ़ रही है।अपर सांख्यिकी अधिकारी ज्ञानेंद्र गौतम ने समूह की महिलाओं को प्रदेश सरकार की योजनाओं की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया योजनाओं से ग्रामीण महिलाओं को सीधे तौर पर लाभ मिल रहा है। आज महिलाएं योजनाओं के जरिए रोजगार की मुख?यधारा से जुड़ रहीं हैं। उन्होंने समूह की महिलाओं को बताया कैसे वो अपने हुनर से और जिला उद्योग केंद्र की मदद से स्वरोजगार आरम्भ करके अच्छा व्यवसाय किया जा सकता है ।प्रशिक्षण पाकर महिलाओं ने बताया कि एलइडी लाइट झूमर एलईडी बल्ब तैयार करने का प्रशिक्षण हम लोगों को दिया जा रहा है। इससे कम पूंजी में साल भर तक हम लोग अपनी आय का एक नया जरिया तलाश पाए हैं। साल भर तक अलग अलग त?योहारों पर इन सबकी मांग बढ़ जाती है।कार्यक्रम में डी पी सिंह क्लासेज के डायरेक्टर श्री डी.पी. सिंह वी.एस. एनर्जी के सी.ई.ओ. विवेक सिंह ग्राम प्रधान कृष्ण कुमार यादव मौजूद रहे।

मुद्दा विहीन विपक्ष आदोलन जीवी को आगे कर रच रहा षडयंत्र : अरुण सिंह

विशाल किसान टैक्टर रैली के संदर्भ मे किसान मोर्चा यमुनापार ने की पत्रकार वार्ता

घूरपुर। देश और प्रदेश के अन्नदाता किसानो के हित मे देश के प्रधानमंत्री मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लगातार किसानों की आय दोगुनी करने के दिशा मे अनेको कदम उठाए है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार बनते ही हमारे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने प्रथम कैबिनेट बैठक में प्रदेश के 86 लाख किसानों के 36 हजार करोड़ रूपए के ऋण माफ किया। उक्त बातें मंगलवार को सायं घूरपुर मीडिया कार्यालय मे भारतीय जनता पार्टी यमुनापार किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष अरूण कुमार सिंह उर्फ पप्पू ने पत्रकार वार्ता को सम्बोधित कहा, आगे बताया कि जो किसान आंदोलन रत है वह वास्तव में किसान नही है। वह आन्दोलन जीवी है। मुद्दा विहीन विपक्ष के इशारे पर कुछ आन्दोलन जीवी किसानों को वरगलाने और उकसाने का कुचक्र रच रहे है। जो जागरूक किसान सिरे से नकार चुके है। अन्नदाता किसान लगातार दिन रात रिकार्ड पैदावार कर देश प्रदेश के विकास को गति दे रहा है। अरूण सिंह ने आगे बताया हम प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर 24 नवम्बर को यमुनापार जिले में "विशाल किसान टैक्टर रैली" का आयोजन करछना के कुशगढ़ मंदिर मैदान मे सुबह 11 आयोजित कर रहे है। जिसमें सैकड़ों की संख्या मे किसान टैक्टर रैली निकाल कर विपक्ष को आइना दिखाएगा की किसान आज भी भारतीय जनता पार्टी के मोदी योगी सरकार के साथ खडी है। पत्रकारों द्वारा अन्ना पशुओं निदान के का सवाल पूछा तो जबाव मिला कि जगह-जगह अस्थाई पशु आश्रय बनाए गए हैं। नागरिकों को प्रति पशु 900? का पालन पोषण की सुविधा शासन ने उपलब्ध कराई है उसका लाभ किसान ले सकते है। साथ ही आम नागरिक को भी इस ओर जागरूक होना होगा। साथ ही सरकार के तमाम उपलब्धियां को गिनाई। पत्रकार वार्ता का संचालन किसान मोर्चा के जिला मीडिया प्रभारी गिरीश कुमार चतुर्वेदी ने किया। पत्रकार वार्ता मे किसान मोर्चा के जिला महामंत्री आदेश सिंह, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी, भाजपा जिला सह मीडिया प्रभारी आर. के. शर्मा, रोहित सिंह,आकाश सिंह, अभिषेक शुक्ला,अजय द्विवेदी आदि उपस्थित रहे।

विकास खंड कोरांव अन्तर्गत उच्च प्राथमिक विद्यालय देवरी में खेल प्रतियोगिता का हुआ समापन

लेडियारी। उच्च प्राथमिक विद्यालय,देवरी में मगलवार को खेल प्रतियोगिताआयोजित की गई जिसमे मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी राजीव प्रताप सिंह थे।बताते चलें कि विगतवर्षो की भांति इस वर्ष भी यह खेल प्रतियोगिता संपन्न कराई गई ।रैली का शुभारंभ खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा दौड़ प्रतियोगिता में हरी झंडी दिखाकर किया गया।खेल प्रतियोगिता में 100,200,400 मीटर की दौड़,लंबी कूद,ऊंची कूद,कबड्डी, बैडमिंटन,आदि खेल हुए जिसमे संकुल के सभी विद्यालयों के बच्चो ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया।इस प्रतियोगिता में बालिका में 100 मीटर दौड़ वन्दना प्रथम 200 मीटर विकास प्रथम सुधीर ने दूसरा अस्थान प्राप्त किया इसी तरह 400 मीटर दौड़ में वन्दना प्रथम स्थान प्राप्त किया । आयोजन मे प्रमुख रूप से जितेंद्र सिंह,संतोष पाल,अग्नि प्रकाश शर्मा,कृष्ण कुमार मिश्र,लालमणि गुप्ता,चंद्र शेखर सिंह,राकेश प्रताप सिंह आदि शिक्षकों के अलावा सैकड़ो की सख्या में लोग उपस्तिथ रहे ।

स्वच्छ पर्यावरण से ही, स्वस्थ होता है शरीर : सीडीओ

सहसों। प्राथमिक विद्यालय देवनहरी में कोविड-19 संक्रमण के बचाव के लिए किए जा रहे वैक्सीनेशन का निरीक्षण करने मुख्य विकास अधिकारी प्रयागराज सीपू गिरी पहुंचे। इस मौके पर उन्होंने उपस्थित शिक्षकों एवं अभिभावकों से कहा कि स्वच्छ वातावरण ही स्वच्छ परिवेश में अच्छे स्वास्थ्य का मूल है। उन्होंने विद्यालय के स्वच्छ वातावरण, पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से लगाए गए हरे पौधे की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के स्वास्थ्य एवं शिक्षण कार्य के लिए ऐसे वातावरण बहुत ही अनुकूल है। जिसका अनुकरण सभी विद्यालय के लोगों को करना चाहिए। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों की सराहना करते हुए कहा मेहनत लगन के कारण ही वैक्सीनेशन के अपार सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने उपस्थित स्वास्थ्य कर्मियों को चिन्हित कर वैक्सीनेशन और कराने का निर्देशित किया। इस मौके पर प्रधानाध्यापक विंदेश्वरी प्रसाद, सहायक अध्यापक अजीत सिंह आदि संभ्रांत ग्रामीण उपस्थित रहे।

बड़ोखर को पर्यटन क्षेत्र घोषित करने की माँग

अखंड भारत संदेश

यमुनापार विकास समिति ने की पहल

कोरांव। यमुनापार विकास समिति की अगुवाई मे प्रयागराज के तहसील कोरांव अन्तर्गत बडोखर मे स्थित प्राकृतिक सौन्दर्य को समेटे पहाड़ एवं पर्यटन स्थलो का भ्रमण किया। यमुनापार में पर्यटन विकास की असीम सम्भवनाओं को समेटे हुए इन स्थलो के संरक्षण संवर्द्धन एवं विकास के लिए यमुनापार विकास समिति सतत प्रयासरत है।इसी क्रम मे समिति के सदस्यों, पदाधिकारियों के साथ समाजसेविओं द्वारा प्रयागराज के कोरांव ब्लॉक स्थित बडोखर गांव मे पर्वतीय एवं धार्मिक स्थलो के विकास का जायजा लिया। क्षेत्र भ्रमण के पश्चात सबरी स्मारक महाविद्यालय बड़ोखर के प्रांगण मे आयोजित बैठक मे विचार व्यक्त करते हुए समिति के अध्यक्ष पत्रकार गजेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि प्रयागराज के यमुनापार क्षेत्र मे रामायण व महाभारत कालीन सहित विभिन्न ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक एवं प्राकृतिक सौदर्य को समेटे पर्यटन स्थल मौजूद है, जो संरक्षण व संवर्द्धन के अभाव मे अपनी पहचान को खोते जा रहे है। उन्होंने कहाकि क्षेत्रीय जनमानस की तरफ से जब पहल होगी तभी अपनी धरोहरो का संरक्षण व स्थलो का संवर्धन हो सकेगा। बैठक का संचालन करते हुए यमुनापार पर्यटन विकास समिति के अध्यक्ष सुरेश कुमार कुशवाहा ने क्षेत्र के प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थलो के बारे मे जानकारी देते हुए प्राकृतिक चिकित्सा मे वनौषधियों की उपयोगिता पर चर्चा की। उक्त अवसर पर लायन्स क्लब प्रयागराज गौरव के अध्यक्ष सन्त कुमार वर्मा, महामंत्री रवि भूषण गुप्ता कोषाध्यक्ष डॉ० रमेश चंद्रा, जिला पंचायत सदस्य प्रदीप कुमार,अरविन्द सिंह, प्रहलाद सिह, रमेश कुमार सिंह, सुरेन्द्र प्रताप सिंह, अरुण प्रताप सिंह आदि उपस्थित लोगों ने बड़ोखर को पर्यटन क्षेत्र घोषित करने की माँग किया।

खबर संक्षेप

कॉलेज से लौट रही तीन छात्राओं के साथ हुई छेड़खानी

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र के तरवाई गांव में कॉलेज से लौट रही तीन छात्राओं के साथ एक युवक द्वारा छेड़खानी की गई । युवतियों के विरोध करने पर युवक ने उनके साथ मार पीट भी की । वहीं छात्राओं के परिजनों द्वारा मामले की सूचना मेजा पुलिस को दी गई। सोमवार को मेजा थाना क्षेत्र के अलग अलग गांव की तीन युवतियां अपने कालेज से लौट रही थीं । अभी वो थोड़ी दूर पर ही पहुचीं थी कि डोहरिया गांव के हंसराज सिंह उर्फ पंडा ने रास्ते में ही तीनों युवतियों को रोक लिया, और उनके साथ बदतमीजी करने लगा।छात्राओं ने जब विरोध किया तो आरोपी युवक मारपीट करने लगा । जिसमें छात्राओ को चोट भी लगी । वहीं पीड़ित छात्राओं के अभिभावकों द्वारा घटना की सूचना मेजा पुलिस को दी गई । मामले को लेकर इंचार्ज प्रभारी निरीक्षक मेजा पंकज त्रिपाठी ने बताया कि आरोपी के खिलाफ अभियोग पंजीकृत कर लिया गया है। आरोपी फरार है, लगातार दबिश देकर उसकी तलाश भी की जा रही है। जल्द आगे की कार्रवाई की जाएगी।

खाली पदों पर भर्ती की मांग को लेकर प्रतियोगी छात्रों ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

युवा मंच के बैनर तले प्रतियोगी छात्रों ने विभिन्न आयोगों में फंसी भर्ती प्रक्रिया पूरी करने को लेकर किया प्रदर्शन

प्रयागराज। युवा मंच के बैनर तले प्रतियोगी छात्रों ने विभिन्न आयोगों में फंसी भर्ती की प्रक्रिया पूरी करने की मांग को लेकर मंगलवार को बालसन चौराहे पर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान जोरदार नारेबाजी भी की गई। प्रतियोगी छात्र हाथ में तख्तियां लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। प्रतियोगियों ने 27 हजार शिक्षक भर्ती टीजीटी-पीजीटी का परिणाम शीघ्र जारी करने, यूपीपीएससी में फंसी भर्तियों को शीघ्र पूरा करने आदि की मांग की। बता दें कि एलटी ग्रेड शिक्षक भर्ती परीक्षा में कला विषय के चयनित अभ्यर्थियों की नियुक्ति फंसी हुई है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) दो माह पहले ही चयनित अभ्यर्थियों की नियुक्ति की संस्तुति माध्यमिक शिक्षा निदेशालय को भेज चुका है। एलटी ग्रेड शिक्षकों के 10768 पदों पर भर्ती के लिए 29 जुलाई 2018 को परीक्षा आयोजित की गई थी। इसमें कला विषय के 470 पद शामिल थे।

मुंबई में यातना सहने के बाद महिला ने प्रयागराज में लिखाया मुकदमा

प्रयागराज। नवाबगंज थाना क्षेत्र में रहने वाली एक विवाहिता ने ससुरालवालों पर दहेज के लिए प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। साथ ही पति पर अनैतिक तरीके से संबंध बनाने और जेठ पर दुष्कर्म का आरोप लगाया है। मामले की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस ने विवाहिता के देवर को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य की तलाश में दबिश दे रही है।

नवाबगंज थाना क्षेत्र की रहने वाली एक विवाहिता की शादी पिछले वर्ष क्षेत्र के ही युवक से हुई थी। विवाह के बाद उसे दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाने लगा। दुकान खोलने के लिए पांच लाख रुपये मांगे गए। विवाहिता के मायके वालों ने इन्कार करते हुए कुछ समय मांगा तो पति उसे लेकर मुंबई चला गया। साथ में जेठ भी गया। विवाहिता का आरोप है कि वहां से खाना-पानी नहीं दिया जाता था। पति अनैतिक तरीके से संबंध बनाता था। जेठ ने भी उसके साथ दुष्कर्म किया। किसी तरह उसके स्वजनों को जानकारी हुई तो वे मुंबई पहुंचे और उसे यहां ले आए। उसने पुलिस को आपबीती बताते हुए पति, सास, ससुर, जेठ और देवर के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया। मंगलवार को पुलिस ने आरोपित देवर को गिरफ्तार कर लिया है। इंस्पेक्टर संजय द्विवेदी का कहना है कि अन्य आरोपितों को पकड़ लिया जाएगा।

छेड़खानी का आरोप लगाने वाली शिक्षिका के ही निलंबन पर आयोग सख्त

अखंड भारत संदेश

सैदाबाद। सैदाबाद ब्लाक के प्राइमरी स्कूल की शिक्षिका की ओर से छेड़खानी का आरोप लगाकर खंड शिक्षाधिकारी पर चप्पल फेंकने के मामले में निलंबन की कार्रवाई पर राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने सवाल उठाए हैं। इस प्रकरण में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की ओर से शिक्षिका के साथ मतभेद करने का आरोप लगाया गया है। आयोग की ओर से अपर पुलिस महानिदेशक को एक पत्र भेजकर कार्रवाई के लिए कहा गया है। साथ ही की गई कार्रवाई से 12 दिसंबर तक अवगत कराने का निर्देश दिया गया है। पत्र में कहा गया है कि सहायक अध्यापिका के साथ गाली-गलौच और अभद्र व्यवहार व छेड़छाड़ की गई लेकिन उनकी शिकायत पर मुकदमा दर्ज नहीं किया गया। उल्टे शिक्षिका पर निलंबन की कार्रवाई कर दी गई। बीते मंगलवार की दोपहर खंड शिक्षा अधिकारी बलिराम प्राइमरी स्कूल मलेथुआ का निरीक्षण करने गए थे। तभी वहां पूरा घटनाक्रम हुआ। शोर सुनकर अन्य शिक्षक पहुंचे और मामला शांत कराया। शिक्षिका ने खंड शिक्षाधिकारी पर छेड़खानी करने का संगीन आरोप लगाया। वहीं, खंड शिक्षाधिकारी ने कहा कि शिक्षिका अध्यापन में रुचि नहीं लेती हैं। बच्चे पढ़ाई में बहुत कमजोर हैं। सुधार के लिए शिक्षिका को कहा गया तो वह मारपीट करने लगीं। वहीं, इस पूरे मामले में बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी की ओर से शिक्षिका पर एकतरफा कार्रवाई करते हुए निलंबित किए जाने पर अब राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने दखल दिया है। इसे लेकर महकमे में अब खलबली मची है।

इंदिरा मैराथन : आरटीपीसीआर रिपोर्ट नहीं तो स्टेडियम में करानी होगी कोरोना की जांच

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। 36वीं अखिल भारतीय प्राइजमनी इंदिरा मैराथन में भाग लेने वाले धावक-धाविकाएं आर टी पीसी आर रिपोर्ट नहीं लाए तो मदन मोहन मालवीय स्टेडियम में कोरोना की जांच करानी होगी। धावक-धाविकाओं की जांच के लिए स्टेडियम में स्वास्थ्य विभाग का कैंप लगेगा। जांच रिपोर्ट 19 नंबबर की सुबह दौड़ शुरू होने से पहले दे दी जाएगी। किसी धावक-धाविका की रिपोर्ट पॉजिटिव मिलने पर दौड़ में भाग नहीं लेने दिया जाएगा। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने इंदिरा मैराथन की तैयारियों पर मंगलवनार को पत्रकारों के साथ बातचीत में यह जानकारी दी। जिलाधिकारी ने बताया कि कोरोना से बचाव का दोनों टीका लगा चुके धावक-धाविकाओं के लिए आरटीपीसीआर रिपोर्ट लाना अनिवार्य नहीं है। लेकिन दोनों वैक्सीनेशन का प्रमाण दिखाना होगा। तैयारियों की जानकारी देते हुए जिलाधिकारी ने बताया कि रूट में एक दर्जन से अधिक स्थानों पर गड्ढे दौड़ से पहले दुरुस्त कर दिए जाएंगे।

जिलाधिकारी के अनुसार प्रदेश के खेल, युवा कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उपेंद्र तिवारी उद्घाटन व समापन समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। धावकों के लिए रूट पर 16 बूथ बनाए जाएंगे। 54 बिंदुओं पर पुलिस बूथ होगा। पांच एंबुलेंस लगाई जाएंगी। इंदिरा मैराथन के रूट में परिवर्तन किया गया। कोरोना को देखते हुए इस साल क्रॉस कंट्री दौड़ नहीं हो रही है। धावक-धाविका इसबार नैनी ब्रिज से सीधे रीवा रोड पर जाएंगें और वापस लौटेंगे। प्रतियोगिता के समापन समारोह में स्कूल-कॉलेज की छात्राएं रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगी।

कॉस्टेबल जीडी परीक्षा में 64 फीसदी अभ्यर्थियों ने दर्ज कराई उपस्थिति

प्रयागराज। कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) ओर से मंगलवार से शुरू की गई कांस्टेबल जीडी भर्ती परीक्षा-2021 के पहले दिन एसएससी मध्य क्षेत्र, प्रयागराज के तहत उत्तर प्रदेश बिहार में 64.08 फीसदी अभ्यर्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। परीक्षा उत्तर प्रदेश और बिहार के 17 जिलों में आयोजित की गई। उत्तर प्रदेश और बिहार में परीक्षा के लिए कुल 98985 अभ्यर्थी पंजीकृत हैं, जिनमें से 63428 अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल हुए। उत्तर प्रदेश में अभ्यर्थियों की उपस्थिति 65.42 फीसदी और बिहार में 61.17 फीसदी रही। उत्तर प्रदेश में परीक्षा के लिए पंजीकृत 67836 अभ्यर्थियों में से 44375 और बिहार में परीक्षा के लिए पंजीकृत 31149 अभ्यर्थियों में से 19053 अभ्यर्थी उपस्थित रहे। परीक्षा के लिए प्रयागराज में 12 केंद्र बनाए गए हैं।तीन पालियों में हुई परीक्षा के लिए प्रयागराज में कुल 8715 अभ्यर्थी पंजीकृत हैं, जिनमें से 6070 अभ्यर्थी (69.65) फीसदी परीक्षा में शामिल हुए। आगरा में 63.40, अलीगढ़ में 55.41, बरेली में 62.95, गोरखपुर में 71.40, झांसी में 64.87, कानपुर में 65.84, लखनऊ में 61.59, मेरठ में 64.57, मुरादाबाद में 67.63, वाराणसी में 68.69, मुजफ्फरनगर में 69.93, भागलपुर में 54.35, मुजफ्फरपुर में 58.56, पटना में 62.10, आरा में 65.65 और पूर्निया में 59.53 फीसदी उपस्थित रही।

प्रयागराज जंक्शन से पकड़े गए शराब के तस्कर

अखंड भारत संदेश

यूपी से बिहार ले जा रहे थे डेढ़ करोड़ के अवैध शराब

पकड़े गये तस्करों के पास से डेढ़ करोड़ के शराब बरामद के साथ पुलिस टीम

प्रयागराज। जंक्शन से रेलवे सुरक्षा बल ने करीब 1.15 लाख रुपये का अवैध शराब बरामद किया है। पांच शराब तस्कर भी गिरफ्तार किए गए हैं। बिहार में शराब प्रतिबंधित होने के कारण यह सभी यूपी से अवैध शराब खरीदकर बिहार ले दोगुने दाम पर बेचते थे। पोस्ट कमांडर, प्रयागराज बीपी सिंह अपनी टीम के साथ गश्त एवं प्लेटफार्म चेकिंग पर निकले थे। इस दौरान पांच सदिंग्ध युवक प्लेटफार्म चार व पांच के बीच में शौचालय के पास बैठकर सिगरेट पी रहे थे। जब उनके बैग की तलाशी ली जाने लगी तो वह सभी विरोध करने लगे। सख्ती से बैंक की चेकिंग की गई तो बैग में विहस्की की बोतलें एवं 2 पेचकस, 2 पिलास मिला। सभी के बैग से कुल 36 बोतल रायल स्टैग विहस्की एवं 816 ट्रेटा पैक बरामद हुईं पूछताछ में बताया कि बिहार में शराब बैन है, इसलिए यूपी से ट्रेनों से ले जाकर बिहार ले जाकर दोगुने दामों पर बेच देते हैं।

पकड़े गए सभी आरोपी बिहार के रोहित पुत्र जोगेंद्र,.डब्ल्यू कुमार पुत्र मनोज कुमार, नेपाली साहनी पुत्र सोहराज साहनी, छोटू कुमार पुत्र नंदू प्रसाद, चंदन कुमार पुत्र राजकुमार साहनी हैं। यह पांचों मछरहटा, थाना फतुहा, जनपद पटना बिहार के रहने वाले हैं। सभी अभियुक्तों को समय से अग्रिम कार्रवाई के लिए न्यायालय में पेश किया जाएगा। मामले की की जानकारी आबकारी विभाग को शराब बरामदगी के संबंध मे सूचना दी गई गई है। इस टीम में रेलवे सुरक्षा बल के हमराह उप निरीक्षक ओमप्रकाश, उप निरीक्षक.सुधीर कुमार, सहायक उप निरीक्षक.बृजमोहन यादव,कांस्टेबल संतोष यादव, सोनू, रवि यादव, सुखसागर सरोज मौजूद रहे।

गंगा किनारे हो रहे अवैध निमार्णों का सर्वे करने का निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गंगा किनारे प्रतिबंधित 500 मीटर के दायरे में हो रहे निजी निमार्णों की निष्पक्षता से जांच कर रिपोर्ट देने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने प्रयागराज विकास प्राधिकरण से कहा है कि वह निमार्णों का सर्वे करने में भेदभावपूर्ण रवैया अपनाने से बचें और सही सर्वे करके कोर्ट में रिपोर्ट दाखिल करें।

कोर्ट ने पीडीए द्वारा गंगा किनारे प्रस्तावित अपनी योजना की भी जानकारी प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। इससे पूर्व कोर्ट के निदेर्शों के अनुसार गंगाजल के नमूनों की जांच रिपोर्ट व नमूना कोर्ट में प्रस्तुत किया गया, जिसे कोर्ट ने सील बंद कर हाईकोर्ट की रजिस्ट्री में रखने का निर्देश दिया है। गंगा प्रदूषण याचिका पर सुनवाई कर रही न्यायमूर्ति मनोज कुमार गुप्ता, न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा और न्यायमूर्ति अजीत कुमार की पीठ ने प्लास्टिक बैन पर प्रभावी नियंत्रण लगाने के मामले में कमिश्नर प्रयागराज को सख्त निगरानी करने और अगली सुनवाई पर व्यक्तिगत हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया है। कमिश्नर ने बताया कि पॉलीथिन पर प्रतिबंध लगाने संबंधी राज्य सरकार के आदेश का पालन सुनिश्चित करने के लिए एडीएम सिटी, अपर नगर आयुक्त और एसपी सिटी की एक कमेटी बनाई गई है। कोर्ट ने कमिश्नर से कहा है कि वह इस कमेटी के कार्यों की निगरानी करें पॉलीथिन का उपयोग बंद करने पर गंभीरता पूर्वक कार्रवाई करें।

विकास खंड उरुवा में राष्ट्रीय मानसिक दिव्यांग कैंप का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

राष्ट्रीय मानसिक दिव्यांग कैंप में मानसिक बीमार लोगों का हुआ परीक्षण

मेजा रोड। मंगलवार को विकास खंड उरूवा में राष्ट्रीय मानसिक दिव्यांग कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें चिकित्सकों द्वारा दर्जन भर मानसिक बीमार लोगों का परीक्षण किया गया कार्यक्रम में उरूवा ब्लॉक प्रमुख प्रीतिनिधि पप्पू गौतम द्वारा सभी दिव्यांगों को प्रमाणपत्र दिया गया । कार्यक्रम में सीएचसी रामनगर के अधीक्षक डा० वाई०पी० सिंह सहित कई डॉक्टर मौजूद रहे । बता दें कि उरूवा ब्लाक परिसर में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का आयोजन किया गया। इस दौरान अधीक्षक वाई पी सिंह के नेतृत्व में जिले के चिकित्सकों की टीम ने मानसिक दिव्यांगों का परीक्षण हुआ । कैंप में कुल 15 दिव्यांगों का प्रमाणपत्र भी बनाया गया । कार्यक्रम में प्रमुख प्रतिनिधि उरूवा पप्पू गौतम ने दिव्यांगों को अपने हाथों से प्रमाणपत्र का वितरण किया । प्रमुख प्रतिनिधि पप्पू गौतम ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी बहुत ही महत्वपूर्ण होती है । इसलिए किसी भी स्वास्थ्यकर्मी को अपने कार्यों को बहुत ही गंभीरता से करना चाहिए । वहीं डा वाईपी सिंह ने कहा कि मानसिक दिव्यांगों के लिए यह प्रमाणपत्र बहुत ही अनिवार्य होता है । इस प्रमाणपत्र से मानसिक बीमार व्यक्ति को तमाम योजनाओं का लाभ आसानी से मिल सकता है।

ग्राम प्रधान ने सरकारी जमीन पर हुए अतिक्रमण हटवाने की एसडीएम से की फरियाद

करछना। तहसील क्षेत्र के धरवारा ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान बाबूलाल ने उप जिलाधिकारी करछना से ग्राम सभा की बंजर सहित सरकारी जमीनों पर हुए अतिक्रमण की लिखित शिकायत करते हुए उन जमीनों को अवैध कब्जेदारों से मुक्त कराने का एसडीएम से गुहार लगाया है। ग्राम प्रधान धरवारा ने बताया कि ग्राम पंचायत धरवारा में बंजर जमीन और सरकारी जमीन गांव के दबंग व मन बढ़ लोगों ने ढेर दिनों से अवैध कब्जा कर अतिक्रमण कर लिया है । अवैध कब्जे में उक्त जमीने शामिल है। उन्होंने कहा कि न्यायालय व शासन के आदेश के बाद जिला प्रशासन द्वारा गांव के विकास के लिए अवैध कब्जे वाली जमीन से कब्जा हटवा कर विकास और मुख्य निर्माण पर गांव के लोगों को सहूलियत दी जा रही है । वहीं गांव के कुछ स्वार्थी और दबंग लोग ग्राम सभा के जमीनों पर अवैध कब्जा करने की स्वार्थ के लिए पूरे गांव का विकास बाधित कर रहे हैं। उन्होंने शिकायती पत्र में यह भी दर्शाया है कि सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण व कब्जा बरकरार रहने से मनरेगा पार्क का निर्माण भी बाधित पड़ा हुआ है । इस बाबत उप जिलाधिकारी करछना ने प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए तहसील के आर आई समेत इस्पेक्टर करछना से बंजर भूमि से अवैध अतिक्रमण शीघ्र हटावाए जाने का आदेश निर्देशित किया है ।

मेजा रोड में एचडीएफसी बैंक की शाखा का हुआ शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

मेजारोड में एचडीएफसी बैंक शाखा का हुआ खण्ड विकास अधिकारी ने किया शुभारम्भ

मेजा रोड। मेजारोड के प्रयागराज रोड स्थित सरस्वती शिशुमन्दिर के सामने एचडी एफसी बैंक की शाखा का शुभारंभ किया गया । शाखा का शुभारंभ खण्ड विकास अधिकारी मेजा सपना अवस्थी जज ने फीता काटकर किया उसके बाद दीप प्रज्वलित किया ।

इस अवसर पर खण्ड विकास अधिकारी सपना अवस्थी ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में बैंक शाखाओं की कमी थी लोगों को काफी परेशानी उठानी पड़ती थी । बैंक की नई शाखा खुलने से क्षेत्र के लोगों को काफी सहूलियत होगी । इस दौरान मौजूद बैंक के सिनियर अधिकारी अजय कुमार गुप्ता और मेजारोड की शाखा के प्रबंधक संजीव कुमार मिश्र ने बैंक की योजनाओं से अवगत कराया। इस दौरान मुख्य रूप से व्यापार मंडल मेजारोड के संरक्षक इंजीनियर नित्यानंद उपाध्याय, सिद्धान्त तिवारी,प्रमुख प्रतिनिधि मेजा गंगा प्रसाद मिश्र,व्यापार मंडल अध्यक्ष विष्णु प्रकाश उर्फ पप्पू उपाध्याय,सपा नेता लल्लन सिंह,दिलावर सिंह,प्रमुख प्रतिनिधि मेजा गंगा प्रसाद मिश्र,रामसागर उर्फ मुखिया यादव,पूर्व प्रधानाध्यापक राजेंद्र प्रसाद मिश्र, मनोज कुमार मिश्र, राधेश्याम मिश्र, रजोल शुक्ल, दीना शुक्ल, मनोज पांडेय, रजत राय, विशाल मिश्र, गणेश जायसवाल, गायत्री मिश्रा, नीरज शुक्ल सहित दर्जनों लोग रहे।

रामगढ़ धाम : पौराणिक शिवनगरी के मेले पर संकट के बादल

पूषी तेरस पर लगता है हर वर्ष ऐतिहासिक मेला

आलोक गुप्ता

ऐतिहासकि पौराधिक स्थल पर जहां मेले का आयोजन होता था कुछ लोगों ने कब्जा कर बोल्डर रखवा दिया जो अपनी दुर्दशा व्यक्त कर रहा है।

शंकरगढ़। पौराणिक शिवनगरी रामगढ़ धाम में प्रतिवर्ष पूषी तेरस पर लगने वाले विशाल क्षेत्रीय मेले पर इस वर्ष ग्रहण सा लगता दिखाई दे रहा है। मान्यता है कि यहां पर मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने वन जाते समय शिवलिंग की स्थापना की थी। उसके बाद से ही अनवरत यहां पूषी तेरस पर मेले का आयोजन होता आ रहा है। बताया जा रहा है कि जिस भूमि पर मेले का आयोजन होता था, उस पर कुछ लोगों ने बोल्डर रखकर कब्जा कर लिया है। ऐसे में लोगों में संशय है कि अब मेला लगेगा भी या नहीं। जनपद के यमुनापार में स्थित रामगढ़ धाम प्राचीन काल से ही आस्था के केंद्र में रहा है। मान्यता है कि जब भगवान श्रीराम वन गमन को जाते समय रामगढ़ की सुंदरता को देखकर, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ यहां रुक गएथे और कुछ दिनों के विश्राम के पश्चात यहां शिवलिंग की स्थापना कर इसकी पूजा अर्चना की। स्थानीय मान्यता है कि उसी के बाद से ही रामगढ़ धाम में पूस माह की तेरस को विशाल क्षेत्रीय मेला लगता आ रहा है।

राजा के पूर्वजों ने बनवाई थी कोठी रामगढ़ धाम की मान्यता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि शंकरगढ़ राजा के पूर्वजों ने यहां पर ठहरने के लिए खुद की कोठी का निर्माण करवाया था और प्रतिवर्ष पूषी तेरस के मेले में पूरा राज परिवार यहां आकर भगवान शिव की आराधना करता था। राजा शंकरगढ़ के पूर्वजों द्वारा बनवाई गई कोठी के अवशेष आज भी मौके पर विद्यमान हैं। बताया जाता है कि जिस भूमि पर पूषी तेरस के मेले का आयोजन होता था, उस पर कुछ लोगों ने बोल्डर इत्यादि रखकर घेरा बना लिया है। इसके इलावा कुछ हिस्से पर खेती भी की गई है। ऐसे में मेले के आयोजन पर संकट के बादल लटकते दिखाई दे रहे हैं। क्षेत्रीय लोगों का तो यहां तक कहना है कि उक्त व्यक्ति ने ग्रामसमाज की भूमि पर कब्जा कर रखा है।रामगढ़ धाम में मंदिर के अलावा अभी भी ग्राम समाज की थोड़ी- बहुत जमीन बची है। लेकिन उसमें या तो पानी भरा है या फिर बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं। जिस पर मेले काआयोजन होना संभव नहीं दिख रहा है। इससे क्षेत्रीय लोगों की बेचैनी बढ़ गई है की अब मेला कहां लगेगा? हालांकि रामगढ़ धाम के पुजारियों से बात करने पर उन्होंने बताया कि जमीन को समतल कराकर मेले का आयोजन कराने की तैयारी की जा रही है। फिलहाल यदि इस बार यह आयोजन नहीं होता है तो सैकड़ों वर्ष की परंपरा टूट जाएगी।

यूपी बोर्ड के अंक सुधार परीक्षा में दसवीं के 90.75, बारहवीं में 77.76 फीसदी रिजल्ट

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद ने मंगलवार को हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट वर्ष 2021 की अंक सुधार परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया। हाईस्कूल की अंक सुधार परीक्षा में 90.75 फीसदी और इंटर की परीक्षा में 77.76 फीसदी परीक्षार्थी उत्तीर्ण घोषित किए गए हैं। परीक्षाफल माध्यमिक शिक्षा परिषद की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है।यूपी बोर्ड हाईस्कूल की अंक सुधार परीक्षा में कुल 37952 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिनमें 36809 संस्थागत और 1143 व्यक्तिगत हैं। परीक्षा में 33042 संस्थागत एवं 834 व्यक्तिगत परीक्षार्थी (कुल 33876) परीक्षार्थी शामिल हुए थे। इनमें से 30744 परीक्षार्थी (30107 संस्थागत एवं 637 व्यक्तिगत) उत्तीर्ण घोषित किए गए।संस्थागत परीक्षार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 91.11 फीसदी और व्यक्तिगत परीक्षार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 76.37 फीसदी रहा। बालकों का उत्तीर्ण प्रतिशत 89.59 फीसदी और बालिकाओं का उत्तीर्ण प्रतिशत 92.90 फीसदी रहा। ऐसे में बालिकाओं का उत्तीर्ण प्रतिशत बालकों के मुकाबले 3.31 फीसदी अधिक रहा। वहीं, इंटरमीडिएट की अंक सुधार परीक्षा में कुल 41381 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिनमें 37612 संस्थागत और 3769 व्यक्तिगत हैं। परीक्षा में 31804 संस्थागत एवं 2779 व्यक्तिगत परीक्षार्थी (कुल 34583) परीक्षार्थी शामिल हुए थे। इनमें से 26893 परीक्षार्थी (24814 संस्थागत एवं 2079 व्यक्तिगत) उत्तीर्ण घोषित किए गए। संस्थागत परीक्षार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 78.02 फीसदी और व्यक्तिगत परीक्षार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 74.81 फीसदी रहा। बालकों का उत्तीर्ण प्रतिशत 74.85 फीसदी और बालिकाओं का उत्तीर्ण प्रतिशत 83.62 फीसदी रहा। इस तरह बालिकाओं का उत्तीर्ण प्रतिशत बालकों के मुकाबले 8.77 फीसदी अधिक रहा।

भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मंगलवार को भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन जिला अध्यक्ष उत्सव भूषण पाल के नेतृत्व में छात्रों ने माध्यमिक शिक्षा विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को तृतीय श्रेणी में पदोन्नति और माध्यमिक शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार के खिलाफ माननीय मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। ठरवक के पूर्व जिला अध्यक्ष वेदांत तिवारी ने कहा माध्यमिक शिक्षा विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की तृतीय श्रेणी में 15 वर्षों से गुरु की पदोन्नति तत्काल शुरू होनी चाहिए।

उन्होंने कहा माध्यमिक शिक्षा विभाग में विनियमितीकरण ना होने के कारण शिक्षक परेशान है। सरकार को तत्काल नियमानुसार विनियमिती करण करना चाहिए। एन एस यू आई के जिलाध्यक्ष उत्सव भूषण पाल ने कहा प्रयागराज मंडल में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की पदोन्नति ना कर उनके साथ अन्याय किया जा रहा है। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की तृतीय श्रेणी में पदोन्नति तत्काल शुरू होना चाहिए। उन्होंने माध्यमिक शिक्षा विभाग में दो पदों पर जमीन अधिकारियों को एक पद से मुक्त करने की मांग करते हैं। ज्ञापन ज्ञापन सौंपने वालों में आशुतोष तिवारी मो. हुजैफ, दीपक शुक्ला, मोहम्मद दिलशाद, अब्दुल रहमान, फतेह बहादुर सिंह, मकरम शुक्ला, हेमंत मौर्य, शिवम मिश्रा, आदि छात्र मौजूद रहे।

दर्शन करने आई महिला के गले की सोने की चैन चोरी

संडवा चण्डिका प्रतापगढ़। अंतू इलाके के भदौसी गांव निवासी अधिवक्ता अर्जुन सिंह की बहन उर्मिला देवी मंगलवार सुबह इलाके में स्थित मां चंद्रिका धाम में दर्शन करने आए थे। दर्शन करने के दौरान मंदिर परिसर में ही उर्मिला के गले से सोने की चैन चोर निकाल लिए।जब वह मंदिर के बाहर आई और गले में हाथ लगाया तो सोने की चैन गायब थी तथा वह अवाक रह गई। तथा मंदिर में लगे पुलिसकर्मियों को सूचना दी। पुलिस ने मंदिर के अंदर संदिग्धों की तलाश की किंतु पता नहीं चल सका।मामले में पीड़िता ने घटना की तहरीर अंतू पुलिस को दी सूचना पर पुलिस जांच कर रही है।

27 को बेल्हा आएगी दक्षिण भारत दर्शन स्पेशल ट्रेन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रामेश्वरम, कन्याकुमारी समेत दक्षिण भारत के आधा दर्जन से अधिक दार्शनिक और पर्यटन स्थलों का भ्रमण कराने के लिए चलने वाली भारत दर्शन ट्रेन 27 नवंबर को प्रतापगढ़ होकर जायेगी। दक्षिण भारत का दर्शन कर पुण्य का लाभ लेने वाले एक यात्री को पैकेज के तौर पर 12,288 रुपये का भुगतान करना होगा। इस पैसे में किराया, खाना, नाश्ता और आने जाने के लिए वाहन का किराया शामिल है। कोई अलग से शुल्क नहीं देना होगा। कुल 12 रात 13 दिन का टूर होगा।इंडिया रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा संचालित भारत दर्शन ट्रेन 27 नवंबर को सूबेदार गंज से चलेगी। दोपहर में 12 बजे के करीब प्रतापगढ़ स्टेशन पहुँचने की बात कही जा रही है। ट्रेन अमेठी, रायबरेली, लखनऊ और कानपुर होते हुये जायेगी। इसी रूट से वापसी होगी। आईआरसीटीसी उत्तर रेलवे लखनऊ के मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक अजीत सिन्हा ने बताया है कि ट्रेन से मुख्य रूप से रामेश्वरम, मदुरई, कोवलम, तिरुनन्तपुरम, कन्याकुमारी और इसके आसपास के दार्शनिक स्थलों का भ्रमण हो सकेगा। यात्री इस सुविधा का लाभ लें। अपना आरक्षण कराए। उन्होंने बताया कि 27 नवंबर से ट्रेन यात्रा शुरू होगी। 9 दिसंबर के समाप्त होगी।

बाबागंज ब्लाक में एडी बेसिक ने किया पूर्व बीईओ के खिलाफ जांच व दो विद्यालयों का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़/बाबागंज। पूर्व बीईओ कोमल यादव के खिलाफ शासन द्वारा दिए गए निर्देश पर एडी बेसिक प्रयागराज तनुजा त्रिपाठी ने पूर्व बीईओ के खिलाफ जांच किया। तथा साथ में ब्लाक स्थित मुरैनी और विधासिन प्राथमिक विद्यालयों का भी उन्होंने निरीक्षण किया। दोनों विद्यालयों से अध्यापकों के गायब रहने की मिली थी विभाग को शिकायत। बता दें कि स्कूल छोड़कर मौज मार रहे अध्यापकों पर निरीक्षण के बाद उनपर गिर सकती है गाज। जांच के बाद एडी बेसिक प्रयागराज तनुजा त्रिपाठी ने कहा कि शासन के आदेश पर हुई है जांच। जो कि शासन को भेजी जाएगी। सम्बंधित दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी।

पुलिसवाले ही उड़ा रहे ट्रैफिक नियमों का मजाक

प्रतापगढ़। यातायात माह में एक ओर पुलिस दूसरों को ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूक कर रही है तो दूसरी तरफ खुद पुलिसवाले ही इन नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। यातायात माह में एक ओर पुलिस दूसरों को ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूक कर रही है तो दूसरी तरफ खुद पुलिसवाले ही इन नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। यातायात माह में एक ओर पुलिस दूसरों को ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूक कर रही है तो दूसरी तरफ खुद पुलिसवाले ही इन नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। न तो हेलमेट लगा रहे हैं और न ही चार पहिया वाहनों में सीटबेल्ट का इस्तेमाल कर रहे हैं।

यातायात माह के 15 दिन बीत गए लेकिन आम राहगीरों की बात दूर खुद पुलिसवाले ही जागरूक नहीं हो पा रहे। सोमवार को पुलिस लाइन गेट व कचहरी के आसपास काफी संख्या में ऐसे पुलिसवाले दिखे जो बिना हेलमेट के फरार्टा भर रहे थे। बिना हेलमेट के सिर्फ पुरुष पुलिसवाले ही नहीं दिख रहे थे बल्कि महिला सिपाही भी बिना हेलमेट लगाए स्कूटी पर अम्बेडकर चौराहे से फरार्टा भर रही थीं। एक ही स्कूटी पर तीन महिला सिपाही भी दिखीं लेकिन हेलमेट किसी के सिर पर नहीं लगा था। यही हाल चार पहिया वाहन चला रहे पुलिसवालों का रहा। वर्दी व सादे कपड़े में कई पुलिसवाले कार चलाते दिखे लेकिन सीटबेल्ट किसी ने नहीं लगाई थी। प्राइवेट कार ही नहीं बल्कि विभाग के सरकारी चार पहिया वाहन चलाने वाले पुलिसवाले भी बिना सीटबेल्ट के वाहन चला रहे थे। यहां तक कि अधिकारियों के स्कॉट में चलने वाली पुलिस की जिप्सी का ड्राइवर भी बिना सीटबेल्ट लगाए जिप्सी चला रहा था। इस मामले में टीएसआई नरेन्द्र सिंह का कहना है कि हादसे यह नहीं देखते कि सामने पुलिसवाला है या कोई और। ट्रैफिक नियम सबकी अपनी जिंदगी के लिए भी जरूरी है।

भंडार नायक निलंबित, एफसीआई के गोदाम सील

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ में 21000 बोरी डीएपी का गबन करने के मामले में इंडार नायक संतोष कुमार को निलंबित कर दिया गया है। उसकी कस्टडी के तीनों गोदाम को सील कर दिया गया है।

एफसीआई के गोदाम के प्रभारी भंडार नायक संतोष कुमार ने जिले की 74साधन सहकारी समितियों पर 21000 बोरी डीएपी भेजने की रिपोर्ट ऑनलाइन की थी। समितियों पर डीएसपी ने पहुंचने के बाद मामले का खुलासा हुआ। किसी के प्रबंधक ने इस मामले में भंडार नायक संतोष कुमार के खिलाफ एफ आई आर दर्ज कराई। मामले की रिपोर्ट मिलने पर पीसीएस के प्रबंध निदेशक मासूम अली सरवर ने भंडार नाइट संतोष कुमार को निलंबित कर दिया है। इसकी जांच अपर महाप्रबंधक नरेंद्र सिंह को दी गई है।

खेल में प्रोत्साहन मिलने पर अनवर हॉकी सोसायटी के सदस्य मिले प्राचार्य से

एमडीपीजी कालेज के प्राचार्य मनोज मिश्रा का हॉकी सोसायटी ने पुष्पगुच्छ व अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर किया सम्मान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मंगलवार को अनवर हॉकी सोसाइटी प्रतापगढ़ के सभी सदस्यो ने एम डी पी जी कॉलेज के प्राचार्य मनोज मिश्रा का उनके द्वारा सोसाइटी के प्रति किये गए अमूल्य योगदान के लिए उनका स्वागत सम्मान एवम अभिनंदन किया गया। जिसमें प्राचार्य महोदय को पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह के साथ हॉकी की एक प्रतिकृति भेंट किया गया। इस औपचारिक मुलाकात में खेल से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। एवम कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए सभी खेलों की टीम के लिए प्रस्ताव भी रखा गया जो कि अनवर हॉकी सोसाइटी एवम एम डी पी जी के सयुंक्त सहयोग से किया जाएगा। इस अवसर पर अनवर हॉकी सोसाइटी के अध्यक्ष अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी अनवर खान ने प्राचार्य महोदय से वार्ता करके प्रतापगढ़ में सभी खेलो के विकास के लिए साथ मिलकर प्रयास करने की बात भी कही गयी। इस अवसर पर सोसाइटी के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

विधानसभा चुनाव से पूर्व भाजपा कार्यालय बनकर तैयार, 23 को होगा उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विधानसभा चुनाव से पूर्व भारतीय जनता पार्टी के नए कार्यालय के उद्घाटन की तैयारी पूर्ण हो चुकी है। 23 नवंबर को विधिवत उद्घाटन हो जाएगा। मंगलवार को जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्र ने भाजपा कार्यालय के नवीन भवन पर पहुंचकर जायजा लेते हुए कहा कि शीघ्र ही बचे कार्य पूर्ण कर लिए जाएं। इस दौरान उनकी कमेटी के उपाध्यक्ष राजेश सिंह, महामंत्री आशीष श्रीवास्तव एवं रामजी मिश्रा भी कार्य प्रगति की जानकारी ली। फिलहाल भवन का अधिकांश कार्य पूर्ण हो चुका है।

कुछ अन्य कार्य बाकी हैं। जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्र ने कार्य कर रहे ठेकेदार को सख्त निर्देश देते हुए काम को गुणवत्तापूर्ण तरीके से जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। बता दें कि अभी तक नगर पालिका के भवन बाबागंज में भाजपा कार्यालय है। अब सिटी रोड पर फुलवारी के पास नव निर्मित भवन बन चुका है। वैदिक विधि विधान से कार्यालय का उद्घाटन 23 नवंबर को कर दिया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक इस कार्यालय के साथ अन्य कार्यालय भी सात जनपदों के भाजपा कार्यालय के उद्घाटन इसी दिन किए जाएंगे।

संदिग्ध परिस्थिति में मिला युवक का शव

प्रतापगढ़। मान्धाता मोड़ के समीप हाइवे पर युवक का शव मिलने से सनसनी ल गई। भोर से ही हाइवे पर पड़ी रही लाश देख लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस पहुंची तो मृतक की तलाशी ली। कोई कागजात न मिलने पर स्थानीय लोगों से उसकी शिनाख्त कराने की कोशिश की। हालांकि दोपहर तक युवक की पहचान नहीं हो सकी। मृतक की उम्र 24 वर्ष बताई जा रही है। उसके बदन पर स्वेटर व लोवर है। पुलिस का कहना है कि सड़क दुर्घटना में युवक की मौत हुई है। स्थानीय लोगों की मानें तो युवक की हत्या कर शव फेंक गया है।

163 दिव्यांग बच्चों को उपकरण दिए

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। लक्ष्मणपुर ब्लाक के पूर्व माध्यमिक विद्यालय अजगरा के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में 163 दिव्यांग बच्चों को उपकरण वितरित किए गए। कार्यक्रम एलिम्को कानपुर एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के निर्देशन में सफल हुआ' जिला समन्वयक ने बताया कि उपकरण में ट्राईसाइकिल 23, व्हीलचेयर 32, वैशाखी 12, कैलिपर 27, सीपीचेयर 9, एमएसआईईडी किट 49, कान की मशीन 62, ब्रेल किट 4, ब्रेल स्लेट 2, रोलेटर 3 सहित कुल 223 उपकरण का वितरण किए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्लॉक प्रमुख प्रेमलता सिंह ने की।

इस मौके पर निर्भय सिंह , सुधीर मिश्रा, रवींद्र कुमार पटवा, मनीष पाठक, हिमांशु मिश्रा ,रामसूरत यादव, सुरेश यादव, अशोक यादव, श्रवण कुमार, संतलाल, दीपशिखा सिंह, सुप्रिया सिंह, रीता मिश्रा, अर्चना शुक्ला, गिरीश त्रिपाठी, अवधेश, विनोद, सतीश पाठक, संजीव द्विवेदी, रेखा मिश्रा ,रवींद्र द्विवेदी ,गौतम प्रसाद, आशीष विश्वकर्मा, कमला पाल, कीर्ति कुशवाहा, रिंकी श्रीवास्तव रहे।

बसपा के विहार ब्लाक अध्यक्ष व पूर्व बसपा नेता रंजीत हरिजन लाला समर्थकों सहित भाजपा में हुए शामिल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मंगलवार को फूलचंद्र प्रेमी कोटेदार ब्लॉक अध्यक्ष विहार बसपा और पूर्व बसपा नेता रंजीत हरिजन लाला ने अपने समर्थकों सहित भाजपा में शामिल हुए। मंडल अध्यक्ष डेरवा उदय मिश्र पिंकू ,पारसनाथ ओझा ,धीरज पांडेय,मोनू शुक्ल आदि की उपस्थिति में जिला अध्यक्ष भाजपा के आवास पर जाकर समर्थकों सहित भाजपा की सदस्यता ली। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मोदी जी योगी जी के सरकार द्वारा किये गए जन कल्याणकारी एवं गरीब कल्याण योजना एवं भाजपा की अंत्योदय की नीतियों का समर्थन में वे सभी भाजपा में शामिल हुए हैं।

बाइक सवार बदमाशों ने स्वास्थ्य कर्मी को लूटा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। ड्यूटी के बाद जिला मुख्यालय से घर जा रहे स्वास्थ्य कर्मी को बाइक सवार तीन बदमाशों ने ओवरटेक कर लूट लिया। कुछ दूर पर उसका मोबाइल फेंका मिला। पीड़ित ने घटना की तहरीर थाने में दी है। कुंडा के किलहनापुर का निवासी संजय जिला अस्पताल में कर्मचारी है। वह सोमवार रात बाइक से घर जा रहा था। जेठवारा इलाके के नारायणपुर स्थित नवोदय विद्यालय के पास पीछे से आए बाइक सवार तीन बदमाशों ने ओवरटेक कर उसे रोक लिया। बदमाश तमंचा सटाकर उसका बैग और मोबाइल लूटकर भाग निकले। कुछ दूर पर मोबाइल और बैग भी फेंका मिला। बदमाश बैग में रखे 1800 रुपए निकाल ले गए। प्रभारी एसओ अजय पाल सिंह ने बताया कि घटना की जानकारी मिली है। बदमाशों की खोजबीन की जा रही है।

संदिग्ध परिस्थितियों में हाइवे किनारे मिला अज्ञात युवक का शव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मंगलवार को अयोध्या-प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग हाइवे किनारे एक अज्ञात युवक का शव मिला जिसे देखने लोगों की भीड़ जमा थी। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस शव की शिनाख्त में जुटी है। मृतक के सिर पर चोट के निशान भी देखे गये फिलहाल पुलिस अज्ञात का पता लगाने में जुटी है।

नगर पालिका ने कराया विभिन्न एण्टी लार्वा का नालियों में छिड़काव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका बेल्हा प्रतापगढ़ द्वारा मंगलवार को संचारी रोग नियंत्रण के रोकथाम को मंगलवार को नगर के मकन्दूगंज बेगमवार्ड पल्अन बाजार व अस्पताल वार्ड में एण्टी लार्वा का नालियों में छिड़काव नगर पालिका के कर्मचारियों द्वारा कराया गया। नव विस्तारित क्षेत्र सियाराम कालोनी में वर्षों के इकट्ठा कूड़ा जो विभिन्न प्लाटों पर पड़ा हुआ था उसको नगर पालिका अपने संसाधनों यथा जेसीबी डम्फर ट्रैक्टर मैजिक व नाला गैंग के सफाई कर्मचारियों को लगाकर सफाई कार्य किया गया। प्रत्येक दिन पालिका सीमान्तर्गत विभिन्न वार्डों में नियमित रोस्टर के अनुसार फागिंग का कार्य किया जा जा रहा है। शासन के निर्देशानुरुप 18 अक्टूबर 2021 से 17 नवम्बर 2021 तक संचार रोग नियंत्रण अभियान को पूर्ण रूप से सफल बनाने में अध्यक्ष ने व अधिषाशी अधिकारी नगर पालिका परिषद बेल्हा प्रतापगढ़ के निर्देश के क्रम में आवश्यक कार्य नियमित रूप से किया जा रहा है। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई एवं खाद्य निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि शासन एवं अध्यक्ष व अधिशाषी अधिकारी के निर्देशों का शत प्रतिशत पालन कराया जा रहा है। जिससे नगर क्षेत्रान्तर्गत सर्व साधारण को संचारी रोग से सुरक्षित किया जा सके।

खबर संक्षेप

मण्डलायुक्त ने निमार्णाधीन भवन का किया निरीक्षण

कौशाम्बी। मण्डलायुक्त संजय गोयल ने निमार्णाधीन कस्तूरबा गांधी छात्रावास, मंझनपुर एवं थाना मंझनपुर में निमार्णाधीन प्रशासनिक भवन का निरीक्षण किया। मण्डलायुक्त ने निरीक्षण के दौरान कस्तूरबा गांधी छात्रावास परियोजना की विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण कराया जाय उन्होंने जिलाधिकारी को छात्रावास की गुणवत्ता एवं सुरक्षा की दृष्टि से टेक्निकल टीम से जांच कराने के निर्देश दिये। पुलिस अधीक्षक ने निमार्णाधीन प्रशासनिक भवन के निरीक्षण के दौरान मण्डलायुक्त को पानी की निकासी की बेहतर व्यवस्था न होने की समस्या से अवगत कराया, जिस पर मण्डलायुक्त ने कार्यदायी संस्था को पानी की निकासी हेतु विस्तृत कार्ययोजना बनाकर कार्य करने के निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी सुजीत कुमार, पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा एवं मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

पूर्व प्रधान को संदिग्ध परिस्थितियों में लगी गोली मौत

परिजन और पुलिस का मानना है कि बीमारी से त्रस्त हट्टे-कट्टे पूर्व प्रधान ने किया आत्महत्या

मौके की परिस्थिति जन्य साक्ष्य आत्महत्या की घटना से कर रहे हैं बार-बार इनकार

अखंड भारत संदेश

पूर्व प्रधान की मौत के बाद घटनास्थल पर लगी ग्रामीणों की भीड

कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के गनपा गांव में मंगलवार की भोर में घर के भीतर सो रहे पूर्व प्रधान को संदिग्ध परिस्थितियों में गोली लगी है जिससे उनका भेजा उड़ गया है घटनास्थल पर ढेर खून बिखर गया है और मौके पर उनकी मौत हो गई है परिजनों और पुलिस का मानना है कि पूर्व प्रधान के पास लाइसेंसी बंदूक थी और उन्होंने अपनी बंदूक से खुद गोली मारकर आत्महत्या कर लिया है लेकिन घटनास्थल पर मिले परिस्थिति जन्य साक्ष्य पुलिस और परिजनों की बातों को झूठा करार रहे हैं घटनास्थल के बजाय दूसरे कमरे में उनकी बंदूक मिली है यह बिस्तर वह सो रहे थे लेकिन बिस्तर में खून के निशान नहीं मिले हैं मौके पर पहुंची पुलिस ने पूर्व प्रधान की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है पुलिस द्वारा बताया जा रहा आत्महत्या में पुलिस द्वारा बताए जा रहे तमाम जवाब पुलिस को कटघरे में खड़ा कर रहा है

घटनाक्रम के मुताबिक सैनी कोतवाली क्षेत्र के गनपा गांव निवासी पूर्व प्रधान गंगादीन पासी उम्र 65 वर्ष पुत्र टिर्रा घर के भीतर सो रहे थे मंगलवार की भोर उनके गले को चीरते हुए गोली लगी और खोपड़ी फाड़ कर भेजा निकल गया सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मृतक के चार बेटियां हैं तीन बेटियों की शादी हो गई है चौथी बेटी पुलिस में भर्ती हुई है जो इस समय ट्रेनिंग कर रही है एक बेटी और पत्नी घर पर मौजूद थी पूर्व प्रधान की मौत के बाद जब मौके पर ग्रामीण पहुंचे तो बंदूक कमरे के गेट के बाहर रक्खी हुई थी यदि थाना पुलिस की बात को सत्य मान लिया जाए तो प्रधान की मौत के बाद बंदूक मौके से हटाने की किसने जुर्रत की है चारपाई पर बिस्तर लपेट कर रक्खा हुआ था बिस्तर में खून नहीं लगा था मृतक के कमरे का दरवाजा खुला हुआ था पूर्व प्रधान की लाश खटिया के नीचे जमीन पर पड़ी हुई थी जमीन पर ढेर खून पड़ा था मृतक की मौत के पीछे संपत्ति विवाद बताया जाता है ग्राम प्रधान की मौत को आत्महत्या बताने वाले परिजन और पुलिस मौके पर मौजूद तमाम साक्ष्य के सवाल का जवाब नहीं दे सके हैं घटनास्थल पर जमीन से दीवाल के 3 फीट ऊपर खून लगा है जिससे लगता है कि जिस समय प्रधान को गोली लगी है वह बैठे हुए थे अब सवाल उठता है कि ग्राम प्रधान ने खड़े होकर बंदूक से खुद गोली मार ली है तो खून और उनका भेजा उड़ गया है तो छत के ऊपर तक उनके भेजें के टुकड़े और खून के धब्बे होने चाहिए लेकिन मौके पर छत की उल्टी सतह पर ना तो खून के धब्बे हैं और ना छत के उल्टे तरफ भेजे के टुकड़े लगे दिखाई पड़ रहे हैं यदि ग्राम प्रधान ने बैठ कर आत्महत्या किया है तो लाइसेंसी बंदूक की ऊंचाई लगभग साढ़े चार फीट होती है कोई व्यक्ति जमीन में बैठकर गले में गोली कैसे मार सकता है और यदि ग्राम प्रधान ने लेट कर आत्महत्या किया था तो जमीन के पास नीचे हिस्से में दीवाल में खून और भेजा का निशान होना चाहिए लेकिन दीवाल के नीचे हिस्से में खून मौजूद नहीं है घटनास्थल पर मौजूद सामान दरवाजे बंदूक बिस्तर दीवाल आदि के फिंगरप्रिंट एकत्रित करने की जहमत पुलिस ने नहीं उठाई है जिससे थाना पुलिस की भी मंशा साफ नहीं दिखाई पड़ रही है हालांकि थाना पुलिस बड़े दमदारी से पूर्व प्रधान के आत्महत्या की बात को कह रही है अब सवाल उठता है कि जब दमदारी से पुलिस पूर्व प्रधान के आत्महत्या की बात कह रही है पूर्व प्रधान की आत्महत्या के समय थाना पुलिस क्या चश्मदीद गवाह थी पुलिस किस दम पर मौके के तमाम सबूत को नजरअंदाज कर आत्महत्या की बात दमदारी से कह रही है आधारहीन बात कर थाना पुलिस पूर्व प्रधान की मौत को आत्महत्या साबित करने पर लगी थाना पुलिस के कारनामे उसे कटघरे में खड़ा कर रहे हैं कहीं ऐसा तो नहीं कि ग्राम प्रधान की हत्या करने के बाद हत्यारे थाना पुलिस के संपर्क में हो यह बड़ा सवाल उत्पन्न हो रहा है।

डीएम की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने सम्राट उदयन सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक की। जिलाधिकारी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं उप स्वास्थ्य केन्द्रों को प्रसव केन्द्र बनाये जाने की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि जिन केन्द्रों पर आधारभूत सुविधायें उपलब्ध हो गयी हैं, उन्हें प्रसव केन्द्र के रूप में संचालित कर दिया जाय। उन्होंने प्रसव केन्द्र बनाये जाने के कार्य में लापरवाही बरतने पर एमओआईसी सिराथू से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिये। उन्होंने गोल्डेन कार्ड बनाये जाने की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि प्रति माह प्रत्येक आशा से पॉच-पॉच गोल्डेन कार्ड बनवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने ठीक प्रकार से कार्य न करने पर आयुष्मान मित्रों को चेतावनी जारी करने के निर्देश दिये। डीएम ने आशाओं के भुगतान की समीक्षा करते हुए भुगतान लंबित पाये जाने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि समयान्तर्गत भुगतान किया जाना सुनिश्चित करें। नियमित टीकाकरण की समीक्षा के दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सिराथू एवं चायल में टीकाकरण कम पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

सड़क हादसे में चाचा भतीजे की मौत

अखंड भारत संदेश

पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के पचम्भा मोड़ के पास हुआ दर्दनाक हादसा

चाचा भतीजे की मौत के बाद रोते बिलखते परिजन

कौशांबी। पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के पचम्भा मोड़ के पास बाइक सवार चाचा भतीजे की सड़क हादसे में दर्दनकबमौत हो गई है हादसे की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर सैकड़ों ग्रामीणों की भीड़ जुट गई है मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई है मौके पर पहुंची पुलिस ने चाचा भतीजे की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटनाक्रम के मुताबिक पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के अलवारा गांव निवासी धर्मराज यादव उम्र 55 वर्ष अपने भतीजे छोटू यादव उम्र 22 वर्ष को साथ लेकर मंगलवार दिन में 3:00 बजे बाइक से पश्चिम शरीरा जा रहे थे जैसे ही बाइक सवार चाचा भतीजे पचम्भा मोड़ के पास पहुंचे कि आगे जा रही पिकअप ने बीच सड़क पर अचानक तेज ब्रेक लगा दिया जिससे बाइक सवार चाचा भतीजे दोनों पिकअप वाहन के पीछे घुस गए हादसा इतना तेज था कि घटनास्थल पर चाचा भतीजे की दर्दनाक मौत हो गई है वीभत्स घटना देखकर आसपास सैकड़ों ग्रामीणों की मौके पर भीड़ लग गई है मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई है मौके पर पहुंची पुलिस ने चाचा भतीजे की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है घटनास्थल पर कोहराम मचा हुआ है।

आतिशबाजी से झुलसा बच्चा

कौशांबी पिपरी थाना क्षेत्र के रहने वाले दरियापुर निवासी आभास उम्र लगभग 10 वर्ष अपने परिजनों के साथ चरवा थाना क्षेत्र के अरई गांव में अपनी रिश्तेदारी में आया था जहां मंगलवार की सुबह गांव का छोटा लड़की मयरा और उसका भाई विशाल आतिशबाजी जला रहे थे क्योंकि एक दिन पहले सोमवार को छोटी दीवाली थी दीवाली की खुशी में आतिशबाजी जलाते समय आभास के पीछे पीठ में आतिशबाजी की चिंगारी चली गयी जिससे आभास सुलझ गया है परिजनों ने झुलसे आभास को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सुपरवाइजरों के साथ डीएम ने की समीक्षा बैठक

अखंड भारत संदेश

लापरवाही बरतने वाले बीएलओ के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही का जिलाधिकारी ने दिया निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में अर्हता तिथि 01 जनवरी 2022 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के सम्बन्ध में समस्त ईआरओ एईआरओ सुपरवाइजरों के साथ समीक्षा बैठक की बैठक में जिलाधिकारी ने सभी सुपरवाइजरों से कहा कि अपने अपने बीएलओ को निर्देशित करें कि वे एक रजिस्टर बनायें, जिसमें बूथ की अनुमानित जनसंख्या, ईपीरेशियो एवं जेण्डर रेशियो आदि सूचनायें स्पष्ट रूप से अंकित की जाय उन्होंने ईपी रेशियो एवं जेण्डर रेशियो को मानक के अनुसार ठीक करने हेतु आवश्यक कार्यवाही किये जाने व फार्म को पूर्णरूप से भरकर ही तहसील में जमा करने तथा बीएलओ को घर-घर जाकर सर्वे करने के निर्देश दिये, ताकि कोई भी पात्र मतदाता छूटने न पाये। बैठक में बताया गया कि विधानसभा क्षेत्र सिराथू के बूथ संख्या-210 में तैनात बीएलओ श्रीमती रचना सहायक अध्यापिका द्वारा बीएलओ का कार्य करने से मना किया जा रहा है, जिस पर जिलाधिकारी ने खण्ड शिक्षाधिकारी को एफआईआर दर्ज कराकर निलंबित करने के निर्देश दिये। बैठक में बताया गया कि चायल विधानसभा क्षेत्र के तीन बीएलओ द्वारा ड्यूटी नहीं की जा रही है, जिस पर जिलाधिकारी ने निलंबित करने की कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये जिलाधिकारी ने कहा कि जो भी बीएलओ ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर रहे हैं/कार्य में लापरवाही बरत रहे हैं, उन सभी के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जाय तथा जो बीएलओ ड्यूटी नहीं कर रहे हैं, उन्हें निलंबित करने की कार्यवाही भी की जाय उन्होंने सुपरवाइजरों एवं ईआरओ को बीएलओ की प्रतिदिन समीक्षा करने के निर्देश दिये।

न्यूज झरोखा

छात्र-छात्राओं ने मतदाता जागरूकता रैली एवं रंगोली के माध्यम से किया जागरूक

कौशाम्बी। जनपद के राजकीय हाईस्कूल, कसिया के छात्र-छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता रैली निकाली गयी एवं रंगोली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसी प्रकार आदर्श ग्रामसभा इंटर कालेज, चरवा के छात्र-छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता रैली निकालकर आमजन को निर्वाचक नामावली में अपना नाम दर्ज कराने एवं आगामी विधानसभा चुनाव में मतदान करने के लिए जागरूक किया गया तथा दिलीप सिंह इंटर कालेज, बाकरगंज गोराजू के छात्र-छात्राओं ने रंगोली के माध्यम से आमजन को मतदान के प्रति जागरूक किया।

सरकारी भूमि पर कब्जा कर बनाया घर

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के ग्राम सभा रसूलपुर सोनी की सरकारी भूमि पर गांव के गरीब दास इंदल उदल रामबली आदि ने लोगो ने अवैध तरीके से कब्जा कर पक्का घर का निर्माण कर लिया है सरकारी भूमि पर अवैध तरीके से निर्माण किए जाने के मामले में राजस्व निरीक्षक की भूमिका सवालों के घेरे में है बताया जाता है कि ग्राम प्रधान ने सरकारी भूमि पर कब्जा कराने के ठेके लिए थे जिसके बाद सरकारी भूमि पर कब्जा हो गया और राजस्व प्रशासन तमाशबीन बना रह गया है जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देते हुए गांव की महिला ने सरकारी भूमि पर कब्जे के मामले की जांच कराते हुए निर्माण करने वालों पर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की मांग की है।

स्वास्थ्य कर्मियों को एजेंसी से नहीं मिला वेतन

कौशाम्बी। जिला अस्पताल में एक एजेंसी के जरिए काम करने वाले स्वास्थ्य कर्मचारियों को 8 महीने से वेतन नहीं मिल रहा है जिससे कर्मचारियों के सामने भुखमरी की स्थिति पैदा है वेतन मांगने पर एजेंसी मालिकों का कहना है कि उन्हें सरकार से वेतन नहीं मिल रहा है एजेंसी से वेतन न मिलने से पीड़ित स्वास्थ्य कर्मियों ने जिलाधिकारी के पास पहुंचकर वेतन दिलाए जाने की मांग की है जिला अधिकारी को शिकायती पत्र देने वालों में सुनीता देवी आनंद शुक्ला शिवम त्रिपाठी प्रवीण कुमार दिनेश कुमार राघवेंद्र कुमार नीरज कुमार सहित तमाम लोग शामिल रहे इसके पूर्व एजेंसी के कारनामे की स्वास्थ्य कर्मियों ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को शिकायती पत्र देकर एजेंसी से वेतन दिलाने की मांग की है बताते चलें कि इसके पहले भी एजेंसी चलाने वालों ने स्वास्थ्य कर्मियों का वेतन डकार लिया था शिकायत के बाद भी स्वास्थ्य कर्मियों को वेतन नहीं मिल सका है एजेंसी संचालक पर यदि जिलाधिकारी ने मुकदमा दर्ज नहीं कराया तो अस्पताल में ड्यूटी देने वाले स्वास्थ्य कर्मचारियों को वेतन मिलना मुश्किल होगा।

किसानों को सीडीओ ने झण्डी दिखाकर किया रवाना

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी ने कृषक/एफपीओ/एसएचजी सदस्यों के प्रशिक्षण एवं भ्रमण यात्रा बस को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, नाबार्ड द्वारा प्रायोजित कैपेसिटी बिल्डिंग फॉर एडॉप्शन ऑफ टेक्नोलॉजी योजना के अन्तर्गत जनपद के 04 ब्लॉकों के 14 गांव से 25 कृषक/एफपीओ/एसएचजी सदस्यां को एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, नवसारी-गुजरात में केला अपशिष्ट प्रबन्धन के बारे में तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस प्रशिक्षण एवं यात्रा कार्यक्रम का आयोजन सद्भावना सेवा एवं शिक्षा संस्थान द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम का नेतृत्व संस्था के सचिव वस्मी रकवी एवं डॉक्टर एस0एम0 एचजैदी, सुनीता तिवारी, जनार्दन प्रसाद, शकील अब्बास एवं अन्य लोगों द्वारा किया जायेगा। इस अवसर पर जिला सहायक महाप्रबन्धक नाबार्ड श्री अनिल कुमार शर्मा, एल0डी0एम0 बैंक ऑफ बड़ौदा सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

तहसील के पास तालाब में मिली लाश

कौशांबी। मंझनपुर तहसील के बगल में एक तालाब मे मोहल्ले वाले को एक लाश दिखाई दी। लाश देखने के बाद लोगों में दहशत का माहौल है। लोगों ने तालाब में लाश मिलने की सूचना पुलिस को दिया। सुचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को निकलवाने के लिए सफाई कर्मचारी को बुलाया उसके बाद लाश को निकाल कर कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

आज आएंगी राज्य महिला आयोग सदस्य

कौशाम्बी। सदस्या उ0प्र0 राज्य महिला आयोग सुश्री ऊषारानी दिनांक 17 नवम्बर 2021 को लोक निर्माण विभाग गेस्ट हाउस, मंझनपुर में महिला जनसुनवाई एवं महिला उत्पीड़न की घटनाओं की समीक्षा करेंगी।

यमुना नदी में जल्द बनेगा एक और पुल : चायल विधायक

यमुना नदी में नए पुल बन जाने से नंदा का पुरवा और उसके आसपास के क्षेत्र में बढ़ेंगे रोजगार के अवसर

अखंड भारत संदेश

अधिकारियों के साथ यमुना नदी के पुल के निर्माण का निरीक्षण करने पहुंचे चायल विधायक संजय गुप्ता

कौशांबी। चायल विधायक के अथक प्रयास से यमुना नदी में जल्द ही एक और पुल बनने जा रहा है इस पुल के बन जाने से नंदा के पुरवा के लोगों का जुड़ाव प्रतापपुर से हो जाने से नंदा का पुरवा और उसके आसपास के क्षेत्र का विकास तेजी से होगा इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और बेरोजगारी दूर होगी लोगों को काम धंधे मिलेंगे यमुना नदी में चायल विधायक संजय गुप्ता के प्रयास से पुल बनाए जाने की क्षेत्र के लोगों ने भरपूर प्रशंसा की है।

यमुना नदी में पुल बनाए जाने को लेकर चायल विधायक संजय गुप्ता सेतु निगम के महाप्रबंधक आरके सिंह और उनकी टीम के साथ मौके पर निरीक्षण करने पहुंचे हैं इस मौके पर विधायक ने सेतु निगम के महाप्रबंधक से कहा कि एलाइनमेंट कर जल्द से जल्द डीपीआर तैयार कर पुल का निर्माण शुरू किया जाए जिससे इस पार से लेकर उस पार तक के कई गांव के लोगो का रोजगार बढ़ेगा एवं नए रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे उन्होंने कहा कि यमुना नदी के किनारे बसे गांव में रोजगार ना होने से और प्रत्येक वर्ष पीपे का पुल टूट जाने से प्रयागराज और कौशांबी का संपर्क टूट जाता है जिससे क्षेत्र में गरीबी और भुखमरी की स्थिति बनी है उन्होंने कहा कि नया पुल बन जाने में आसानी होगी विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने अपनी विधानसभा के गंगा के पुरवा से प्रतापपुर जोड़ने वाली पुल का एलाइनमेंट के लिए सेतु निगम की महाप्रबंधक आरके सिंह वह उनकी पूरी टीम के साथ निरीक्षण किया वाह नंदा के पुरवा से जमुना नदी के उस पार प्रतापपुर प्रयागराज से जुड़ने वाली पुल का अपनी पूरी टीम के साथ एलाइनमेंट किया विधायक संजय कुमार गुप्ता ने महाप्रबंधक को निर्देशित करते हुए कहा कि आवागमन हेतु अति शीघ्र डीपीआर तैयार कर कार्य शुरू किया जाय जैसे इस पार से लेकर उस पार तक कई गांव का रोजगार बढ़ेगा नए नए रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे क्योंकि यमुना के तट के किनारे बसे गांव का कोई रोजगार नहीं होता प्रत्येक वर्ष बाढ़ की वजह से पीपे का पुल टूट जाता है आवागमन बाधित हो जाता है और भुखमरी के कगार पर आ जाते हैं यहां तक की प्रयागराज और कौशांबी का आवागमन का संपर्क टूट जाता है। विधायक श्री गुप्ता ने कहा कि यह बहुत बड़ी परियोजना है लगभग अरबों रुपए से इस परियोजना से पुल बनाया जाएगा तत्पश्चात विधायक ने अधिकारियों के साथ प्रतापपुर तक स्टीमर से निरीक्षण किया। इस मौके निरीक्षण के दौरान मुख्य रूप से मंडल अध्यक्ष सराय अकिल राम बहादुर जयसवाल, लालचंद निषाद, पिछड़ा मोर्चा जिला महामंत्री सूरज यादव, भारत भूषण द्विवेदी, मूरतगंज मंडल अध्यक्ष राममिलन चौधरी, छोटे लाल पाल हीरालाल निषाद, राजेंद्र पाल सहित तमाम क्षेत्रीय ग्रामीण उपस्थित रहे।

मण्डलायुक्त ने अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

अखंड भारत संदेश

अधिकारियों के साथ बैठक करते कमिश्नर प्रयागराज

कौशाम्बी। मण्डलायुक्त प्रयागराज संजय गोयल ने कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रो की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के सम्बन्ध में सम्बंधित अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की बैठक में मण्डलायुक्त ने अब तक प्राप्त फार्म-06 एवं 07, ईपी एवं जेण्डर रेशियो आदि की विस्तृत समीक्षा करते हुए ईआरओ उपजिलाधिकारियों को ईपीरेशियो एवं जेण्डर रेशियो को मानक के अनुसार ठीक कराने के निर्देश दिये। उन्होने एईआरओ से उनके कार्यो की जानकारी प्राप्त करते हुए निर्देश दिये कि सभी एईआरओ अपने कार्यो की भली-भांति जानकारी रखें एवं बीएलओ द्वारा किये जा रहे कार्यां की प्रतिदिन समीक्षा करें। उन्होंने सभी एईआरओ को आगामी तीन दिन में सभी मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि सभी ईआरओ/उपजिलाधिकारियों को गरूण एप पर सभी बूथों की आधारभूत सुविधाओं से संबंधित फोटो दिनांक 17 नवम्बर तक अपलोड कराना सुनिश्चित करें। इसके साथ ही उन्होने यह भी निर्देश दिये कि जो भी फार्म प्राप्त हुए हैं उन्हें 48 घण्टे के अन्दर ऑनलाइन फीड कर दिया जाय मण्डलायुक्त ने कहा कि 01 जनवरी 2022 तक 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर रहे युवाओं का सर्वे कराकर नाम मतदाता सूची में दर्ज कराया जाय, कोई भी व्यक्ति छूटने न पाये। उन्होने दूरभाष नम्बर-1950 पर प्राप्त हो रही शिकायतों को रजिस्टर में अंकित कराने के साथ ही दूरभाष नम्बर का प्रचार-प्रसार कराने के भी निर्देश दिये। उन्होने सुपरवाइजरों एवं बीएलओ को और अधिक सक्रिय करने के निर्देश दिये। तत्पश्चात मण्डलायुक्त ने सम्राट उदयन सभागार में विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रां की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के सम्बन्ध में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। बैठक में मण्डलायुक्त ने राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से उनकी समस्याओं एवं सम्वेदनशील क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करते हुए उनसे अपने बी0एल0ओ0 को सक्रिय कर पुनरीक्षण कार्य में सहयोग करने की अपेक्षा की। बैठक में उपजिलाधिकारी मंझनपुर ने विकास खण्ड कौशाम्बी एवं सरसवां में लोगों को जागरूक कर सभी पात्र व्यक्तियों का नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने हेतु राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से सहयोग करने की अपेक्षा की बैठक में जिलाधिकारी सुजीत कुमार, पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा एवं मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सर्वे कराकर जनवरी तक 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर रहे युवाओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने के कमिश्नर ने दिए निर्देश

मण्डलायुक्त ने की विकास कार्यो की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

कोविड-19 टीकाकरण में कम प्रगति पाये जाने पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने के दिए निर्देश

कौशाम्बी। मण्डलायुक्त प्रयागराज संजय गोयल ने सम्राट उदयन सभागार में विकास कार्यो की समीक्षा के दौरान कोविड-19 टीकाकरण की प्रगति में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कड़ा, नेवादा, कनैली एवं चायल में अन्य सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की अपेक्षा प्रगति कम पाये जाने पर संबंधित एमओआईसी से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश देते हुए कहा कि तहसीलदार, कानून-गो, लेखपाल एवं आशा आदि के माध्यम से आमजन को जागरूक कर कोविड-19 टीकाकरण में प्रगति लाना सुनिश्चित करें। उन्होंने अब तक हुए कोविड-19 टीकाकरण का ग्रामसभावार विश्लेषण करते हुए सबसे कम टीकाकरण वाले ग्रामसभा को चिन्हित कर टीकाकरण में प्रगति लाने के भी निर्देश दिये मण्डलायुक्त ने आयुष्मान भारत योजना के तहत बनाये जा रहे गोल्डेन कार्ड में प्रगति लाने हेतु आशा एवं ए0एन0एम0 से प्रत्येक माह कम से कम 05 गोल्डेन कार्ड बनवाने के निर्देश देते हुए कहा कि कोटेदारों का सहयोग लेकर गोल्डेन कार्ड बनाने में प्रगति लायी जाय। पेयजल परियोजनाओं की समीक्षा के दौरान अधिशासी अभियंता जल निगम ने बताया कि ठेकेदार द्वारा कार्य नहीं किया जा रहा है, जिस पर मण्डलायुक्त ने ठेकेदार को ब्लैकलिस्टेड आदि कार्यवाही करने के निर्देश दिये तथा अधिशासी अभियंता द्वारा बताया गया कि अफजलपुर-सातो पेयजल परियोजना में 250 लाभार्थियों को कनेक्शन दिया गया है, जिस पर मण्डलायुक्त ने सभी लाभार्थियों का सत्यापन कराने के निर्देश दिये। उन्होंने जनपद में डी0ए0पी0 की उपलब्धता की समीक्षा के दौरान ए0आर0-को-आपरेटिव को शत-प्रतिशत डी0ए0पी0 का वितरण ई-पॉस मशीन से कराने के निर्देश दिये। उन्होंने जिला कृषि अधिकारी को और अधिक सक्रियता से कार्य करने के निर्देश देते हुए कहा कि प्राइवेट विक्रेताओं के दुकानां पर निरन्तर प्रवर्तन की कार्यवाही की जाय एवं किसी भी प्रकार की लापरवाही पाये जाने पर कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित की जाय। धान क्रय की समीक्षा के दौरान डिप्टी आर0एम0ओ0 ने बताया कि धान क्रय हेतु 37 क्रय केन्द्र खोले गये है, जिसमें अभी 22 केन्द्रों पर खरीद हो रही तथा शेष क्रय केन्द्रों पर आगामी 02 दिन में खरीद शुरू हो जायेगी, जिस पर मण्डलायुक्त ने कहा कि यह सुनिश्चित किया करें कि किसानों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े एवं सत्यापन लम्बित न होने पाये। शेष परियोजनाओं को निर्धारित तिथि तक पूर्ण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने निमार्णाधीन बस डिपो मंझनपुर की समीक्षा के दौरान कहा कि साइनेज आदि लगाकर बस डिपो का शीघ्र उद्घाटन करवाया जाय। उन्होंने गड्ढामुक्त अभियान, जल-जीवन मिशन, निराश्रित गोवंश एवं ई-श्रम कार्ड आदि की प्रगति की भी विस्तृत समीक्षा की बैठक में जिलाधिकारी सुजीत कुमार, पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा एवं मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

सम्मेलन का हासिल

ग्लासगो में दो हफ्ते चले जलवायु सम्मेलन की बड़ी उपलब्धि यही मानी जानी चाहिए कि सभी देश कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने पर सहमत हो गए। ग्लासगो में दो हफ्ते चले जलवायु सम्मेलन की बड़ी उपलब्धि यही मानी जानी चाहिए कि सभी देश कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने पर सहमत हो गए। जिन देशों ने कार्बन उत्सर्जन कटौती का लक्ष्य तय नहीं किया है, वे साल भर के भीतर इसे तय कर लेंगे। सम्मेलन का एक बड़ा हासिल यह भी रहा कि कोयले के इस्तेमाल को लेकर अमीर देश विकासशील देशों पर जो फंदा कसने की तैयारी में थे, उसमें वे कामयाब नहीं हो पाए। भारत के दबाव के आगे विकसित देशों को झुकना पड़ा। इसी का नतीजा रहा कि सम्मेलन के अंत में भारी जद्दोजहद के बाद कोयले का इस्तेमाल बंद करने के बजाय इसे कम करनेह्न की कोशिशों पर सहमति बनी। हालांकि यह भी तभी संभव हो पाएगा जब अमीर देश गरीब देशों को सौ अरब डालर सालाना की मदद देने का अपना पुराना वादा निभाने को लेकर गंभीर होंगे। जलवायु संकट से निपटने के लिए विकासशील और गरीब देशों ने जो लक्ष्य तय किए हैं, उन्हें हासिल कर पाने में सबसे बड़ी बाधा पैसे की आ रही है। इस मुद्दे पर अमीर देशों का अब तक का रुख कदम पीछे खींचने वाला ही रहा है। सम्मेलन के आखिरी दिन तक गंभीर मुद्दों पर सदस्य देशों का एकमत नहीं हो पाना बताता है कि धरती को बचाने की आगे की राह कितनी कठिन है। इसलिए सम्मेलन की अवधि एक दिन और बढ़ाई गई, तब जाकर कार्बन उत्सर्जन कटौती तथा कोयले के इस्तेमाल जैसे मसले पर समझौते का दस्तावेज तैयार हो पाया। इस अंतिम दस्तावेज में कहा गया है कि वैश्विक तापमान में डेढ़ डिग्री कमी लाने के लिए मिल कर काम करना होगा।

इसके लिए सबसे ज्यादा जोर कोयले के इस्तेमाल में कमी लाने पर दिया गया है। अब देखना यह होगा कि कोयले के इस्तेमाल में कमी के लिए सदस्य देश कदम क्या उठाते हैं। हालांकि दुनिया के सारे देशों के लिए कोयले के इस्तेमाल को पूरी तरह से बंद करना या जल्द ही कम करना आसान नहीं दिखता। चीन जैसे देश ने इसके लिए 2060 तक का लक्ष्य रखा है। भारत के सामने यह चुनौती और भी बड़ी है। देखा जाए तो अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश भी जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल किए बिना अपनी गाड़ी बढ़ा पाने में लाचार हैं। अभी भी ज्यादातर औद्योगिक राष्ट्र और विकासशील देश कोयले या जीवाश्म ईंधन पर ही निर्भर हैं। परमाणु या सौर ऊर्जा जैसे विकल्प सबके लिए संभव भी नहीं हैं। ऐसे में कोयले का प्रयोग बिल्कुल बंद कर देना किसी के लिए भी आसान कैसे होगा, यह बड़ा सवाल है। जलवायु सम्मेलन पिछले पच्चीस सालों से हो रहा है। लेकिन देखने में यही आ रहा है कि पर्यावरण बचाने के लिए अब तक जिस तेजी से कोशिशें होनी चाहिए थीं, वे नहीं हुईं। जलवायु संकट के लिए हर बार अमीर देश गरीब देशों पर ही ठीकरा फोड़ते रहे। अभी भी यही हो रहा है। कार्बन उत्सर्जन में कटौती के लक्ष्य, कोयले का इस्तेमाल बंद करने को लेकर विकसित देशों का दबाव, विकासशील देशों को उनके हिस्से के कार्बन उत्सर्जन की इजाजत, ईंधन सबसिडी जैसे मुद्दों पर अगर भारत हस्तक्षेप नहीं करता तो दुनिया के आधे से ज्यादा देश और गंभीर मुश्किल में पड़ जाते। धरती को बचाने की जिम्मेदारी तो सबकी है। आज जरूरत इस बात की है कि ग्लासगो सम्मेलन में बनी सहमति पर हर देश ईमानदारी से व्यावहारिक रुख अपनाए। वरना ग्लासगो में बनी सहमति का भी हाल पिछले सम्मेलनों के समझौतों की तरह ही देखने को मिलेगा।

दिल्ली में वायु प्रदूषण का घातक होता संकट, नए विकल्प तलाशना ही उपाय

प्रभुनाथ शुक्ल

दिल्ली में प्रदूषण बेहद खतरनाक स्थिति में पहुंच गया है। ठंड की दस्तक के साथ ही वायु प्रदूषण ने अपना करिश्मा दिखाना शुरू कर दिया। वायु प्रदूषण अधिक बढ़ने से लोगों की सांसे थमने लगी हैं। यह मसला साल-दर-साल का है, लेकिन दिल्ली को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए किसी ठोस नीति पर अमल नहीं हुआ। सुप्रीमकोर्ट अक्सर वायु प्रदूषण को लेकर तल्ख और गंभीर टिप्पणी करती है, लेकिन बात जहां की तहां रह जाती है। दिल्ली दुनिया के 10 प्रदूषित शहरों में सबसे अधिक प्रदूषित है। मुंबई और कोलकाता भी इसमें शुमार है। लेकिन दिल्ली जैसे हालात देश के अन्य शहरों के नहीं हैं। प्रदूषण की लड़ाई को राजनीतिक रंग दे दिया गया है। दिल्ली में यमुना की गंदगी, पराली और वायु प्रदूषण जैसे गंभीर मुद्दे भी राजनीति के शिकार हैं। जिसकी वजह से कोई ठोसनीति नहीं बन पा रहीं है। केंद्र और न ही राज्य सरकारों के पास प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कोई खाका नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है कि पराली प्रदूषण की एक वजह हो सकती है, लेकिन सिर्फ पराली जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है ऐसा नहीं है। सीजेआई ने साफ तौर पर कहा कि इसके लिए दूसरे कारण अहम हैं जिसमें पटाखे, उद्योग-धंधे, निमार्णाधीन कार्य शामिल हैं। दिल्ली में वायु प्रदूषण के हालात इतने बुरे हैं कि सरकार को सात दिन का अवकाश घोषित करना पड़ा है। हवा में एक्यूआई का स्तर 500 तक पहुंच गया है। लॉकडाउन के बाद स्कूल कॉलेज भी खुल गए हैं। इस दौरान बच्चों के लिए सबसे बड़ी मुश्किल है। सीजेआई ने तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा है कि लोग जिंदगी कैसे जिएंगे। प्रदूषण पर नियंत्रण करने के लिए तात्कालिक विकल्प खोजने की आवश्यकता है। वायु में बढ़ता प्रदूषण फेफड़ों के संक्रमण बढ़ाएगा और कैंसर जैसी घातक बीमारी का वाहक बनेगा। दिल्ली के हालात इसी तरह बने रहे तो हो स्थिति और भी भयानक होगी।

वायु प्रदूषण में पराली की सहभागिता तो 35 फीसदी तक पहुंच गई है। पराली जलाने के हर दिन कई मामले दर्ज किए जा रहे हैं। लेकिन लोगों को प्रदूषण के बजाय सरकारों को वोट बैंक की अधिक चिंता है। दिल्ली में प्रदूषण का मामला पंजाब, हरियाणा और दिल्ली सरकारों के बीच राजनीति का मुद्दा बन गया है। पंजाब में सामने चुनाव है इस हालात में सरकार किसानों पर कड़े कदम नहीं उठा सकती है। कोई भी सरकार किसानों को नाराज कर जोखिम नहीं लेना चाहती है। वायु प्रदूषण पर पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक रिपोर्ट चौंकाने वाली है। रिपोर्ट के मुताबित दिल्ली के वायु प्रदूषण में पराली का हिस्सा सिर्फ पांच फीसदी है। इसके बावजूद फिर राजधानी में कोहरा छाया हुआ है। जबकि पीएम 10 का स्तर 320 के करीब और पीएम 2.5 का स्तर 160 के ऊपर दर्ज किया गया।फिर किसानों की पराली कितनी जबावदेह है यह खुद समझ सकते हैं। दिल्ली की आबोहवा दमघोंटू हो चुकी है। सांस लेना भी मुश्किल हो चला है। कुछ साल पूर्व एक सर्वे की रिपोर्ट में बताया गया था कि प्रदूषण की वजह से 40 फीसदी लोग दिल्ली में रहना नहीं चाहते। जहरीली होती दिल्ली सेहत के लिए बड़ा खतरा बन गई है। धुएं का मेल जनमानस को निगल जाएगा। हालात यहां तक हैं कि 24 घंटे में 20 से 25 सिगरेट से जितना जहरीला धुआं निकला है उतना एक नवजात निगल रहा है। जरा सोचिए, हमने दिल्ली को किस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। दुनिया के प्रदूषित शहरों में दिल्ली-एनसीआर अव्वल है। भारी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन हो रहा है। हम पराली पर सवाल उठा रहे हैं और किसानों को सुविधाएं देने की बजाय सारा दोष किसानों पर मढ़ रहे हैं। दुनियाभर में बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण बड़ी चुनौती बन गया है। दिल्ली में तकरीबन चार साल पूर्व एक करोड़ से अधिक वाहन पंजीकृत थे। इसमें तकरीबन 32 लाख कारें। 66 लाख से अधिक मोटरसाइकिल और स्कूटर थे। दो लाख पच्चीस हजार माल वाहक और 11 लाख से अधिक कैब। जबकि माल वाहक तिपहिया 68 हजार। 35 हजार से अधिक बसें, 31 हजार ई-रिक्शा और 30 हजार मैक्सी कैब शमिल थे। एक रिपोर्ट के अनुसार कुछ साल पूर्व प्रदूषण में इनकी भागीदारी 30 फीसदी से भी अधिक है। कारों से 20 फीसदी प्रदूषण फैलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया के 20 प्रदूषित शहरों में 13 भारतीय शहरों को पहले से शामिल कर रखा है, जिसमें दिल्ली चार प्रमुख शहरों में शामिल थी।

दिल्ली में कुछ वर्ष पूर्व वाहनों से प्रतिदिन 649 टन कार्बन मोनोऑक्साइड और 290 टन हाइड्रोकार्बन निकलता था, जबकि 926 टन नाइट्रोजन और 6.16 टन से अधिक सल्फर डाईऑक्साइड की मात्रा थी। जिसमें 10 टन धूल शामिल है। इस तरह प्रतिदिन तकरीबन 1050 टन प्रदूषण फैल रहा था। आज उसकी भयावहता समझ में आ रही है। उस दौरान देश के दूसरे महानगरों की स्थिति मुंबई में 650, बेंगलुरू में 304, कोलकाता में करीब 300, अहमदाबाद में 290, पुणे में 340, चेन्नई में 227 और हैदराबाद में 200 टन से अधिक प्रदूषण की मात्रा थी। दुनियाभर में 30 करोड़ से अधिक बच्चे वायु प्रदूषण से प्रभावित हैं। 2017 में बढ़ते प्रदूषण की वजह से 12 लाख लोगों की मौत हुई थी। आज की स्थिति और भी भयावह है। प्रदूषण को हमने कभी गम्भीरता से नहीं लिया। सरकारों और संबंधित एजेंसियों का दावा है कि किसानों द्वारा पराली जलाए जाने से स्थिति गंभीर हुई है। पराली हजारों सालों से जल रही है, फिर इतना कोहराम क्यों नहीं मचा। लेकिन आज किसान और पराली पर राजनीति हो रही है। प्रदूषण को हमने कभी गम्भीरता से नहीं लिया। कभी चीन और थाईलैण्ड की स्थिति बेहद बुरी थी। लेकिन वहां की सरकारों ने प्रदूषण रोकने और उद्योग से निकले वाले कार्बन उत्सर्जन को रोकने के लिए गम्भीरता दिखाई। आधुनिक मशीनें लगाकर शुद्ध हवा का विकल्प खोजा। लेकिन भारत इस तरह का कदम उठाने में नाकाम रहा है। देश के एक पूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री कहते थे कि प्रदूषण से बचना है तो गाजर खाएं। यह हास्यास्पद है। प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सख्त फैसले लेने होंगे। तभी इसका समाधान निकलेगा। हमें नये विकल्प की तलाश करनी होगी। वाहनों में डीजल पेट्रोल की खपत कम करनी होगी। डीजल-पेट्रोल का वैकल्पिक उपाय निकालना होगा। जिसकी वजह से कार्बन उत्सर्जन कम होगा। सरकार को सीएनजी ईंधन जैसी व्यवस्था पर विचार करना चाहिए। क्योंकि सीएनजी की जहां लागत कम है दूसरी तरफ वायु को कम करने में भी इसकी अहम भूमिका है।

चन्नी जिस पैसे को निजी संपत्ति समझ कर बाँट रहे हैं वह आम जनता का धन है

अशोक मधुप

ये क्या हो रहा है मदद के लिए दिया जाने वाला धन किसी मुख्यमंत्री की निजी संपत्ति नहीं होती। राजकीय कोष होता है। प्रदेश और देश के जिम्मेदार नागरिकों द्वारा दिए गए टैक्स से संग्रह हुआ धन है, इसको इस तरह से लुटाने की अधिकार किसी को नहीं दिया जा सकता। लगता है वोट की राजनीति देश को बर्बाद करके छोड़ेगी। इसने तो अपराधी और कानून के मानने वालों में फर्क करना ही बंद कर दिया। अपराधियों और कुपात्र की मदद के नाम पर सरकारी धन के दुरुपयोग को रोकने के लिये देश की दूसरी संस्थाओं को आगे आना होगा। पंजाब की चरणजीत सिंह चन्नी की सरकार ने निर्णय लिया है कि किसान आंदोलन के दौरान 26 जनवरी को लालकिले पर हुए उपद्रव में गिरफ्तार 83 लोगों को वह दो-दो लाख रुपये की मदद करेगी। केंद्र द्वारा संसद में पारित तीनों कृषि कानून को उसने लागू न करने का भी निर्णय लिया है। पंजाब सरकार इस उपद्रव में मरने वाले दो लोगों को पहले ही पांच-पांच लाख रुपये दे चुकी है।

ये क्या हो रहा है मदद के लिए दिया जाने वाला धन किसी मुख्यमंत्री की निजी संपत्ति नहीं होती। राजकीय कोष होता है। प्रदेश और देश के जिम्मेदार नागरिकों द्वारा दिए गए टैक्स से संग्रह हुआ धन है, इसको इस तरह से लुटाने की अधिकार किसी को नहीं दिया जा सकता। मुख्यमंत्री या किसी मंत्री के निर्णय को उचित-अनुचित बताने वाली कार्य पालिका है। संबंधित अधिकारी हैं। उन्हें इसे रोकना चाहिए। क्योंकि जिम्मेदारी उनकी बनती है, किसी मंत्री या मुख्यमंत्री की नहीं। केंद्र द्वारा प्रदेश में राज्यपाल इसीलिए बैठाए जाते हैं कि वह सरकार के गलत और सही निर्णय पर विचार करें। गलत निर्णय पर रोक लगाएं। इसके ऊपर संसद और राष्ट्रपति हैं। न्यायपालिका गलत और सही निर्णय को परीक्षण करने के लिए है। मुझे याद आता है कि उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव जब पहली बार मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने मुख्यमंत्री के विवेकाधीन कोष से प्रदेश के पत्रकारों को उपकृत किया था। मायावती मुख्यमंत्री बनीं तो उन्होंने इस कोष से अपनी पार्टी कार्यकताओं का ही पैसा बांटा। इसे लेकर शोर भी मचा था। पर सारे नेता एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं, इसलिए ये मामला आगे नहीं बढ़ा। न कार्यपालिका ने जिम्मेदारी निभाई। न अन्य संस्थाओं ने। लखीमपुर खीरी में किसानों के प्रदर्शन के दौरान हुई मौत में उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रत्येक मरने वाले के परिवार को 45-45 लाख रुपये दिये। फिर इनको पंजाब और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने कैसे 50-50 लाख रुपए अपने प्रदेश के कोष से दिया पंजाब और छत्तीसगढ़ के प्रदेश का धन दूसरे प्रदेश में लुटाने का अधिकार इन प्रदेश के मुख्यमंत्रियों को किसने दिया स्वतः संज्ञान लेने वाली न्यायपालिका को इस पर विचार करना चाहिए। देखना चाहिए कि क्या कोई सरकार किसी अपराधी की इस तरह मदद कर सकती है आज किसान प्रदर्शन के नाम पर उपद्रव करने वालों की मदद की गई है, कल चोर, डकैत, देशद्रोही और आतंकवादियों की मदद की जाएगी।

उधर पंजाब सरकार अपराधी को मदद करती है तो प्रदेश की सारी जनता को दो-दो लाख क्यों नहीं देती पंजाब समेत पांच प्रदेश में चुनाव होने वाले हैं। इन प्रदेश की जनता को इन मुख्यमंत्री से पूछना चाहिए कि अपराधी की सरकारी खजाने से मदद क्यों की गई मदद करनी है तो अपनी जेब से करो। अपने निजी पैसे से करो। अपराधी की मदद की है तो प्रदेश के प्रत्येक व्यक्ति, आम नागरिक को इनसे दुगनी राशि दो। नहीं देते तो इनका बहिष्कार किया जाना चाहिए। इन गलत निर्णय का विरोध करने के लिए प्रदेश और जिम्मेदार देशवासियों को आगे आना होगा। किसी को तो पहल करनी पड़ेगी ही।

मन्नू भंडारी जी का लिखा आज भी नसें चटका देता है

शायद ही कोई हो जिसे आपका बंटीह्न जैसे बड़े उपन्यास की लेखिका मन्नू भंडारी ने प्रभावित न किया हो। मैंने इस उपन्यास को पढ़ाया भी है। मुझे याद आ रहा है कि कितने तीखे तरल सवालों की नोक पर हुआ करते थे हम, और एक बेचैनी सी महसूस होती थी। यह एक चिटके हुए दांपत्य की कथा थी। चिटके हुए दांपत्य की तफसील उनके नाटक बिना दीवारों का घरह्न में भी थी। मैं जब उनसे मिली तो मेरा स्वागत उनकी एक आत्मीय और सरल सी मुस्कान से हुआ, जिसने मुझे न जाने क्या क्या बता देना था। एक निकटता उनसे मेरी यह भी रही कि मैंने उनके लिखे नाटक बिना दीवारों का घरह्न में पत्नी की भूमिका निभाई। मध्यवर्गीय परिवारों की जीवन गाथा के सम-विषम राग रचने वाली इस लेखिका के अनुभवों और रचना विवेक का आयाम बहुत विस्तृत और गहरा था और गहराई उसकी खूबी थी। लेखक पति राजेंद्र यादव की यथार्थवादी रचना दृष्टि से भिन्न ढंग था मन्नू भंडारी का। मन्नू इस दांपत्य की गहरी भीतरी रेखा रहीं। वह कभी लाउड नहीं थीं। उनके साहित्य में अत्याधुनिकता के ढोल-बाजे नहीं हुए, मगर भारतीय समाज के गहरे अंतर्विरोधों पर उन्होंने त्रिशंकुह्न जैसी बेजोड़ कहानी लिखी। फिर महाभोजह्न जैसा उपन्यास लिख कर तो उन्होंने अपने यथार्थ बोध और इतिहास विवेक का लोहा मनवा लिया। उनकी आत्मकथात्मक किताब एक कहानी यह भीह्न खूब पढ़ी गई। इस किताब ने उनके दांपत्य के कठिनतम को जैसे सामने कर दिया था। जाहिर है, कई तरह की प्रतिक्रियाएं भी आईं। उसमें मन्नू जी ने लिखा था कि वे नसों को चटका देने वाले आघात थेह्न विष्णु कांत शास्त्री और प्रो. निर्मला जैन बहुत स्नेह और आदर से मन्नू जी के विषय में बताया करते थे। निर्मला जी का उल्लेख तो मन्नू जी ने भी किया है। उनके पिता एक जागरूक स्वाधीनता प्रेमी व्यक्तित्व थे। स्वाधीनता आंदोलन का गहरा प्रभाव था उनके परिवार पर और मन्नू की भी उसमें भागीदारी थी। भावनात्मकता के साथ तर्क को भी खुराक मिल सके, ऐसा परिदृश्य था वह। अपनी आत्मकथा में मन्नू अपनी बड़ी-चढ़ी राजनीतिक सक्रियता के प्रति पिता की नाखुशी भी बताती हैं। उन्होंने लिखा है कि यह वे दिन थे, जब रगों में लहू की जगह जैसे लावा बहता था। यह वह समय और परिदृश्य था जब आजादी के लिए लड़ने वालों का फैलाव जन-जन तक था। यह असर बेइंतहा संक्रामक था। उस दौर के कितने ही लोगों ने इसे ऐसे ही महसूस किया है। उन्होंने एक कर्मयोगी जैसी भूमिका में समाज और संसार को रचने में अपना हाथ लगाया। नसों को चटका देने वाली यातनाओं के साथ रहते हुए भी जो अमृत था, उन्होंने उसे ही जाहिर किया। अति बौद्धिकता के दावे से अलग होकर दुनिया के जटिलतम में प्रवेश भी किया। एक कोमल संवेदनशील रचनात्मक मन ने सत्ता की नृशंसता के खेल को भीतर से उधेड़ कर सबको चकित कर दिया था।

वह ऐसी बहुआयामी प्रतिभा थीं, कि उन्हें विधाओं की भाषा का अंतर खूब पता था। रंगमंच और सिनेमा की भाषा जानती थीं वह। उन्होंने बहुत लोकप्रिय हुए रजनीह्न सीरियल की स्क्रिप्ट लिखी। यही सच हैह्न नामक उनकी कहानी की बहुत सादी सी स्क्रिप्ट में गहरायी हुई आयरनी को भला कौन भूल सकता है स्त्री की आजादी के सवाल मन्नू भंडारी के लिए अनुपस्थित नहीं थे। उनकी कहानियों के स्त्री किरदार याद रह जाते हैं। वह उनके भीतर कुछ अतिरिक्त भरने से बचती रही हैं। वह उसे जटिल सामाजिक संरचनाओं के भीतर देखती हैं। एक सहज मूल्यसंलग्नता उनका स्वभाव रहा और उन्होंने अपने साहित्य में ही नहीं, जीवन में भी इसका निर्वाह किया। वह इतने गहरे परिचय और प्रतीति में अपने किरदारों को रचती रही हैं, जैसे वे जीते-जागते हमें मिलें और हम पर बहुत गहरा असर छोड़ कर जाएं। वह सतत रचती रही थीं। वह लिखने की तैयारी में जोर-शोर से लगने वाली नहीं थीं। जीवन अपनी भीतरी शक्ति से उनकी भाषा में उतरता गया और खूब लिखा भी उन्होंने। वह सब लिखा हुआ उनका यश शरीर है, उनकी अमरता है। हम भाग्यशाली हैं कि हमने उन्हें देखा है, पढ़ा है।

-प्रो. चंद्रकला त्रिपाठी

क्या देश को सही मायने में आजादी 2014 में ही मिली है

राजीव गुप्ता

मशहूर फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत जिन्हे हाल ही में पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, उन्होंने अचानक यह बयान देकर कि देश को असली आजादी 1947 में नहीं, बल्कि 2014 में मिली है।, देश में एक बड़ा सियासी घमासान मचा दिया है. काफी संख्या में लोग कंगना के समर्थन में उतर आये हैं और कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्हे कंगना के इस बयान से खासी तकलीफ हो रही है. आइये अब समझते हैं कि कंगना के इस बयान के मायने क्या हैं और उनके इस बयान में कितनी सच्चाई है. कंगना के बयान को विश्लेषण की उद्देश्य से दो हिस्सों में बांटा जा सकता है. पहले तो हम इस बात की पड़ताल कर लेते हैं कि हमारे देश को 1947 में आजादी मिली भी या नहीं. हालांकि देश के ज्यादातर लोग 15 अगस्त 1947 को देश का स्वतंत्रता दिवस मनाते भी हैं और इस खुशफहमी में भी हैं कि हमारे देश को इस दिन आजादी मिल गयी थी लेकिन हकीकत इसके एकदम विपरीत है। दरअसल अंग्रेज लोग भारत में बढ़ते उनके खिलाफ विरोध और विद्रोह के चलते खुद ही भारत को छोड़ने का मन बना चुके थे लेकिन वह जल्दबाजी में भारत को छोड़ना नहीं चाहते थे. उन्हें किसी ऐसे संगठन की तलाश थी जो नाम से तो भारतीय हो लेकिन उन्ही की बतायी गयी नीतियों के ऊपर काम करता हुआ आगे भी इस देश को उसी तरह चलाये जिस तरह से खुद अंग्रेज इस देश को अब तक चलाते आये थे. इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश पार्लियामेंट ने 18 जुलाई 1947 को एक कानून पास किया किया जिसका नाम था इंडियन इंडिपेंडेंस एक्ट,1947. इस कानून में यह प्रावधान किया गया था कि 15 अगस्त 1947 से ब्रिटिश इंडियाह्न को दो हिस्सों में बाँट दिया जाएगा. एक हिस्सा इंडियाह्न के नाम से जाना जायेगा और दूसरा हिस्सा पाकिस्तानह्न के नाम से जाना जायेगा. लेकिन इन दोनों हिस्सों पर ब्रिटिश सरकार का कंट्रोल बदस्तूर जारी रहेगा क्योंकि इस कानून के हिसाब से 15 अगस्त 1947 के दिन से इंडिया और पाकितान दोनों ही ब्रिटिश हुकूमत के अधिराज्यह्न यानी डोमिनियन घोषित कर दिए गए थे. आप लोगों को यह सब पढ़कर अजीब जरूर लग रहा होगा, लेकिन कांग्रेस पार्टी ने हम लोगों को गलत इतिहास लिखवाकर पढ़ाया है इसलिए हम लोग हकीकत से पूरी तरह अनजान हैं. इस बात की पुष्टि इस बात से भी होती है कि 28 अप्रैल 1948 को जवाहर लाल नेहरू ने खुद ब्रिटिश महारानी को एक पत्र लिखकर उनसे अपने मंत्रिमंडल नियुक्त करने एवं भारत का गवर्नर जनरल नियुक्त करने की परमिशन भी माँगी थी और इस पत्र में जवाहर लाल नेहरू ने अपने नाम के नीचे लिखा था -प्राइम मिनिस्टर ऑफ द डोमिनियन ऑफ इंडिया। अब समझिये कि जब नेहरू खुद 1948 को ब्रिटिश महारानी को लिखे गए पत्र में अपने आप को इंडिया का प्राइम मिनिस्टर नहीं, बल्कि प्राइम मिनिस्टर ऑफ डोमिनियन ऑफ इंडियाह्न बता रहे हैं तो देश को आजादी 1947 में मिलने की बात एकदम हास्यास्पद ही कही जाएगी।

आप सबकी जानकारी के लिए बताते चलें कि भारत को सम्पूर्ण आजादी 26 जनवरी 1950 को मिली थी और पाकिस्तान को पूर्ण आजादी और बाद में यानि 1956 में मिली थी. हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद नहीं हुआ था. जिस तरह से कांग्रेस के चाटुकार इतिहासकारों ने इतिहास के नाम पर मनगढंत कहानियां देश के सामने परोसी हैं, यह झूठ भी उन तमाम झूठों में से एक है. कांग्रेस कंगना के ऊपर इसीलिए बहुत तेजी से हमलावर है क्योंकि कांग्रेस और उसके इतिहासकारों का परोसा गया झूठ देश की सवा सौ करोड़ जनता के सामने यकायक आ गया है।

अब कंगना रनौत के बयान के दूसरे हिस्से की तरफ आते हैं जिसमे उन्होंने कहा है कि देश को असली आजादी 2014 में मिली है. जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है कि 1942 के बाद से ही अंग्रेज हुकूमत हमारे क्रांतिकारियों के संघर्ष और अंग्रेजो के खिलाफ चल रहे विरोध और विद्रोह के चलते बैकफुट पर आ गयी थी और देश से निकलने का कोई सम्मान जनक तरीका तलाश रही थी, क्योंकि अब उनका भारत में रहना आर्थिक रूप से भी अलाभप्रद हो चला था. लेकिन वह जल्दबाजी में यह सब नहीं करना चाहती थी. उन्होंने इसके लिए बाकायदा 1947 में ब्रिटिश पार्लियामेंट में एक कानून पास किया और उस पर 15 अगस्त 1947 से अपनी साजिश को अंजाम देना शुरू कर दिया. ज्यादातर क्रन्तिकारी जिनकी वजह से अंग्रेज भारत छोड़ने पर मजबूर हुए थी, या तो उन्हें ब्रिटिश हुकूमत ने फांसी पर लटका दिया था या उन्हें और किसी तरीके से अपने रास्ते से हटा दिया गया था. अंग्रेजों को तो भारत में कोई ऐसा भारतीय संगठन या व्यक्ति चाहिए था जो उनकी बनाई नीतियों के हिसाब से ही उन्ही की तरह इस देश पर अपनी हुकूमत कायम रख सके. नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी में अंग्रेजों को यह सारी खूबियां नजर आईं और उन्होंने एक तरह से धीरे धीरे सत्ता का हस्तांतरणह्न नेहरू और कांग्रेस को कर दिया और 15 अगस्त 1947 को नेहरू को प्राइम मिनिस्टर ऑफ डोमिनियन ऑफ इंडियाह्न बना दिया। अपने भाड़े पर रखे हुए इतिहासकारों से मनगढंत इतिहास लिखवाकर कांग्रेस देश को आज तक गुमराह करती रही कि देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया और यह आजादी कांग्रेस पार्टी ने देश को दिलवाई है. जबकि देश की आजादी के मसले से कांग्रेस पार्टी का दूर दूर तक कोई लेना देना नहीं है. जिन लोगों की वजह से देश को आजादी मिली है, उन वीर और महान क्रांतिकारियों को अंग्रेजो ने और कांग्रेस ने अपने रास्ते से बहुत पहले ही हटा दिया था। देश में 2014 तक जितनी भी सरकारें बनी थीं, उन सब में कांग्रेस या उसके सहयोगियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष समर्थन था. अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार भी कई पार्टियों की मिली जुली सरकार थी जिसमे फारूक अब्दुल्ला जैसे कांग्रेस के कई सहयोगी सरकार में शामिल थे. देश में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2014 में पहली सरकार ऐसी बनी थी जिस पर कांग्रेस पार्टी या उसके किसी सहयोगी दल का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई कंट्रोल नहीं था और इसलिए अगर यह कहा जाए कि 2014 में पहली बार ऐसी सरकार आयी थी जिसने अंग्रेज हुकूमत द्वारा स्थापित सत्ता को केंद्र से हटा फेंका था, तो उसमे कुछ भी गलत नहीं है और उस पर किसी भी समझदार व्यक्ति को कोई ऐतराज भी नहीं होना चाहिए.

निरंतर घातक होता वायु प्रदूषण का प्रभाव

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली और आसपास के इलाकों में वायु प्रदूषण की बेहद गंभीर स्थिति पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए दो टूक शब्दों में कहा है कि स्थिति को नियंत्रित करने के लिए सरकार तुरंत आपात कदम उठाए और जरूरी हो तो दो दिनों के लिए लॉकडाउन पर भी विचार किया जाए या अन्य उपाय किए जाएं। दरअसल दिन के समय कमजोर हवाएं और रात के समय एयर लॉक की स्थिति के कारण दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति विकराल बनी है। चीफ जस्टिस एनवी रमना ने यह भी कहा है कि प्रदूषण की स्थिति इतनी खराब है कि हम घरों में भी मास्क पहनने को विवश हो गए हैं। दिल्ली और आसपास के इलाकों में प्रदूषण की भयावह स्थिति पर नजर डालें तो 13 नवम्बर की सुबह दिल्ली में वायु गुणवत्ता का स्तर 499 था, जो शाम होते-होते 690 एक्यूआई तक पहुंच गया। हालांकि प्रदूषण के मानकों के अनुसार वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 0-50 अच्छा, 51-100 संतोषजनक, 101-200 मध्यम, 201-300 खराब, 301-400 बेहद खराब और 401-500 गंभीर श्रेणी में माना गया है। दिल्ली में वायु प्रदूषण की विकराल स्थिति के लिए पराली जलना एक बड़ा कारण है लेकिन इसके अलावा ऑटोमोबाइल उत्सर्जन, खाना पकाने का धुआं, लकड़ी से जलने वाले चूल्हे, उद्योगों का धुआं इत्यादि भी वायु प्रदूषण के प्रमुख स्रोत हैं। निर्माण कार्यों और ध्वस्तीकरण से निकलने वाले रेत-धूल, सीमेंट के कण तथा सड़कों पर उड़ने वाली धूल भी वायु प्रदूषण का बड़ा कारण हैं। वाहनों से निकलने वाला उत्सर्जन दिल्ली में तो करीब 40 फीसदी प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है। सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल ने अदालत में कहा है कि पराली के कारण 33 फीसदी प्रदूषण है। पराली जलने के आंकड़ों पर नजर डालें तो दिवाली के अगले दिन पराली जलने के हरियाणा में 500 और पंजाब में करीब 6000 मामले सामने आए थे। आईआईटीएम पुणे के मुताबिक 12 नवम्बर को भी पंजाब में पराली जलने के 3403, हरियाणा में 127 और उत्तर प्रदेश में 120 मामले सामने आए। चूंकि पराली के अलावा अन्य कई कारक भी हालात को बदतर बनाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं, इसीलिए अदालत ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि पराली जलाने के अलावा वाहन प्रदूषण, पटाखे चलाने और औद्योगिक इकाईयों के कारण भी दिल्ली में प्रदूषण है। दरअसल सभी सरकारों द्वारा प्रदूषण की बदतर स्थिति से निपटने के नाम पर खेतों में जलती पराली पर ही सारा ठीकरा फोड़ दिया जाता है।

वायु प्रदूषण अब लोगों में सैंकड़ों बीमारियों की जड़ बन रहा है, इसीलिए सुप्रीम कोर्ट को इन परिस्थितियों पर गंभीर चिंता जताते हुए तत्काल आपात कदम उठाने को कहा गया है। वायु प्रदूषण को लेकर आम धारणा है कि इससे श्वांस संबंधी परेशानियां ज्यादा होती हैं लेकिन कई शोधों में स्पष्ट हो चुका है कि प्रदूषण के सूक्ष्म कण मस्तिष्क की सोचने-समझने की क्षमता को भी प्रभावित करते हैं। यही नहीं, इससे पुरुषों के वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या में चालीस फीसदी तक गिरावट दर्ज की गई है, जिससे नपुंसकता का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। इससे लंग्स फाइब्रोसिस और फेफड़ों का कैंसर हो सकता है। प्रदूषण के कण जब मानव शरीर के रक्त में पहुंचते हैं तो ये शरीर के अन्य अंगों को भी प्रभावित करते हैं, जिसका असर कई बार वर्षों बाद दिखाई देता है। इसके अलावा इससे ब्लड कैंसर का खतरा भी बढ़ता है। यही कारण है कि अधिकांश स्वास्थ्य विशेषज्ञों का अब यही मानना है कि यदि देश की राजधानी दिल्ली की हवा ऐसी ही बनी रही तो आने वाले समय में स्वस्थ इंसान भी फेफड़ों और रक्त कैंसर जैसी बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर के ही कारण अब देशभर में नॉन स्मोकर्स में भी फेफड़ों का कैंसर होने के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार मानव निर्मित वायु प्रदूषण से प्रतिवर्ष करीब पांच लाख लोग मौत के मुंह में समा जाते हैं। वायु प्रदूषण लोगों की आयु घटने का भी बड़ा कारण बनकर उभर रहा है। एक्यूएलआई की हालिया रिपोर्ट में बताया जा चुका है कि वायु प्रदूषण न सिर्फ तरह-तरह की बीमारियां पैदा कर रहा है बल्कि लोगों की आयु भी घटा रहा है।

-योगेश कुमार गोयल

टी-20 वर्ल्ड कप, चैंपियंस ट्रॉफी और 50 ओवरों के वर्ल्ड कप की मेजबानी करेगा भारत

नई दिल्ली। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने 2024 से 2031 के बीच होने वाले टी-20 वर्ल्ड कप, चैंपियंस ट्रॉफी और वर्ल्ड कप के मेजबान देशों का ऐलान कर दिया है। इस दौरान भारत तीन बड़े टूर्नामेंटों का आयोजन करेगा, जिसमें 2026 में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप, 2029 में चैंपियंस ट्रॉफी और 2031 में 50 ओवरों का वर्ल्ड कप शामिल है। भारत 2026 में श्रीलंका के साथ टी-20 वर्ल्ड कप का आयोजन करेगा जबकि 2031 में बांग्लादेश के साथ मिलकर वर्ल्ड कप की मेजबानी करेगा।

आईसीसी ने इसकी जानकारी देते हुए कहा कि 2024 से लेकर 2031 के दौरान हर साल एक बड़ा टूर्नामेंट आयोजित किया जाएगा। इसके तहत अमेरिका में पहली बार कोई बड़ा आईसीसी टूर्नामेंट आयोजित किया जाएगा। अमेरिका में 2024 का टी20 वर्ल्ड कप आयोजित किया जाएगा।

वेस्टइंडीज भी इसकी सह मेजबानी करेगा। 2025 में पाकिस्तान चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी करेगा। आईसीसी ने कहा, '11 पूर्ण सदस्यों और तीन एसोसिएट सदस्यों को दो आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप, चार आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप और दो आईसीसी पुरुष चैंपियन्स ट्रॉफी की मेजबानी के लिए चुना गया है। अमेरिका और नामीबिया पहली बार आईसीसी विश्व कप प्रतियोगिता की मेजबानी करेंगे। ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, इंग्लैंड, आयरलैंड, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, स्कॉटलैंड, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, वेस्टइंडीज और जिंबाब्वे पहले भी बड़ी प्रतियोगिताओं की मेजबानी कर चुके हैं और अगले दशक में दोबारा ऐसा करेंगे।'

इसके अलावा 2027 में दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया वर्ल्ड कप की सह मेजबानी करेंगे। उसके अगले साल ही ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड मिलकर टी20 वर्ल्ड कप की सह मेजबानी करेंगे। दोनों देश, इससे पहले 2015 में 50 ओवरों के वर्ल्ड कप की सह मेजबानी कर चुके हैं। भारत और बांग्लादेश की सह मेजबानी में 2031 वर्ल्ड कप होने से पहले इंग्लैंड, आयरलैंड और स्कॉटलैंड में 2030 में टी-20 वर्ल्ड कप खेले जाएंगे। आईसीसी चेयरमैन ग्रेग बार्कले ने बोली सौंपने वाले प्रत्येक सदस्य को धन्यवाद दिया और सफल बोली लगाने वालों को बधाई दी। बार्कले ने कहा, 'आठ प्रतियोगिता की मेजबानी 14 सदस्यों द्वारा किया जाना हमारे खेल की वैश्विक प्रकृति को दर्शाता है। इतने सारे पिछले मेजबानों के पास वापस लौटना शानदार है लेकिन इस प्रक्रिया को लेकर जो सबसे रोमांचक है वह वे देश हैं जो पहली बार आईसीसी प्रतियोगिताओं की मेजबानी करेंगे। इसके अमेरिका भी शामिल है।'

माइकल वॉन के बाद अब जो रूट निशाने पर, नस्लवाद को लेकर अजीम रफीक ने इंग्लैंड टेस्ट कप्तान पर लगाया बड़ा आरोप

नई दिल्ली। इंग्लैंड काउंटी क्लब यॉर्कशर के पूर्व खिलाड़ी अजीम रफीक ने मंगलवार को जो रूट को अच्छा इंसान कहा, लेकिन साथ ही उन्होंने इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान पर 'संस्थागत नस्लवाद' की अनदेखीभी करने का आरोप लगाया। रफीक ने डिजिटल, कल्चर, मीडिया और स्पोर्ट्स कमेटी (डीसीएमएस) में ब्रिटेन के सांसदों के सामने सुनवाई के दौरान क्लब में नस्लवाद और पक्षपात के अपने अनुभवों के बारे में बताया। रूट ने हाल ही में यॉर्कशर काउंटी में नस्लवाद की जमकर आलोचना की थी। रफीक ने सुनवाई के दौरान कहा, 'रूट अच्छा इंसान है। उसने कभी नस्लीय भाषा का प्रयोग नहीं किया। मुझे यह और भी बुरा लगा क्योंकि वह गैरी बालांस के साथ रहता था। शायद उसे याद नहीं हो ।इंग्लैंड के पूर्व इंटरनेशनल क्रिकेटर बालांस ने स्वीकार किया कि उन्होंने रफीक को पाकी (पाकिस्तानियों के लिए प्रयुक्त शब्द) कहा था लेकिन उन्होंने कहा कि यह उन्होंने दोस्ताना मजाक में कहा था। रफीक ने कहा कि यॉर्कशर के लिए खेलने के दौरान उन्हें अक्सर 'पाकी' कहा जाता था और अधिकारियों ने इसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की।

इससे पहले, इंग्लैंड के लेग स्पिनर आदिल रशीद ने पूर्व साथी अजीम रफीक के आरोपों का समर्थन करके एक बार फिर इस विवाद को चचाओं में ला दिया। रशीद ने कन्फर्म करते हुए कहा कि पूर्व कप्तान माइकल वॉन की टिप्पणियां एशियाई खिलाड़ियों के लिए थीं। टी-20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल तक पहुंची इंग्लैंड टीम के सदस्य रशीद ने कहा कि वह रफीक के दावों की जांच के लिए किसी भी ऑफिशियल जांच में सहयोग के लिए तैयार हैं।

द्रविड़ युग में विराट ?कोहली का क्या होगा रोल, टी20ककप्तान रोहित शर्मा ने किया एक्सप्लेन

जयपुर। भारत के नए टी20 कप्तान रोहित शर्मा टीम के नए ढांचे में बतौर बल्लेबाज विराट कोहली की भूमिका में कोई बदलाव नहीं देखते और उन्हें उम्मीद है कि कोहली आगे भी बेहतरीन पारियां खेलते रहेंगे। कोहली ने टी20 विश्व कप के बाद इस क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट से कप्तानी छोड़ दी है और बुधवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में होने वाले पहले टी20 मैच से रोहित इस प्रारूप में पूर्णकालिक कप्तान होंगे।

कोहली की भूमिका के बारे में पूछने पर रोहित ने कहा, 'यह एकदम आसान है। वह अब तक जो कुछ कर रहा था, टीम में उसकी भूमिका वही रहेगी। वह टीम के लिए काफी महत्वपूर्ण खिलाड़ी है और जब भी वह खेलता है, अपना प्रभाव छोड़ता है। टीम के नजरिए से वह महत्वपूर्ण खिलाड़ी है और जब आप हर मैच खेलते हैं तो भूमिकाएं बदल जाती है।'

कप्तान ने कहा मैच के हालात के अनुसार हर खिलाड़ी की भूमिका बदल जाती है और कोहली समेत सभी खिलाड़ी इसके लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा, 'जब आप पहले बल्लेबाजी कर रहे हैं तो बाद में बल्लेबाजी की तुलना में भूमिका अलग होगी । मैच के अनुसार सभी की भूमिका बदल जाती है और हर कोई इसके लिये तैयार है। जब

विराट वापिस आयेगा तो हमारी टीम और मजबूत होगी क्योंकि उसके पास इतना अनुभव है और वह इतना शानदार बल्लेबाज है।

द्रविड़ युग में विराट ?कोहली का क्या होगा रोल, ळ20ककप्तान रोहित शर्मा ने किया एक्सप्लेन

जयपुर। भारत के नए टी20 कप्तान रोहित शर्मा टीम के नए ढांचे में बतौर बल्लेबाज विराट कोहली की भूमिका में कोई बदलाव नहीं देखते और उन्हें उम्मीद है कि कोहली आगे भी बेहतरीन पारियां खेलते रहेंगे। कोहली ने टी20 विश्व कप के बाद इस क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट से कप्तानी छोड़ दी है और बुधवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में होने वाले पहले टी20 मैच से रोहित इस प्रारूप में पूर्णकालिक कप्तान होंगे। कोहली की भूमिका के बारे में पूछने पर रोहित ने कहा, 'यह एकदम आसान है। वह अब तक जो कुछ कर रहा था, टीम में उसकी भूमिका वही रहेगी। वह टीम के लिए काफी महत्वपूर्ण खिलाड़ी है और जब भी वह खेलता है, अपना प्रभाव छोड़ता है। टीम के नजरिए से वह महत्वपूर्ण खिलाड़ी है और जब आप हर मैच खेलते हैं तो भूमिकाएं बदल जाती है। कप्तान ने कहा मैच के हालात के अनुसार हर खिलाड़ी की भूमिका बदल जाती है और कोहली समेत सभी खिलाड़ी इसके लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा, 'जब आप पहले बल्लेबाजी कर रहे हैं तो बाद में बल्लेबाजी की तुलना में भूमिका अलग होगी । मैच के अनुसार सभी की भूमिका बदल जाती है और हर कोई इसके लिये तैयार है।

पाकिस्तान ने प्रैक्टिस सेशन के दौरान बांग्लादेश की जमीन में गाड़ा अपना झंडा, जमकर मचा बवाल

बांग्लादेश के साथ तीन मैचों की टी-20 सीरीज से पहले प्रैक्टिस सेशन के दौरान मीरपुर मैदान पर अपना झंडा लगाने के पाकिस्तान क्रिकेट टीम के फैसले से बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। इस विवाद

के अब दोनों टीमों के बीच सीरीज पर भी खतरे के बादल मंडराने लगे हैं। बांग्लादेश के कई प्रशंसकों ने इसे देश की आजादी के स्वर्ण जयंती समारोहों से पहले राजनीतिक कदम बताया है। एक प्रशंसक ने फेसबुक पर लिखा, 'कई देश कई बार बांग्लादेश दौरे पर आए हैं और अनेक मैच खेले हैं, लेकिन किसी ने भी अभ्यास सत्र में अपने देश का झंडा जमीन पर नहीं गाड़ा। ऐसा क्यों किया गया। वे क्या साबित करना चाहते हैं।' पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने मामले को तूल पकड़ता देख सफाई में कहा कि पिछले दो महीने से वे टीम के अभ्यास के दौरान देश का झंडा जमीन में गाड़कर खेल रहे हैं। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है।

बीसीबी ने पाकिस्तान के खिलाफ होने वाली आगामी टी-20 सीरीज के लिए मंगलवार को ही अपनी 16 सदस्यीय टीम की घोषणा की है। इस सीरीज से टीम के स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज मुशफिकुर रहीम को आराम दिया गया है जबकि लिटन दास, सौम्य सरकार और रुबेल हुसैन को बाहर कर दिया गया है। पाकिस्तान की टीम को बांग्लादेश दौरे पर 19 नवंबर से ढाका के शेर-ए-बंगला नेशनल स्टेडियम में तीन मैचों की टी-20 सीरीज खेलनी है।

टी20 वर्ल्ड कप के बाद पाकिस्तान के तेज गेंदबाज उस्मान शिनवारी ने टेस्ट क्रिकेट को कहा अलविदा

नई दिल्ली। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज उस्मान खान शिनवारी ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर दी है। पाकिस्तान के लिए केवल एक टेस्ट मैच खेलने वाले शिनवारी ने सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी दी। शिनवारी चोट के चलते दो साल से पाकिस्तान टीम से बाहर चल रहे थे। उन्होंने पाकिस्तान के लिए अबतक 17 वनडे मैच भी खेले हैं। शिनवारी अब सिर्फ वनडे और टी20 पर ही ध्यान देंगे। 27 साल के शिनवारी ने ट्विटर पर अपने संन्यास का ऐलान करते हुए लिखा, 'मैं फिजियो जावेद मुगल का धन्यवाद देना चाहता हूं, जिनके चलते मैं क्रिकेट में वापसी कर पाया। अब मैं पूरी तरह से फिट भी हूं। लेकिन अपने डॉक्टर्स और फिजियो की सलाह के चलते और भविष्य में चोटिल होने से बचने के कारण मैं क्रिकेट के सबसे लम्बे प्रारूप को छोड़ने का फैसला ले रहा हूं, जिससे मेरा क्रिकेट करियर और लम्बा चल सके। मैं रेड बॉल क्रिकेट से संन्यास ले रहा हूं। शिनवारी ने पाकिस्तान के लिए केवल एक टेस्ट मैच साल 2019 में श्रीलंका के खिलाफ रावलपिंडी में खेला था। शिनवारी ने दिसंबर 2013 में वनडे में डेब्यू किया था, लेकिन उन्हें अपना पहला वनडे खेलने के लिए चार साल का इंजतार करना पड़ा था। उन्होंने साथ ही पाकिस्तान के लिए टी20 इंटरनेशनल मैच भी खेले हैं। शिनवारी ने 16 टी-20 मैचों में 13 विकेट और 17 वनडे मैचों में 34 विकेट चटकाए हैं।

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों संग रोल प्रेक्षक ने की बैठक, मांगे सुझाव

अखंड भारत संदेश

मतदाता सूची के पुनरीक्षण कार्य में राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी अहमः रमेशचंद्र

भदोही। भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा संचालित विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान को सफल बनाने के उद्देश्य से रोल प्रेक्षक एवं अपर आयुक्त मिजार्पुर मंडल रमेशचंद्र ने कलेक्ट्रेट के सभागार में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नामित रोल प्रेक्षक एवं अपर आयुक्त मिजार्पुर मंडल रमेश चंद्र ने प्रतिनिधियों के साथ अनेक बिंदुओं पर गहनता से विचार विमर्श किया। उन्होंने सभी दलों के प्रतिनिधियों से कहा कि वह मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण अभियान को सफल बनाने में अपना योगदान दें। सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी ओर से बीएलए की नियुक्ति करते हुए अपनी सूची उपलब्ध कराएं और उन्हें एक्टिव करते हुए सभी बूथों पर छूटे हुए मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने

जन प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते रोल प्रेक्षक

का विशेष प्रयास करें, ताकि सभी विधानसभाओं की मतदाता सूची भारत निर्वाचन आयोग की मंशा के अनुरूप तैयार हो सके। रमेशचंद्र ने प्रशासनिक अफसरों से कहा कि विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान को सफल बनाने के उद्देश्य से वृहद स्तर पर प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किया जाए, ताकि सभी छूटे हुए मतदाता अपना नाम ऑनलाइन माध्यम से मतदाता सूची में दर्ज करा सकें। उन्होंने यह भी कहा कि आज की बैठक में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के माध्यम से जो समस्याएं एवं शिकायतें प्राप्त हुई हैं, उनके संबंध में सभी अधिकारीगण अपने-अपने क्षेत्र में गहनता के साथ कार्रवाई सुनिश्चित कराएं। उन्होंने डिलीशन के कार्य पर भी विशेष जोर दिया और कहा कि सभी बीएलओ अपने-अपने क्षेत्र में न रहने वाले लोगों का नाम कटवाने का कार्य करें। इसी प्रकार जेंडर रेशियो को दृष्टिगत रखते हुए बालिकाओं एवं महिलाओं के नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने के लिए विशेष ध्यान दें।

रोल प्रेक्षक ने सभी अधिकारियों से आह्वान किया कि इस कार्य को पूरी ईमानदारी के साथ किया जाए, ताकि कोई भी छूटने न पाए और फर्जी नामों की इंट्री न होने पाए। इस बैठक में विधायक रवींद्रनाथ त्रिपाठी, दीनानाथ भाष्कर, अपर जिलाधिकारी शैलेन्द्र कुमार मिश्र, उप जिलाधिकारी प्रियंका, उप जिलाधिकारी चंद्रशेखर, जिला सूचना अधिकारी प्रवीण मालवीय, जिलाध्यक्ष बीजेपी, जिलाध्यक्ष सपा अन्य संबंधित अधिकारीगण व राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

सीएम सामूहिक विवाह योजनाः 801 जोड़ों का विवाह करवाने की तैयारी

नवंबर-दिसंबर में होगा सामूहिक विवाह का आयोजन

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिला समाज कल्याण अधिकारी महेंद्र यादव ने बताया कि विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति, सामान्य वर्ग, अल्पसंख्यक समुदाय के 801 जोड़ों की शादी का लक्ष्य शासन से प्राप्त हुआ है, जिसका आवंटन विकास खंड वार किया जा चुका है।

वैवाहिक कार्यक्रम का आयोजन माह नवंबर के अंतिम सप्ताह व दिसंबर के प्रथम सप्ताह के बीच किया जाएगा। इसके लिए शासन द्वारा तिथि निर्धारित की जाएगी। बताया कि जो भी माता-पिता, अभिभावक अपनी पुत्री की शादी सामूहिक रूप से कराने के इच्छुक हैं वे विवाह के लिए अपना पंजीकरण खंड विकास अधिकारी/अधिशासी अधिकारी के कार्यालय में करवाएं और आवेदन जमा करें। सामूहिक विवाह के आवेदन के लिए माता-पिता की वार्षिक आय दो लाख से कम हो एवं कन्या व वर की उम्र 18 व 21 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। सामूहिक विवाह योजना केतहत शासन द्वारा प्रति वैवाहिक जोड़ों पर 51 हजार रुपये खर्च किया जाता है, जिसमें 35 हजार रुपये कन्या के खाते में दिया जाता है, जबकि दस हजार रुपये का उपहार कन्या को दिया जाता है। इसके अलावा छह हजार रुपये वैवाहिक जोड़े के साथ आने वाले लोगों की खातिरदारी व अन्य व्यवस्थाओं पर पर खर्च किए जाते हैं।

भदोही को मिला 801 जोड़ों का विवाह करवाने का लक्ष्य

लंबित मामलों का यथाशीघ्र हो निस्तारण : एडीएम

भदोही। एडीएम शैलेंद्र कुमार मिश्र ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में कानून व्यवस्था और अभियोजन के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने लंबित वादों के निस्तारण पर जोर देते हुए मुकदमों की कटेगरी वार सूची बनाने का भी निर्देश दिया। अपर जिलाधिकारी ने सेशन कोर्ट, लोअर कोर्ट, जमानत विवरण, एससीध्एसटी व्यक्ति की आर्थिक सहायता, गिरोह बंद अधिनियम (गैंगस्टर), महिला संबंधी अपराध, अभियोजन कार्य, दोषमुक्त हुए वादों का आधार, अन्य अधिनियम, सम्मन निवारण, गवाहों की उपस्थिति की स्थिति, वाणिज्यकर ओवरलोडिंग, ट्रैफिक संबंधी नियम, एसडीएम न्यायालय, न्यायालय सरपतहा, कलेक्ट्रेट न्यायालय से जुड़ी समस्याओं की समीक्षा की। एडीएम शैलेंद्र कुमार मिश्र ने कहा कि ज्यादा से ज्यादा मुकदमों का निस्तारण किया जाए। जो पेंडिंग केस हैं, उसका एनालिसिस करना होगा, ताकि उनको छांटकर अलग किया जा सके, ताकि मामलों के निस्तारण में तेजी आए। कहा कि बहुत बार ऐसा देखने में आता है कि कई मामले बहुत मामूली कागजातों, समस्याओं के वजह से लटके रहते हैं।

किसी बेगुनाह को न मिले दंड, अपराधी को छोड़ा न जाए

एससीएसटी आयोग के उपाध्यक्ष ने जनपद में दूसरे दिन भी लगाई चौपाल

अखंड भारत संदेश

भदोही। एससीएसटी आयोग के उपाध्यक्ष रामनरेश पासवान ने जनपद भ्रमण के दूसरे दिन विकास खंड औराई के विभिन्न गांवों में चौपाल लगाई। ग्रामसभा सेयूर, औरंगाबाद, कोइलरा में आयोजित चौपाल में रामनरेश पासवान ने शिकायतें सुनीं और विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। राम नरेश पासवान ने कहा कि योगी आदित्यनाथ की अगुवाई में सूबे के कोने-कोने का विकास किया जा रहा है। सबसे पिछड़ी पंक्ति में बैठे व्यक्ति को योजनाओं से लाभांवित किया जा रहा है। कहा कि किसी ऐसे व्यक्ति को दंड नहीं मिलना चाहिए, जो उसने कभी किया ही नहीं हो। जबकि अपराध करने वालों को दंडिया किया जाए। कहा कि जनकल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण योजनाएं संचालित की गई हैं, जिनका बड़े पैमाने पर समाज के गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्गों को लाभ दिया जा रहा है।

बिना किसी भेदभाव के सभी का हित देखा जा रहा है। समाज कल्याण अधिकारी महेंद्र यादव ने बताया कि शासन की प्राथमिकताओं में शामिल पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन का लाभ पात्रों तक पहुंचाया जा रहा है। इस अवसर पर जिला समाज कल्याण अधिकारी महेंद्र यादव, जिला उपाध्यक्ष, काशी क्षेत्र के मंत्री, संबंधित ग्रामों के प्रधान एवं अन्य संभ्रांत नागरिक गण उपस्थित रहे।

भरत से गले मिले श्रीराम, जयश्रीराम के उद्घोष से गूंजा चौरी बाजार

भरत मिलाप और मेला देखने के लिए रातभर जटा रहा हुजूम, राम-रावण युद्ध के बाद चेयरमैन ने उतारी श्रीराम की आरती

अखंड भारत संदेश

चौरी। प्रगति परिषद व रामलीला परिषद के तत्वावधान में चौरी बाजार का सुप्रसिद्ध भरत मिलाप बीती रात संपन्न हो गया। जय श्रीराम, हर-हर महादेव के उद्घोष के बीच भरत मिलाप देखने को हजारों की भीड़ ठंड के बावजूद मंगलवार भोर तक डटी रही। मेला व भरत मिलाप को सकुशल संपन्न करवाने वाले लोगों को आज पुरस्कृत भी किया गया।

चौरी बाजार के चौराहे पर भाजपा जिलाध्यक्ष विनय श्रीवास्तव व चेयरमैन अशोक जायसवाल ने पूजन करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जिलाध्यक्ष ने भरत मिलाप में आए हुए नागरिकों को शुभकामनाएं दी और राम के चरित्र का मार्मिक वर्णन किया। कहा कि रघुकुल रीति सदा चलि आयी, प्राण जाए पर वचन न जाई। कहा- प्रभु श्रीराम हमारे आदर्श हैं। भदोही

भरत मिलाप में आपस में गलेमिलते भाई

चेयरमैन अशोक जायसवाल ने कमेटी के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बधाई दी। चौरी चौराहे पर राम व रावण का युद्ध हुआ, जिसमें राम के हाथों रावण का वध हुआ। ततपश्चात प्रतीक स्वरूप रावण के विशालकाय पुतले का दहन किया गया। इसके पश्चात भरत मिलाप कार्यक्रम का आयोजन हुआ। भरत मिलाप और मेला देखने के लिए रातभर हजारों की भीड़ डटी रही।

जगह-जगह डीजे, झूले, बिरहा आदि का आयोजन किया गया था। मंगलवार को भोर में एक दर्जन से अधिक आकर्षक झांकियां निकाली गईं। मेला क्षेत्र में प्रयागराज से आई चौकी पर मां काली व राधा-कृष्ण की झांकी आकर्षण का केंद्र रही। मेले की सुरक्षा के लिए पुलिस के साथ-साथ पीएसी को भी लगाया गया था।

उत्कृष्ट कार्य करने वालों को मिला इनाम

अखंड भारत संदेश

भरत मिलाप व मेले के उपरांत उत्कृष्ट प्रदर्शन करनेवालों को आज पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर प्रथम पुरस्कार के रूप में ज्ञानपुर निवासी बंशीधर मिस्त्री को एक फ्रीज प्रदान किया गया। द्वितीय पुरस्कार ज्ञानपुर के हाशमी मिस्त्री को एलईडी टीवी, कोल्हड़ के रामधनी को एलईडी टीवी व ज्ञानपुर के गुड्डू को एक आलमारी प्रदान की गई। तृतीय पुरस्कार केरूप में जितेंद्र मिस्त्री ज्ञानपुर, धर्मेंद्र मिस्त्री ज्ञानपुर, रामश्रेय मिस्त्री ज्ञानपुर व सतीश कुमार को एक-एक पंखा प्रदान किया गया। इस अवसर पर भाजपा किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष सुरेंद्र दुबे, प्रमोद कुमार चतुवेर्दी, थानाध्यक्ष बृजेश कुमार मौर्य, चौकी प्रभारी मनोज कुमार पांडेय, सूक्खुराम, ताडक नाथ जायसवाल, टुन्ना जायसवाल, राजेन्द्र मिश्र, बंसत लाल गुप्ता, वंशराज यादव, इंदल चौरसिया, भगवती सेठ, श्याम बिहारी पटेल, अनिल उर्फ मुन्ना सिंह, विनोद द्विवेदी, राकेश दुबे, लड्डू तिवारी, नन्हे यादव, राधेश्याम यादव, मुन्ना सेठ, नंदलाल चौबे आदि मौजूद रहे।

युवाओं को एक लाख रुपये का टैबलेट व 9 हजार का स्मार्टफोन देगी योगी सरकार

लखनऊ। योगी सरकार अगले महीने से स्मार्टफोन व टैबलेट बांटने जा रही है। यह गैजेट कई खूबियों से युक्त होंगे। मंगलवार को कैबिनेट ने 90 दिनों में 2.40 लाख टेबलेट पीसी व 3.50 लाख स्मार्ट फोन की आपूर्ति के लिए कंपनियों का चयन करने के लिए नियम शर्तें तय कर दी हैं। इससे संबंधित बिड डाक्यूमेंट को मंजूरी दे दी गई है।

इसी महीने कंपनियों का चयन कर उन्हें अलग अलग आपूर्ति का जिम्मा दिया जाएगा। युवाओं को एक लाख रुपये का टैबलेट व 9 हजार रुपये का स्मार्ट फोन दिया जाएगा। टैबलेट पीसी में 2 जीबी की रैम होगी। पांच मेगापिक्सल का रियर कैमरा व 2 मेगा पिस्टल का फ्रंट कैमरा लगा है। इसकी बैटरी 5000 एमएएच या अधिक क्षमता की होगी। इसमें ब्लूटूथ व जीपीएस की सुविधा होगी। स्मार्ट फोन छह इंच या

उससे ज्यादा को होगा। 32 जीबी की स्टोरेज क्षमता होगी। इसमें 8 मेगापिक्सल का रियर कैमरा व पांच मेगापिक्सल का फ्रंट का कैमरा है। इसकी एक साल की वारंटी होगी। हर जिलें में सर्विस सेंटर होंगे। औद्योगिक विकास विभाग के प्रस्ताव के मुताबिक आपूर्तिकर्ता कंपनी को आवंटित जिले में अनिवार्य रूप से सर्विस सेंटर खोलना होगा। यही नहीं चौबीस घंटे संचालित होने वाली हेल्पलाइन भी चालू करनी होगी ताकि टैबलेट व स्मार्टफोन पाने वाले युवा संपर्क कर सकें।

इस खरीद पर मौजूदा वित्तीय वर्ष में तीन हजार करोड़ रुपये का खर्च आएगा। इस प्रकार टेबलेट पीसी की बिड 2500 करोड़ रुपये की व स्मार्ट फोन की बिड 2250 करोड़ रुपये होगी। सरकार की कोशिश होगी कि तीन चार कंपनियों का चयन किया जाए ताकि बड़ी आपूर्ति का काम कम समय में कर सकें। अगर दो से तीन कंपनियां बिड में सफल होती हैं तो सरकार को 4.80 से 7.20 लाख टैबलेट मिल जाएंगे। अगर दो कंपनी भी बिड में कामयाब होती हैं तो 7 लाख स्मार्टफोन उपलब्ध हो सकेंगे। तय किया गया है कि एक ओईएम के एक से अधिक डीलर अलग अलग माडल के साथ बिड में भाग ले सकेंगे।

आपूर्ति में विलंब होने पर टैबलेट पीसी के मूल का 0.5 प्रतिशत प्रति सप्ताह की दर से पेनाल्टी लगेगी जो अधिकतम आपूर्ति का 10 प्रतिशत होगी। कंपनी को पहले 15 दिन में सौ प्रतिशत, एक महीने में चालीस प्रतिशत व 75 दिन में 85 प्रतिशत व 90 दिन में सौ प्रतिशत आपूर्ति करनी होगी। इस योजना का मकसद तकनीकी सशक्तिकरण व शिक्षा के उपयोगी डिजिटल सामग्री उपलब्ध करवाना है। आपूर्तिकर्ता कंपनी प्लैश मैसेज एप का उपयोग करेगी। युवाओं को इन्हीं गैजेट पर सरकार की योजनाओं ,रोजगार परक जानकारी भी जाएगी। युवा वर्ग के ध्यानार्थ वाल पेपर भी भेजे जाएंगे। हर जिले में तीन से चार स्थानों पर इनका वितरण होगा।

वायु प्रदूषण का कहर! दिल्ली-एनसीआर में अगले आदेश तक स्कूल, कॉलेज बंद, ऑनलाइन होगी पढ़ाई

नईदिल्ली। दिल्ली में बढ़े प्रदूषण की मार अब स्कूल, कॉलेजों पर पड़ी है। वायु प्रदूषण को लेकर बनाए गए केंद्र सरकार के एक पैनल ने आदेश जारी कर कहा है कि दिल्ली-एनसीआर के सभी स्कूल और कॉलेज अगले आदेश तक बंद रहेंगे। बुधवार से ऑनलाइन पढ़ाई होगी। मंगलवार की रात कमिशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट ने शहर और आसपास के क्षेत्रों को वायु प्रदूषण से निपटने के लिए कई निर्देश जारी किये। दिल्ली-एनसीआर के स्कूलों को बंद करने का फैसला प्रदूषण को लेकर हुए आपातकालीन बैठक के बाद लिया गया है। इस कमिशन ने अपने निर्देश में कहा है कि कम से कम 50 फीसदी सरकारी अधिकारियों को 21 नवंबर तक वर्क फ्रॉम होम की इजाजत देनी चाहिए। इसके अलावा निजी कार्यालयों में भी इस तरह के इंतजाम किये जाने चाहिए।

पीएम मोदी ने पूर्वांचल एक्सप्रेस वे का किया उद्घाटन, 3 घंटे में 300 किमी का सफर

यूपी को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से रफ्तार की सौगात मिल गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्वांचल एक्सप्रेस वे का उद्घाटन कर दिया है। लखनऊ के चांद सराय से शुरू होकर गाजीपुर तक पहंचने वाले इस एक्सप्रेस-वे को बनाने पर 22 हजार 497 करोड़ रुपए का खर्च आया है। अब आप 341 किलोमीटर लंबे एक्सप्रेस वे पर 100 की रफ्तार से फरार्टा भर सकते हैं। सरकार को इस एक्सप्रेसवे के जरिए टोल के रूप में 202 करोड़ रुपये सालाना मिलेंगे। अभी तो कुछ दिन यह सफर मुफ्त रहेगा। टोल टैक्स वसूलने का काम निजी कंपनी को दिया गया है। यह कंपनी जल्द प्रति किमी के हिसाब से टोल की दरें तय करेगी और दोनों छोर पर बने टोल प्लाजा से आने-जाने पर टोल टैक्स लगेगा। इस नवनिर्मित एक्सप्रेसवे पर फिलहाल रोजाना 15 से 20 हजार वाहन गुजरेंगे। यह तादाद धीमे-धीमे और बढ़ेगी। यूपीडा की कोशिश है कि पूर्वी यूपी व बिहार से आने वाले लोग दिल्ली नोएडा जाने के लिए इस एक्सप्रेसवे के अलावा लखनऊ आगरा एक्सप्रेसवे व यमुना एक्सप्रेसवे का भी इस्तेमाल करें। इससे इस एक्सप्रेस वे का अधिकतम उपयोग हो सकेगा। लखनऊ आगरा एक्सप्रेसवे की तरह पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर टोल टैक्स में 25 प्रतिशत की छूट मिलेगी। लोकार्पण के साथ नवनिर्मित एक्सप्रेसवे जनता के लिए खुल जाएगा। इन जिलों से गुजरेगा - गाजीपुर, मऊ, आजमगढ़, अम्बेडकर नगर, अयोध्या, सुलतानपुर, अमेठी, बाराबंकी और लखनऊ। सात बड़े रेलवे ओवरब्रिज, 104 छोटे ब्रिज, 271 अंडरपास, 525 पुलिया, आठ प्रसाधन ब्लॉक, आठ जनसुविधा परिसर और आठ पेट्रोल पम्प।

किसानों को सीएम योगी ने दी एक और राहत, अधिकारियों को दिया आदेश

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बाढ़ और बारिश प्रभावित किसानों की मदद के लिए तत्काल फसल क्षतिपूर्ति दिए जाने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि जिन किसानों को अभी तक फसल की क्षतिपूर्ति नहीं मिली है, उन्हें चिन्हित कर तत्काल भुगतान कराया जाया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को उच्चस्तरीय बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिए कि बाढ़ और बारिश से प्रभावित किसानों को जल्द से जल्द सहायता उपलब्ध कराई जाय। जिन किसानों की फसल बाढ़ और बारिश से खराब हुई है, उसकी क्षतिपूर्ति जरूर की जाए। इस काम को पूरी संवेदनशीलता और तत्परता से किया जाए। गौरतलब है कि योगी सरकार अभी तक बारिश से नुकसान झेल रहे किसानों को राहत देने के लिए 3 अरब 84 करोड़ रुपये की सहायता जारी कर चुकी है।

खुर्शीद, चिदंबरम और दिग्विजय के खिलाफ धनबाद की अदालत में केस दायर , धार्मिक भावनाओं को ठेस का आरोप

धनबाद। कांग्रेस के दिग्गज नेता व पूर्व विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद, पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के विरुद्ध धनबाद न्यायालय में मंगलवार को केस दायर किया गया है। तीनों नेताओं के खिलाफ धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाने और दो संप्रदायों के बीच युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न करवा देने का आरोप लगाया गया है। झरिया निवासी अधिवक्ता एसपी सिंह ने सीपी केस दायर करते हुए आरोपियों के खिलाफ समन जारी करने का निवेदन अदालत से किया। अधिवक्ता ने बताया कि मुकदमे पर 18 नवंबर को सुनवाई होगी। धनबाद सीजेएम की अदालत में दायर शिकायतवाद में कहा गया है कि 11 नवंबर 2021 को पूर्व विदेश मंत्री व कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद की किताब 'सनराइज ओभर अयोध्या ' का विमोचन पूर्व वित्त

मंत्री पी चिदंबरम और पूर्व मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश दिग्विजय सिंह के द्वारा किया गया था।

अधिवक्ता ने आरोप लगाया है कि उपरोक्त किताब के अध्याय, 'सेफ्रान स्काई' के पेज नंबर 113 में धार्मिक विद्वेष फैलाने, हिंदू धर्म की भावनाओं को ठेस पहुंचाने, दो संप्रदायों के बीच युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न करवा देने की नियत से षड्यंत्र के तहत सलमान खुर्शीद ने लिखा है कि साधु संत जिस सनातन धर्म और क्लासिकल हिंदुत्व को जानते हैं उसे किनारे करके ऐसे वर्जन को आगे बढ़ाया जा रहा है जो हर पैमाने पर आईएसआईएस और बोकोहराम जैसे इस्लामी जेहादी संगठनों के राजनीतिक रूप जैसा है। अधिवक्ता ने आरोप लगाया कि खुर्शीद के किताब में लिखे इन वाक्यों के बाद पूरे देश में दो संप्रदायों के बीच युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। हिंदू धर्मावलंबियों के धार्मिक भावना को काफी आघात पहुंचा। ऐसा खुर्शीद ने जानबूझकर किया। भावना भड़काने में पी चिदंबरम और दिग्विजय सिंह की भी भूमिका है।

चाइल्ड पोर्नोग्राफी के खिलाफ सीबीआई का देश में 76 जगहों पर छापेमारी, ओडिशा में टीम पर हमला

नईदिल्ली। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने इंटरनेट पर बाल यौन त्पीड़न सामग्री के प्रसार में कथित तौर पर शामिल, 14 राज्यों के 83 लोगों से संबंधित 76 ठिकानों पर मंगलवार को छापेमारी शुरू की। अधिकारियों ने बताया कि केन्द्रीय एजेंसी ने ऑनलाइन बाल यौन शोषण एवं उत्पीड़न में कथित रूप से शामिल 83 लोगों के खिलाफ 14 नवंबर को 23 अलग-अलग मामले दर्ज किए थे। सीबीआई के प्रवक्ता आरसी जोशी ने बताया कि आंध्र प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार, ओडिशा, तमिलनाडु, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में छापेमारी कर तलाशी ली जा रही है। उन्होंने बताया कि छापेमारी का यह अभियान समन्वित तरीके से चलाया जा रहा है। ओडिशा के धेनकनाल में बाल यौन शोषण से संबंधित सामग्री सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के आरोपी मिथुन नाइक के घर पर छापा मारने पहुंचे केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) टीम के चार सदस्यों पर स्थानीय लोगों ने हमला कर दिया। सूत्रों ने बताया सीबीआई टीम ओडिशा में धेनकनाल की जुबली कॉलोनी में आरोपी मिथुन नाइक की तलाश में पहुंची। आरोपी के परिवारजनों ने उन्हें रोकने की कोशिश की और फिर हमला कर दिया।

उग्रवादियों को ट्रेनिंग, हथियार भी दिए... मणिपुर हमले में जांच के दायरे में चीनी आर्मी की भूमिका

नईदिल्ली। पिछले हफ्ते मणिपुर में उग्रवादी हमले में चीनी सेना की भूमिका जांच के दायरे में है। इस हमले में असम राइफल्स के कर्नल, उनकी पत्नी, बेटे और चार अन्य राइफलमैन शहीद हो गए थे। न्यूज-18 की एक रिपोर्ट में खुफिया तंत्र के सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी गई है। ा आतंकवादी समूहों (पीपुल्स लिबरेशन आर्मी और मणिपुर नागा पीपुल्स फ्रंट) ने शनिवार को संयुक्त रूप से म्यांमार की सीमा के पास मणिपुर के चुराचांदपुर जिले में शनिवार को किए गए हमले की जिम्मेदारी ली थी।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, शीर्ष खुफिया सूत्रों ने बताया है कि अलगाववादी उग्रवादी संगठन ढछअ के सदस्यों को म्यांमार के शिविरों में चीनी सेना द्वारा प्रशिक्षित किए जाने का संदेह है। उन्हें हथियारों की आपूर्ति किए जाने की भी संभावना है। सूत्रों ने कहा कि खुफिया एजेंसियों ने मणिपुर सीमा के पास शिविरों के ड्रोन वीडियो फुटेज को कब्जे में ले लिया है। इन शिविरों में चीनी सेना के शीर्ष नेताओं के मौजूद होने की आशंका है। खुफिया तंत्र के अधिकारियों ने कहा कि बीजिंग कथित तौर पर ताइवान और तिब्बत में चीन विरोधी लॉबी के साथ भारत के जुड़ाव से परेशान है। अतीत में इनपुट्स ने सुझाव दिया था कि चीन पूर्वोत्तर में भारत के खिलाफ अलगाववादी संगठनों का समर्थन करने को तैयार है। सूत्रों ने कहा कि भारतीय एजेंसियों को डर है कि पूर्वोत्तर में विद्रोही समूहों को भी म्यांमार सेना का समर्थन प्राप्त है, जो अपने स्वयं के जनशक्ति की कमी को देखते हुए नियमित गश्त के लिए उनका उपयोग करती है। सूत्रों ने कहा कि भारत ने आधिकारिक चैनलों के माध्यम से म्यांमार को सूचित किया है कि ये समूह उर तागा क्षेत्रों में स्थित हैं और उन्हें ऐसे संगठनों के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए।

कैश से भरी 4 कारों और हेलिकॉप्टर लेकर काबुल से भागे थे राष्ट्रपति अशरफ गनी : रिपोर्ट

काबुल। तालिबान के डर से अफगानिस्तान छोड़कर निकले राष्ट्रपति अशरफ गनी कैश से भरी चार कारों और एक हेलिकॉप्टर के साथ काबुल से बाहर निकले थे। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स ने अपनी एक रिपोर्ट में यह दावा किया है। रूसी न्यूज एजेंसी फ्ऋअ और कुछ प्रत्यक्षदर्शियों के हवाले से एजेंसी ने कहा कि अशरफ गनी को कुछ पैसा छोड़कर ही जाना पड़ा क्योंकि वह उसे रख नहीं पा रहे थे। काबुल में रूसी दूतावास के प्रवक्ता निकिता इंशचेन्को ने कहा, 'चार कारें कैश से भरी हुई थीं। उसके बाद उन्होंने कुछ रकम हेलिकॉप्टर में रखी। इसके बाद भी वह पूरा पैसा नहीं रख पाए और कुछ पैसे यूं ही छोड़कर निकल गए।' रूसी दूतावास के प्रवक्ता ने कहा कि एक प्रत्यक्षदर्शी से मिली जानकारी के अनुसार वह यह बात कह रहे हैं।

हिमाचल प्रदेशः उपचुनाव में मिली हार पर भाजपा गंभीर, बड़े स्तर पर बदलाव की सुगबुगाहट

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में हाल में हुए विधानसभा व लोकसभा उपचुनाव में पार्टी को मिली करारी हार को भाजपा नेतृत्व बेहद गंभीरता से ले रहा है। पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा का गृह राज्य होने की वजह से उनके लिए यह ज्यादा चिंता का विषय है। ऐसे में पार्टी जल्दी ही सत्ता और संगठन को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए जरूरी बदलाव कर सकती है। पिछले महीने हुए देश में विभिन्न राज्यों में विधानसभा और लोकसभा के उपचुनाव में भाजपा को सबसे बड़ा झटका हिमाचल प्रदेश में ही लगा है। यहां वह तीन विधानसभा एक लोकसभा सीट के उपचुनाव में वह कांग्रेस से हार गई। चूंकि यह राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का गृह प्रदेश है, इसलिए पार्टी के भीतर और बाहर इन नतीजों की

ज्यादा चर्चा हुई है। सूत्रों के अनुसार भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा इन नतीजों के साथ पूरे राज्य के हालात की व्यापक समीक्षा भी कर रहे हैं। हाल में मंडी सीट के प्रभारी महेंद्र सिंह ठाकुर और मंत्री रामलाल मारकंडा से व्यापक ब्योरा भी लिया गया था।सूत्रों के अनुसार केंद्रीय नेतृत्व इस बात से भी चिंतित है कि राज्य में भाजपा की हार ही नहीं हुई, बल्कि उसके वोट प्रतिशत में भी बड़ी कमी आई है। ऐसे में आने वाला समय चुनौती भरा हो सकता है। पार्टी हार के कारणों की समीक्षा तो कर ही रही है साथ ही भावी बदलाव पर भी विचार किया जा रहा है।

अब फेसबुक ने भी खोली पोल, कहा- तालिबान की मदद कर रहे थे पाकिस्तानी हैकर्स

नईदिल्ली। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के दौरान पाकिस्तान ागातार आतंकवादी संगठन की मदद करता रहा। इस बात की पोल अब सोशल मीडिया वेबसाइट फेसबुक ने भी खोल दी है।

कंपनी के एक अधिकारी ने न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के साथ एक इंटरव्यू में कहा कि पाकिस्तान के हैकर्स ने तालिबान के काबुल पर अधिग्रहण के दौरान अफगानिस्तान में लोगों को टारगेट करने के लिए फेसबुक का इस्तेमाल किया। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि पाकिस्तानी हैकर्स का मकसद तालिबान के खिलाफ उठ रहे आवाजों को दबाना था। फेसबुक ने कहा कि सुरक्षा उद्योग में साइडकॉपी के नाम से जाना जाने वाला समूह मैलवेयर की मेजबानी करने वाली वेबसाइटों के लिंक साझा करता है। यह लोगों के उपकरणों का सर्वेक्षण कर सकता है। हैकर्स

के निशाने पर काबुल में सरकार, सेना और कानून प्रवर्तन से जुड़े लोग शामिल थे। फेसबुक ने कहा कि उसने अगस्त में ही साइडकॉपी को अपने प्लेटफॉर्म से हटा दिया।

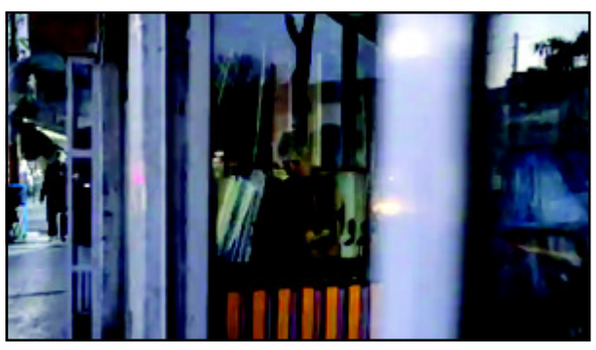

सोशल मीडिया कंपनी, जिसने हाल ही में अपना नाम बदलकर मेटा कर लिया है, ने कहा कि हैकर्स के समूह ने इसके लिए महिलाओं के नाम पर अकाउंट बनाए। रोमांटिक लालच दी। यूजर से काल्पनिक बातें की। इसने वैध वेबसाइटों से भी समझौता किया ताकि लोगों के फेसबुक क्रेडेंशियल्स के साथ हेराफेरी किया जा सके। फेसबुक के साइबर जासूसी जांच के प्रमुख माइक डिविल्यांस्की ने कहा, ₹हैकर्स के मकसद के बारे में अनुमान लगाना हमारे लिए हमेशा मुश्किल होता है। हम ठीक से नहीं जानते कि किससे समझौता किया गया था या उसका अंतिम परिणाम क्या था। फेसबुक, ट्विटर इंक, अल्फाबेट इंक के गूगल और माइक्रोसॉफ्ट कॉर्प के लिंक्डइन सहित प्रमुख ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ईमेल प्रदाताओं ने कहा है कि उन्होंने अफगानिस्तान पर तालिबान के तेजी से अधिग्रहण के दौरान अफगान यूजर्स के खातों को बंद करने के लिए कदम उठाए हैं। फेसबुक जांचकताओं ने कहा कि फेसबुक ने पिछले महीने दो हैकिंग समूहों के खातों को निष्क्रिय कर दिया था, जिन्हें उसने सीरिया की वायु सेना की खुफिया जानकारी से जोड़ा था। फेसबुक ने कहा कि एक समूह, जिसे सीरियन इलेक्ट्रॉनिक आर्मी के नाम से जाना जाता है, ने मानवाधिकार कार्यकताओं, पत्रकारों और अन्य लोगों को निशाना बनाया। वे सत्तारूढ़ शासन का विरोध कर रहे थे। अन्य ने फ्री सीरियन आर्मी से जुड़े लोगों और पूर्व सैन्य कर्मियों को निशाना बनाया, जो विपक्षी बलों में शामिल हो गए थे।

दाने-दाने को मोहताज ! अफगानिस्तान में 2 करोड़ से ज्यादा लोग झेल रहे भूखमरी, रिपोर्ट में दावा

नई दिल्ली। अफगानिस्तान में रहने वाले लोगों के लिए चुनौतियां खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि 2 करोड़ से ज्यादा लोग इस देश में भूखमरी झेल रहे हैं। अफगानिस्तान में पहले से ही सूखे और थमी हुई अर्थव्यवस्था ने यहां लोगों को परेशान कर रखा है और अब यह रिपोर्ट अपने आप में बेहद चौंकाने वाली है। द वर्ल्ड फूड प्रोग्राम (डब्ल्यूएफपी) की हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि सूखे और खराब अर्थव्यवस्था की मार अफगानी परिवारों पर बुरी तरह से पड़ी है। 'ळङ्म'ङ्म ठी६२' ने वर्ल्ड फूड प्रोग्राम के इस रिपोर्ट के हवाले से कहा है कि यहां कम से कम 2 करोड़ 40 लाख लोग भूखमरी के कगार पर पहुंच गए हैं। अफगानिस्तान में इस डब्ल्यूएफपी के प्रवक्ता वहीदुल्लाह अमानी ने कहा कि डब्ल्यूएफपी इन सभी लोगों तक भोजन पहुंचाने की कोशिश कर रही है जिसका असर साल 2022 से नजर आने की उम्मीद है। प्रवक्ता ने कहा कि

अफगानिस्तान में हालात बेहद खराब हैं। डब्ल्यूएफपी के अधिकारियों ने कहा कि उनका कार्यालय अफगानिस्तान के 24 मिलियन लोगों को मानवीय मदद पहुंचाने की कोशिश में है।

तालिबान और अफगान सरकार के बीच चले युद्ध के दौरान जो परिवार विस्थापित हुए उन्होंने भी इस बात की शिकायत दर्ज की है कि उनकी आधारभूत सुविधाएं भी अब पूरी नहीं हो पा रही हैं। यह लोग काबुल के एक कैंप में ठहरे हुए हैं। छह बच्चों की मां गुल उजर टेंट में रहती हैं उनका कहना है कि वो अपने बच्चों को भोजन उपलब्ध करा पाने में सक्षम नहीं हैं। 'ळङ्म'ङ्म ठी६२' से बातचीत में उन्होंने कहा, 'मेरे बच्चे घर-घर जाकर भोजन की तलाश करते हैं। अक्सर उन्हें कुछ नहीं मिलता। हम काफी मुश्किलों में रह रहे हैं, यहां हालात बेहद खराब हैं। दूसरी तरफ तालिबान ने कहा है कि जो केयरटेकर सरकार उन्होंने बनाई है वो सहयोगी एजेंसियों के संपर्क में है और देश को मानवीय संकट से उबरने के लिए योजना बना रही है।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025